3 राजधानी
तीन घंटे के अभियान में निकला दस कुंतल कचरा

6 अभिमत
कन्याकुमारी में साधना से निकले नये संकल्प

10 राष्ट्रीय
हैदराबाद तेलंगाना, आंध्र की साझा राजधानी नहीं रहा

11 विदेश
चीनी अंतरिक्ष यान चंद्रमा पर उतरा

RNI NO.UPHIN/2010/36547
वर्ष 14 अंक 221
लखनऊ, सोमवार, 3 जून, 2024
पृष्ठ 12 मूल्य ₹ 3
लखनऊ
नगर संस्करण

लखनऊ, नई दिल्ली और रायपुर से प्रकाशित

पायनियर

www.dailypioneer.com

भारत का कोच बनना पसंद करूंगा

स्पोर्ट्स-12

मोदी 3.0 के लिए मैदान में उतरे

नई दिल्ली में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पूर्वोत्तर में चक्रवात रेमल के बाद की स्थिति की समीक्षा के लिए बैठक करते हुए।

राजेश कुमार। नई दिल्ली

जैसा कि अधिकांश एग्जिट पोल में भाजपा के नेतृत्व वाले राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (एनडीए) की भारी जीत की भविष्यवाणी की गई थी, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने रविवार को विस्तृत विषयों पर कई बैठकें कीं। इनमेंचक्रवात रेमल के बाद की स्थिति भी शामिल थी। विशेष रूप से पूर्वोत्तर क्षेत्र में और दूसरा 100-दिवसीय एजेंडे की समीक्षा करने के लिए जिसे उनकी टीम सरकार गठन पूरा होने के बाद लागू करना चाहेगी। प्रधानमंत्री ने नई सरकार के 100-दिवसीय एजेंडे पर समीक्षा बैठक की, जिसे उनकी टीम सरकार गठन पूरा होने के बाद लागू करने का प्रयास करेगी। सूत्रों के अनुसार, कई मंत्रालयों के वरिष्ठ नौकरशाहों ने समीक्षा बैठक में भाग लिया और उनमें से कुछ ने प्रधानमंत्री के समक्ष एक प्रस्तुति दी। सूत्रों ने कहा कि नई सरकार के पहले 100 दिनों में इस एजेंडे को लागू करने के लिए कम से कम 10 समूह बनाए गए हैं, जिनमें से प्रत्येक का नेतृत्व एक समन्वयक के रूप में सचिव स्तर का अधिकारी करेगा। लोकसभा चुनाव प्रक्रिया शुरू

● कई अहम बैठकें कीं, सार्वजनिक स्थानों पर आग से सुरक्षा सुनिश्चित करने पर दिया जोर

होने से बहुत पहले, मोदी ने नई सरकार के लिए 100-दिवसीय एजेंडा तैयार करने के लिए विभिन्न सरकारी मंत्रालयों के लिए अभ्यास शुरू कर दिया था। उन्होंने अपने मंत्रिपरिषद से पहले 100 दिनों के लिए कार्यक्रमों और पहलों को प्राथमिकता देने के लिए कहा था।

कन्याकुमारी में विवेकानंद रॉक मेमोरियल में 45 घंटे के ध्यान से लौटने के एक दिन बाद पीएम मोदी की दिन भर की मैराथन बैठकें हुईं। बैठक की जानकारी देते हुए पीएम मोदी ने एक्स पर एक पोस्ट में लिखा, देश के विभिन्न हिस्सों में लू और चक्रवात के बाद आई बाढ़ की स्थिति के मद्देनजर स्थिति की समीक्षा के लिए बैठकों की अध्यक्षता की। प्रभावित लोगों की सहायता के लिए चल रहे प्रयासों का जायजा लिया। शनिवार को प्रसारित एग्जिट पोल में भाजपा के नेतृत्व वाले राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) की भारी जीत की भविष्यवाणी की गई है। यह पूर्वानुमान यदि नतीजे में परिवर्तित हो जाते हैं तो मोदी लगातार तीसरी बार प्रधानमंत्री बनेंगे।

एक आधिकारिक बयान के अनुसार, देश के कुछ हिस्सों में लू की स्थिति की समीक्षा के लिए आयोजित बैठक में मोदी ने अधिकारियों को निर्देश दिया कि आग की घटनाओं को रोकने और उससे निपटने के लिए नियमित आधार पर उचित अभ्यास किए जाने चाहिए। उन्होंने यह भी कहा कि जंगलों में फायर लाइन के खरखाव और बायोमास के उपयोग के लिए नियमित अभ्यास की योजना बनाई जानी चाहिए। बयान में कहा गया है कि इस साल मानसून देश के अधिकांश हिस्सों में सामान्य और सामान्य से ऊपर रहने की संभावना है और प्रायद्वीपीय भारत के कुछ हिस्सों में सामान्य से नीचे रहने की संभावना है।

एक अन्य आधिकारिक बयान में कहा गया कि चक्रवात रेमल के बाद की स्थिति की समीक्षा के लिए हुई बैठक में मोदी को मिजोरम, असम, मणिपुर, मेघालय और त्रिपुरा में भूस्खलन और बाढ़ के कारण जानमाल के नुकसान सहित विभिन्न राज्यों में इसके प्रभावों के बारे में जानकारी दी गई। (शेष पेज 9)

भाजपा, इंडिया की मांग, प्रोटोकॉल का पालन करे ईसी

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

चुनाव आयोग के साथ बैठक के बाद इंडिया गुट के नेताओं के साथ बाहर आते कांग्रेस नेता अभिषेक सिंघवी। फोटोः रंजन डिमरी

लोकसभा चुनाव की मतगणना से पहले सत्ता पक्ष और विपक्ष दोनों के नेताओं ने भारतीय चुनाव आयोग (ईसी) से मुलाकात की...जबकि वरिष्ठ भाजपा नेताओं और केंद्रीय मंत्रियों पीयूष गोयल और निर्मला सीतारमण ने आयोग से भारत की चुनावी प्रक्रिया की अखंडता की रक्षा के लिए कई महत्वपूर्ण उपायों को लागू करने का आग्रह किया। विपक्षी गुट के नेताओं के एक प्रतिनिधिमंडल ने चुनाव आयोग की पूर्ण पीठ से मुलाकात की और आग्रह किया कि यह सुनिश्चित करें कि 4 जून को जब लोकसभा चुनाव में डाले गए वोटों की गिनती की जाएगी तो सभी दिशानिर्देशों का पालन किया जाए, जिसमें ईवीएम के परिणाम घोषित होने से पहले डाक-मतपत्र परिणाम घोषित करना भी शामिल है। गोयल ने आरोप लगाया कि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस और उसके इंडिया गठबंधन सहयोगियों के (शेष पेज 9)

फिर जेल पहुंचे अरविंद केजरीवाल

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

अरविंद केजरीवाल फोटोः रंजन डिमरी

दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने रविवार को तिहाड़ जेल में आत्मसमर्पण किया। केजरीवाल को लोकसभा चुनाव में प्रचार करने के लिए उच्चतम न्यायालय ने कथित दिल्ली आबकारी नीति घोटाले से जुड़े धन शोधन मामले में 10 मई को अंतरिम जमानत दी थी। यह अवधि एक जून को समाप्त हो गई। आत्मसमर्पण करने से पहले केजरीवाल ने राजघाट स्थित महात्मा गांधी की समाधि पर श्रद्धांजलि अर्पित की और कनॉट प्लेस स्थित हनुमान मंदिर में पूजा-अर्चना की। उन्होंने पार्टी कार्यालय में आम आदमी पार्टी (आप) के नेताओं और कार्यकर्ताओं को संबोधित किया।

पार्टी कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा, मैं जेल वापस जा रहा हूं, इसलिए नहीं कि मैं भ्रष्टाचार में शामिल था, बल्कि इसलिए कि मैंने तानाशाही के खिलाफ आवाज उठाई। आप नेता ने कहा कि उन्होंने लोकसभा चुनाव के दौरान देश को बचाने के लिए प्रचार किया। उन्होंने कहा, मुझे उच्चतम न्यायालय से 21 दिन की राहत मिली थी। ये 21 दिन अविस्मरणीय थे। मैंने एक मिनट भी बर्बाद नहीं किया। मैंने देश को बचाने के लिए चुनाव प्रचार किया। आम आदमी पार्टी महत्वपूर्ण नहीं है, यह गौण है। देश प्रथम है। केजरीवाल ने कहा कि भाजपा के नेतृत्व वाले राजग के लिए तीसरी बार सत्ता में आने का अनुमान जताने वाले सभी एग्जिट पोल फर्जी हैं। (शेष पेज 9)

एनएचएआई ने सभी राजमार्गों पर टोल शुल्क पांच प्रतिशत बढ़ाया

भाषा। नई दिल्ली

भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण (एनएचएआई) ने देश भर में टोल दरों में औसतन पांच प्रतिशत की वृद्धि करने का निर्णय लिया है। अब राजमार्गों का उपयोग करने वाले वाहन चालकों को सोमवार से अधिक भुगतान करना होगा। राजमार्ग उपयोगकर्ता शुल्क का वार्षिक संशोधन पहले एक अप्रैल से लागू होना था। लेकिन लोकसभा चुनावों के कारण वृद्धि स्थगित कर दी गई थी। वार्षिक संशोधन औसतन पांच प्रतिशत के दायरे में रहने की संभावना है। एनएचएआई के एक वरिष्ठ अधिकारी ने रविवार को कहा, नया उपयोगकर्ता शुल्क तीन जून, 2024 से लागू होगा। टोल शुल्क में यह परिवर्तन थोक मूल्य सूचकांक (सीपीआई) आधारित मुद्रास्फीति में परिवर्तन से जुड़ी दरों को संशोधित करने की वार्षिक प्रक्रिया का हिस्सा है। राष्ट्रीय राजमार्ग नेटवर्क पर लगभग 855 उपयोगकर्ता शुल्क प्लाजा हैं, जिन पर राष्ट्रीय राजमार्ग शुल्क (दरों का निर्धारण और संग्रहण) नियम, 2008 के अनुसार उपयोगकर्ता शुल्क लगाया जाता है। दिल्ली-मेरठ एक्सप्रेसवे पर रविवार रात 12 बजे से सफर करना महंगा हो जाएगा। कार वालों को अब एक तरफ के 5 रुपए ज्यादा चुकाने होंगे। वहीं भारी वाहनों को 45 से 65 रुपए ज्यादा टोल देना होगा। एक्सप्रेसवे पर रोजाना चलने वाले करीब 40 हजार वाहन चालकों पर टोल की बढ़ी हुई दरों का असर पड़ेगा। इस एक्सप्रेस.वे पर टोल की दरें एक अप्रैल से बढ़नी थीं, लेकिन आचार संहिता की वजह से इन्हें टाल दिया गया। अब सातों चरण के चुनाव समाप्त हो चुके हैं। ऐसे में नई टोल दरें 2 जून की रात से बढ़ाने का फैसला नेशनल हाईवे अथॉरिटी ऑफ इंडिया ने लिया है। (संबंधित समाचार पेज 3 पर)

अरुणाचल में भाजपा, सिक्किम में एसकेएम

राजेश कुमार। नई दिल्ली

अरुणाचल विधानसभा चुनाव में भारी जीत के बाद समर्थकों की बधाई स्वीकार करते मुख्यमंत्री पेमा खांडू

सिक्किम विधानसभा चुनाव में भारी जीत के बाद समर्थकों को संबोधित करते मुख्यमंत्री प्रेम सिंह तमांग

रविवार को दो पूर्वोत्तर राज्यों में विधानसभा चुनावों के नतीजे घोषित होने के बाद, भाजपा और सिक्किम क्रांतिकारी मोर्चा (एसकेएम) दोनों ने क्रमश: अरुणाचल प्रदेश और सिक्किम पर अपना कब्जा बरकरार रखा। 55 प्रतिशत वोट शेयर और 46 सीटों के साथ भाजपा ने 60 सदस्यीय अरुणाचल प्रदेश विधानसभा चुनाव जीता और लगातार तीसरी बार वापसी करने के लिए तैयार है। सिक्किम में, सत्तारूढ़ सिक्किम क्रांतिकारी मोर्चा ने 32 सदस्यीय सिक्किम विधान सभा चुनावों में 31 सीटें जीतीं, जो कि सिक्किम डेमोक्रेटिक फ्रंट पर बहुमत के आंकड़े को आसानी से पार कर गई। एसडीएफ जिसने 2019 तक लगातार 25 वर्षों तक राज्य पर शासन किया, उसे सिर्फ एक सीट मिली। भारत के पूर्व फुटबॉल कप्तान और एसडीएफ उम्मीदवार भाईचुंग भूटिया बारफुंग सीट पर 4346 वोटों के अंतर से हार गए, 2014 के बाद से पिछले 10 वर्षों में उनकी यह छठी हार थी, वह दार्जिलिंग से चुनाव लड़ने के लिए टीएमसी में शामिल हुए थे।

अरुणाचल प्रदेश में, 60 विधानसभा सीटों में से केवल 50 सीटों पर मतदान हुआ, क्योंकि निवर्तमान मुख्यमंत्री पेमा खांडू और उपमुख्यमंत्री चौना मीन सहित 10 भाजपा विधायकों ने निर्विरोध जीत हासिल की। भाजपा का वोट शेयर भी 2019 के 50.86 प्रतिशत की तुलना में बढ़कर 55 प्रतिशत हो गया। एक्स पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा, धन्यवाद अरुणाचल प्रदेश! इस अद्भुत राज्य की जनता ने विकास की राजनीति को स्पष्ट जनादेश दिया है। भाजपा 4अरुणाचल में एक बार फिर अपना विश्वास जताने के लिए उन्हें मेरा आभार। हमारी पार्टी राज्य के विकास के लिए और भी अधिक जोश के साथ काम करती रहेगी। पीएम ने यह भी कहा, मैं चुनाव अभियान के माध्यम से असाधारण भाजपाअरुणाचल कार्यकर्ताओं की कड़ी मेहनत की सराहना करना चाहूंगा। यह सराहनीय है कि वे किस तरह पूरे राज्य में गए और लोगों से जुड़े।

नेशनल पीपुल्स पार्टी (एनपीपी) को पांच सीटें मिलीं, जबकि पीपुल्स पार्टी ऑफ अरुणाचल ने दो सीटें और एनसीपी ने तीन सीटें हासिल कीं। कांग्रेस ने एक सीट जीती और तीन निर्वाचन क्षेत्रों में निर्दलीय उम्मीदवार विजयी हुए। दिन के पहले घोषित परिणाम में, खोंसा (पूर्व) निर्वाचन क्षेत्र में स्वतंत्र उम्मीदवार वांग्लम साविन ने भाजपा के कामरंग तेसिया पर जीत हासिल की। फैसले पर प्रतिक्रिया देते हुए, निवर्तमान मुख्यमंत्री पेमा खांडू ने कहा, यह केंद्र के भारी समर्थन के साथ 10 साल के विकास के लिए जनादेश है। आप सभी जानते हैं कि अरुणाचल प्रदेश उगते सूरज की भूमि है। यहां भाजपा की जीत (प्रधानमंत्री नरेंद्र) को दर्शाती है। मोदी जी तीसरी बार पीएम बनेंगे।

2019 के विधानसभा चुनाव में बीजेपी ने अरुणाचल प्रदेश में 41 सीटें जीतीं. जनता दल (यूनाइटेड) को सात, नेशनल पीपुल्स पार्टी (एनपीपी) को पांच, कांग्रेस को चार और पीपुल्स पार्टी ऑफ अरुणाचल (पीपीए) को एक सीट मिली। विधानसभा चुनाव में दो निर्दलीय उम्मीदवारों ने भी जीत हासिल की। कांग्रेस के एक विधायक, पूर्व मुख्यमंत्री नबाम तुकी को छोड़कर सभी भाजपा में शामिल हो गए। विधानसभा चुनाव 2024 में अरुणाचल प्रदेश में 82.95 फीसदी मतदान हुआ, जबकि राज्य की दो लोकसभा सीटों पर 77.51 फीसदी मतदान हुआ। विधानसभा चुनाव 2019 में यह 82.17 फीसदी था।

सिक्किम में एसकेएम को 58.38 फीसदी वोट मिले जबकि उसके प्रतिद्वंद्वी एसडीएफ को सिर्फ 27.37 फीसदी वोट मिले। विशेष रूप से, भाजपा को 5.18 प्रतिशत वोट मिले, जबकि कांग्रेस, जो 2016 में 43 विधायकों के साथ पेमा खांडू के पार्टी छोड़ने तक राज्य में सत्ता में थी, को 0.32 प्रतिशत वोट मिले, जो 0.99 प्रतिशत के नोटा से कम है। राज्य में अस्तित्व के लिए पार्टी की लड़ाई उसके उम्मीदवारों को खड़ा करने के संघर्ष में स्पष्ट थी। मुख्यमंत्री और सिक्किम क्रांतिकारी मोर्चा (एसकेएम) के प्रमुख प्रेम सिंह तमांग रेनॉक निर्वाचन क्षेत्र में विजयी हुए हैं, उन्होंने अपने एसडीएफ प्रतिद्वंद्वी सोम नाथ पौडयाल पर 7,044 मतों के अंतर से निर्णायक जीत हासिल की है। सोरेंग चाकुंग विधानसभा क्षेत्र में, तमांग ने अपने निकटतम एसडीएफ प्रतिद्वंद्वी ए डी सुब्बा पर 2,052 वोटों की बढ़त बना ली है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने जीत के लिए तमांग और एसकेएम की सराहना की। मोदी ने एक्स पर पोस्ट में कहा, 'सिक्किम विधानसभा चुनाव 2024 में उनकी जीत के लिए एसकेएम और सीएम को बधाई। मैं आने वाले समय में सिक्किम की प्रगति को आगे बढ़ाने के लिए राज्य सरकार के साथ काम करने के लिए उत्सुक हूं। प्रधानमंत्री की पोस्ट पर प्रतिक्रिया देते हुए, तमांग ने उन्हें धन्यवाद दिया।

तमांग ने एक्स पर कहा, हम सिक्किम के विकास और समृद्धि की दिशा में अपने प्रयासों को जारी रखने के लिए प्रतिबद्ध हैं। हम अपने राज्य की बेहतरी के लिए अपने साझा लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए आपके साथ सहयोग करने के लिए तत्पर हैं। आपका अटूट समर्थन हमारे लिए प्रेरक शक्ति रहा है, और हम आपके निरंतर मार्गदर्शन और आशीर्वाद की आशा करते हैं। सिक्किम के पूर्व मुख्यमंत्री और एसडीएफ सुप्रीमो पवन कुमार चामलिंग को पोकलोक विधानसभा सीट पर एसकेएम उम्मीदवार भोज राज राय ने 3,063 मतों के अंतर से हराया। (शेष पेज 9)

वैदिक विज्ञानी की भविष्यवाणी 'इस बार भाजपा 400 पार'

सौम्या शुक्ला। नई दिल्ली।

लोकसभा 2024 के चुनावों में अधिकांश एग्जिट पोल में भाजपा की आसान जीत दिखाई जा रही है, ऐसे में वैदिक वैज्ञानिक और बनारस हिंदू विश्वविद्यालय (बीएचयू) से ज्योतिष तथा वैदिक विज्ञान में डॉक्टरेट डॉ. शेष नारायण वाजपेयी ने भाजपा की प्रचंड जीत की भविष्यवाणी की है। 'वर्ण विज्ञान' के माध्यम से उनकी भविष्यवाणियों ने भगवा पार्टी के लिए 'अबकी बार 400 पार' के नारे को पूरा करने का अनुमान जताया है। उनकी भविष्यवाणियों से पता चलता है कि भाजपा 2024 के बहुप्रतीक्षित आम चुनावों में 368 सीटें हासिल करेगी, जहां एक तरफ भगवा पार्टी एग्जिट पोल के अनुसार तीसरा कार्यकाल सुरक्षित करने के लिए काफी सहज दिख रही है और इंडिया गठबंधन वास्तविक 4 जून को परिणामों की प्रतीक्षा में सभी भविष्यवाणियों को खारिज कर रहा है। वैज्ञानिक, जिन्होंने 2018 की शुरुआत में ही कोरोना की भविष्यवाणी कर दी थी, उन्होंने 25 मई, 2025 को कोविड के एक प्रकार की अगली लहर की तारीख की भी भविष्यवाणी की है, जो दुनिया भर के लोगों को प्रभावित करेगी। हालाँकि, उन्होंने कहा, मुझे इस बात की जानकारी नहीं है कि टीके क्या प्रभाव डालेंगे। अगर यह कारगर साबित हुआ तो इससे लहर का असर कम हो जाएगा। हालाँकि, अगर यह अप्रभावी साबित हुआ, तो प्रभाव विनाशकारी होगा।' वाजपेयी ने 2018 की शुरुआत में प्रधानमंत्री कार्यालय और संयुक्त राष्ट्र को एक पत्र में लिखा था कि एक बड़ी बीमारी जो सांस लेने में कठिनाई, सूखी खांसी, चक्कर आना, उल्टी, दस्त और ऐसे अन्य गंभीर मुद्दों का कारण बनती है, आने वाली है। उन्होंने कहा, हालाँकि मैंने महामारी के बारे में नहीं लिखा, मैंने उन्हें सूचित किया कि एक बड़ी बीमारी आ रही है। लेकिन किसी ने मेरी बात पर ध्यान नहीं दिया। वह कोरोना की पहली लहर शुरू होने से पहले ही जनवरी 2020 से ही भारत सरकार को इस वायरस के महामारी में बदलने को लेकर आगाह करते रहे हैं।

ऐसे तो दिल्ली रेगिस्तान बन जाएगी: हाईकोर्ट

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

● अदालत ने दिल्ली में 52.3 डिग्री सेल्सियस तापमान का लिया संज्ञान, कहा-वनों के कटाई के प्रति उदासीन बने रहे तो यह दिन दूर नहीं

राष्ट्रीय राजधानी में गत बुधवार को तापमान 52.3 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया था जो शहर में अब तक का सबसे अधिक तापमान है। अब इस मामले में उच्च न्यायालय ने तल्ख टिप्पणी की है। हाई कोर्ट ने कहा कि यदि वनों की कटाई के प्रति वर्तमान पीढ़ी का रुख उदासीन बना रहा, तो राष्ट्रीय राजधानी एक बंजर रेगिस्तान बन जाएगी। न्यायमूर्ति तुषार राव गेडेला ने कहा, इस तथ्य पर न्यायिक संज्ञान लिया गया है कि हाल ही में 30 मई को दिल्ली में आधिकारिक तापमान 52.3 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया था। अगर वर्तमान पीढ़ी वनों की कटाई के प्रति उदासीन दृष्टिकोण अपनाती रही, तो वह दिन दूर नहीं, जब यह शहर केवल एक बंजर रेगिस्तान बनकर रह जाएगा। उच्च न्यायालय ने इससे पहले अपने पूर्व न्यायाधीश नजमी वजीरी को दिल्ली में वनों के संरक्षण से संबंधित शहर के अधिकारियों की एक आंतरिक विभागीय समिति का अध्यक्ष नियुक्त किया था। उच्च न्यायालय को सूचित किया गया कि वजीरी बुनियादी ढांचे की कमी के कारण अपने कर्तव्यों का निर्वहन करने में असमर्थ हैं।

कोर्ट ने कहा, यह अदालत ऐसी स्थिति को बर्दाश्त नहीं कर सकती, जहां अध्यक्ष (न्यायमूर्ति वजीरी) कार्यालय स्थान या लिपिकीय और सहायक कर्मचारियों या यहां तक कि परिवहन साधनों की कमी के कारण जिम्मेदारियों का निर्वहन करने में असमर्थ हों। उन्होंने कहा, हालांकि, विभाग (वन एवं वन्यजीव) को अलग-अलग क्षमता में कर्मचारी उपलब्ध कराने का निर्देश देने के बजाय, विभाग को मामले को पूरी गंभीरता से आगे बढ़ाने का निर्देश देना उचित समझा गया है कि किसी भी स्थिति में मंजूरी में 15 जून से अधिक देरी नहीं की जाए। वकील आर. अरुणाद्रि अय्यर के माध्यम से दायर समिति के अध्यक्ष की रिपोर्ट के अनुसार, दिल्ली सरकार को बुनियादी ढांचे, लिपिकीय कर्मियों, सहायक कर्मियों और परिवहन की आवश्यकता के बारे में सूचित किया गया था, जो अध्यक्ष के अपनी जिम्मेदारियों का कुशलतापूर्वक निर्वहन करने के लिए आवश्यक होगा। उच्च न्यायालय ने कहा कि सक्षम प्राधिकारी द्वारा अनुमोदन दिए जाने के बाद, बुनियादी ढांचे का विकास (शेष पेज 9)

तपते मुंगेशपुर में फुहारों से खिली मुस्कानें

सौम्या शुक्ला/अभि सिंघल। नई दिल्ली

बारिश से भीगी सड़क और प्रसन्नचित्त मुंगेशपुरवासी।

जैसे ही उत्तर पश्चिम दिल्ली के मुंगेशपुर के कम आबादी वाले इलाके की जमीन पर बारिश की बूंदे गिरी, यहां के निवासियों ने राहत की एक ठंडी सांस भरी। कुछ दिनों से 50 डिग्री सेल्सियस से अधिक तापमान से जूझ रहे दिल्ली के इस इलाके की और भी मुश्किलें हैं। झुलसाती गर्मी के बीच पानी की कमी और बिजली कटौती इनके जख्मों पर नमक छिड़कने जैसा है। इलाके में कुछ लोगों के पास पंखा तक नहीं है। यहां निवासियों को पिछले 15 दिनों में कठिन समय का सामना करना पड़ा। उन्हें दिन में केवल 10 मिनट के लिए पानी आने और क्षेत्र में टैंकरों के नहीं आने के कारण पानी की गंभीर कमी का सामना करना पड़ा। कई लोगों ने बताया कि वे पानी के लिए खेत में लगे ट्यूबवेल पर निर्भर हैं। निवासियों को आस-पास के इलाकों में उपलब्ध टैंकरों से पानी भरने के लिए एक किलोमीटर का रास्ता तय करना पड़ता है या ट्यूबवेल का सहारा लेना पड़ता है।

जैसे ही बारिश से कुछ राहत मिली, कई लोग ठंडक का एहसास करने के लिए अपने घरों के बाहर बैठे दिखे। आमतौर पर वे बिजली कटौती के कारण घर के बाहर शरण लेते हैं। खासकर बुधवार को जब उन्हें रात में 12 घंटे की कटौती का सामना करना पड़ा। 56 साल की संतोषी देवी ने कहा, रात को 11 बजे गई थी बिजली और सुबह 11 बजे आई, 12 घंटे में हालात खराब हो गई। धूल भरी आंधी के साथ हुई बारिश का आनंद लेने के लिए बच्चे अपने घर से बाहर निकल आए। बारिश में खेल रहे चार बच्चों ने बताया कि कैसे उनमें से केवल एक के घर में पंखा था। (शेष पेज 9)

मतगणना कल प्रातः 8 बजे से, तैयारियां पूरी

● हीटवेव व भीषण गर्मी से बचाव के लिए समुचित व्यवस्था के मुख्य निर्वाचन अधिकारी ने दिए निर्देश ●प्रदेश के 75 जनपदों में 81 मतगणना केन्द्रों पर होगी वोटों की गिनती

●लखनऊ पूर्व, ददरौल, गैंसड़ी व दुद्धी विस उप निर्वाचन क्षेत्र की 4 जून को होगी मतगणना

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

उप्र के मुख्य निर्वाचन अधिकारी नवदीप रिणवा ने बताया कि लोकसभा सामान्य निर्वाचन-2024 की मतगणना 04 जून मंगलवार को प्रात: 8 बजे से प्रारम्भ होगी। मतगणना प्रदेश के 75 जनपदों में, 81 मतगणना केन्द्रों पर होगी। आगरा, मेरठ, आजमगढ, देवरिया, सीतापुर, कुशीनगर जनपद में मतगणना 02-02 केन्द्रों पर होगी। 08 लोकसभा क्षेत्रों की मतगणना 03 जनपदों में, 37 लोकसभा क्षेत्रों की मतगणना 02 जनपदों में तथा 35 लोकसभा क्षेत्रों की मतगणना 01 जनपद में होगी। मुख्य निर्वाचन अधिकारी श्री नवदीप रिणवा ने रविवार को विकास भवन सचिवालय स्थित निर्वाचन कार्यालय के कान्फ्रेंस हॉल में प्रेसवार्ता कर 04 जून को होने वाली मतगणना की तैयारियों के सम्बन्ध में जानकारी दी। इस अवसर पर उन्होंने बताया कि पोस्टल बैलेट की मतगणना आरओ मुख्यालय जनपद के मतगणना स्थल में होगी। मतगणना विधानसभा क्षेत्रवार होगी। तत्पश्चात् लोकसभा क्षेत्र में समाहित विधानसभा क्षेत्रों के परिणाम का योग कर लोकसभा क्षेत्र का परिणाम घोषित किया जायेगा। 12-गाजियाबाद लोकसभा क्षेत्र में समाहित 55-साहिबाबाद विधानसभा क्षेत्र में सर्वाधिक 1127 मतदेय स्थल होने के कारण सबसे अधिक 41 राउण्ड में मतगणना सम्पन्न होगी।

भारत निर्वाचन आयोग द्वारा मतगणना हेतु 179 प्रेक्षक तैनात किये गये हैं। 15 प्रेक्षक को 01-01 विधानसभा क्षेत्र, 104 प्रेक्षक को 02-02 विधानसभा क्षेत्र तथा 60 को 03-03 विधानसभा क्षेत्र आवंटित किये गये हैं। 80 लोकसभा निर्वाचन क्षेत्रों की मतगणना 80 रिटर्निंग आफिसर तथा 1581 सहायक रिटर्निंग आफिसर द्वारा सम्पन्न करायी जायेगी। ददरौल (शाहजहांपुर), लखनऊ पूर्व, -गैंसड़ी (बलरामपुर) तथा सोनभद्र जनपद की दुद्धी विधानसभा उप निर्वाचन क्षेत्र की मतगणना 04 रिटर्निंग आफिसर तथा 26 सहायक रिटर्निंग आफिसर द्वारा सम्पन्न करायी जायेगी। समस्त मतगणना एवं सीलिंग की कार्यवाही सीसीटीवी की निगरानी में की जायेगी।

लोकसभा सामान्य निर्वाचन-2024 में कुल 851 प्रत्याशी चुनाव मैदान में हैं, जिसमें 771 पुरूष एवं 80 महिला है। सबसे अधिक 28 प्रत्याशी 70-घोसी लोकसभा क्षेत्र में तथा सबसे कम 4 प्रत्याशी 57-कैसरगंज लोकसभा क्षेत्र में हैं। मतगणना सकुशल सम्पन्न कराने हेतु पर्याप्त मात्रा में केन्द्रीय अर्द्ध सैनिक बलों की तैनाती भी की गयी है। अभ्यर्थी या उसके निर्वाचन अभिकर्ता द्वारा मतगणना प्रारम्भ होने के दिनांक से 03 दिन पूर्व सायं 5.00 बजे तक काउंटिंग एजेण्ट बनाये जाने हेतु प्रारूप-18 पर रिटर्निंग आफिसर के समक्ष आवेदन किया गया है। मतगणना एजेण्ट

नियुक्त करने हेतु कोई योग्यता निर्धारित नहीं है। अभ्यर्थियों द्वारा 18 वर्ष से अधिक आयु के व्यक्ति को काउंटिंग एजेण्ट बनाया जा सकता है। केन्द्र/राज्य सरकार के मंत्रिपरिषद के सदस्यों, सांसदों, विधायकों, मेयर, नगर पालिका परिषद/नगर पंचायत के अध्यक्ष को काउंटिंग एजेण्ट बनाये जाने पर प्रतिबंध है। केन्द्र/राज्य सरकार से सुरक्षा प्राप्त व्यक्तियों को काउंटिंग एजेण्ट बनाये जाने पर प्रतिबंध है। ग्राम प्रधान, सरपंच, पंचायत सदस्यों, सभासद आदि को काउंटिंग एजेण्ट बनाये जाने के संबंध में कोई प्रतिबंध नहीं है, जो निर्वाचन क्षेत्र के निवासी हैं। अप्रवासी भारतीय को भी काउंटिंग एजेण्ट बनाया जा सकता है।

सभी लोकसभा क्षेत्रों में पोस्टल बैलेट की गणना हेतु अतिरिक्त कक्ष का अनुमोदन भारत निर्वाचन आयोग द्वारा प्रदान किया गया है। पोस्टल बैलेट की गणना हेतु होम वोटिंग एवं वोटर फैसिलिटेशन सेंटर पर प्राप्त पोस्टल बैलेट मतों की गणना प्रात: 8.00 बजे प्रारम्भ होगी तथा सर्विस वोटर से प्राप्त ईटीपीबीएस की स्कैनिंग भी प्रात: 8.00 बजे से प्रारम्भ की जायेगी। स्कैनिंग के उपरान्त ईटीपीबीएस मतों की गणना की जायेगी। ईटीपीबीएस की स्कैनिंग/प्री काउंटिंग हेतु 871 टेबल एवं पोस्टल बैलेट की मतों की गणना 794 टेबल पर की जायेगी।

मतगणना स्थल की सुरक्षा हेतु त्रिस्तरीय सुरक्षा व्यवस्था लगायी गयी है। प्रथम स्तर की सुरक्षा मतगणना स्थल से 100 मीटर की परिधि पर होगी, जहां क्षेत्रीय पुलिस बल तैनात रहेगा। द्वितीय स्तर की सुरक्षा मतगणना स्थल के गेट पर होगी, जहां राज्य पुलिस बल तैनात रहेगी। तृतीय स्तर की सुरक्षा मतगणना हॉल के लिए होगी जो कि सीएपीएफ की निगरानी में होगी।

मतगणना स्थल परिसर में मीडिया सेंटर स्थापित किया जा रहा है। सूचना विभाग से 01 अधिकारी मीडिया सेंटर का प्रभारी रहेगा। आरओ द्वारा नियुक्त अधिकारियों द्वारा समय-समय पर छोटे समूहों में मीडिया बन्धुओं को कुछ समय के लिए मतगणना हाल का भ्रमण भी कराया जायेगा। मतगणना हाल के भीतर भारत निर्वाचन आयोग से जारी मीडिया पास धारक मीडिया कर्मी को ही बिना स्टैण्ड का कैमरा ले जाने की अनुमति होगी। मीडिया बन्धुओं को मीडिया सेंटर पर मोबाइल प्रयोग किये जाने की अनुमति रहेगी। प्रत्येक मतगणना स्थल पर पब्लिक कम्युनिकेशन कक्ष भी स्थापित किया जा रहा है, जहां पर प्रत्याशी व उनके एजेण्ट आवश्यकता पड़ने पर मोबाइल फोन का प्रयोग कर सकते हैं तथा उनके फोन सुरक्षित रखे जाने की व्यवस्था भी की जा रही है।

प्रत्याशी, उनके अभिकर्ता, मतगणना कार्मिकों एवं अन्य कर्मचारियों के लिए स्वच्छ एवं शीतल पेयजल तथा शौचालय की पर्याप्त व्यवस्था किये जाने के निर्देश समस्त जिला निर्वाचन अधिकारियों को जारी किये गये हैं। प्रत्येक मतगणना हॉल में 01 ब्लैक बोर्ड/व्हाइट बोर्ड की व्यवस्था की जायेगी जिसमें प्रत्याशियों के नाम व राउण्डवार परिणाम लिखा जाएगा ताकि सभी मतगणना एजेण्ट उसे देख सकें। मीडिया कर्मी एवं आमजन वेबसाइट पर जाकर मतगणना के रूझान एवं परिणाम जान सकते हैं। प्रत्येक विधानसभा क्षेत्र एवं लोकसभा क्षेत्र में सार्वजनिक उदबोधन प्रणाली की भी व्यवस्था की गयी है। सर्वप्रथम प्रत्येक टेबल पर काउंटिंग एजेण्ट के बैठने की व्यवस्था रहेगी। सबसे आगे मान्यता प्राप्त राष्ट्रीय एवं राज्यीय राजनैतिक दल, रजिस्ट्रीकृत अमान्यता प्राप्त दल तथा उसके बाद निर्दलीय प्रत्याशी के एजेण्ट बैठेंगे। टेबल पर सीयू आने के उपरान्त मतगणना पर्यवेक्षक द्वारा सीयू का नम्बर दिखाया जायेगा, जिससे यह स्पष्ट होगा कि यह सीयू उसी बूथ से संबंधित है।

सीयू के साथ 17सी भाग-1 में उल्लिखित मतों को एजेण्टों को बताया जायेगा। सीयू को ऑन कर प्रत्याशीवार मतगणना परिणाम 17सी भाग-2 पर अंकित किया जायेगा। किसी एजेण्ट द्वारा पुन: परिणाम दिखाये जाने के अनुरोध पर मतगणना पर्यवेक्षक द्वारा पुन: परिणाम दिखाया जाएगा। 17सी भाग-2 पर मतगणना पर्यवेक्षक एवं काउंटिंग एजेण्ट के हस्ताक्षर के उपरान्त एक प्रति फीडिंग के लिए जायेगी तथा दूसरी प्रति की छायाप्रतियां कराकर काउंटिंग एजेण्ट को प्राप्त करायी जायेगी। सम्पूर्ण राउण्ड की शीट की एक प्रति राउण्ड की घोषणा के उपरान्त एआरओ टेबल के एजेण्ट को भी दी जायेगी। यदि किसी बूथ से संबंधित सीयू की डिस्प्ले न दिखने से सीयू से परिणाम नहीं निकलता है तो ऐसे में समस्त ईवीएम की मतगणना के उपरान्त उक्त बूथ के वीवीपैट स्लिप की गणना की जायेगी। यदि किसी कारण से किसी बूथ की सीयू से मॉक पोल के मतों को नहीं हटाया गया है। तो ऐसे में उक्त सीयू से मतगणना नहीं की जायेगी तथा उक्त मशीन आरओ की अभिरक्षा में जायेगी। यदि सम्पूर्ण मतगणना के उपरान्त हार-जीत का अन्तर उक्त बूथ पर पड़े मतों से अधिक है तो ऐसे में उक्त बूथ की गणना न कर परिणाम घोषित कर दिया जायेगा। यदि अन्तर उक्त बूथ पर पड़े मतों से कम है तो मॉक पोल सर्टिफिकेट में उल्लिखित मॉक मतों को प्रत्याशीवार हटाकर वीवीपैट की स्लिप से मतगणना की जायेगी तथा उक्त आधार पर मतगणना परिणाम घोषित किया जायेगा। मतगणना के परिणाम की घोषणा के उपरान्त प्रत्येक विधानसभा क्षेत्र में 05 मतदेय स्थल ड्रा के आधार पर निकाले जायेंगे।

वन्यजीवों के स्वास्थ्य के साथ उनकी समुचित देखभाल की जाए: मुख्यमंत्री

● मुख्यमंत्री ने गोरखपुर स्थित शहीद अशफाक उल्ला खां प्राणि उद्यान का निरीक्षण किया

लखनऊ। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने रविवार को जनपद गोरखपुर स्थित शहीद अशफाक उल्ला खां प्राणि उद्यान (गोरखपुर चिड़ियाघर) का भ्रमण एवं निरीक्षण किया। इस दौरान उन्होंने चिड़ियाघर में करीब एक सप्ताह पूर्व इटावा लायन सफारी से लाए गए पांच साल के बब्बर शेर भरत और सात साल की शेरनी गौरी को भी देखा। उन्होंने गैंडों की जोड़ी हरि और गौरी को केला खिलाया तथा अन्य वन्यजीवों का अवलोकन कर चिड़ियाघर के अधिकारियों को उनकी समुचित देखभाल के निर्देश दिये।

मुख्यमंत्री ने निरीक्षण के दौरान शेर, बाघ, सफेद बाघ, हिरण, बंदर, जैकाल, तेंदुआ, हिप्पो तथा भालू आदि के बाड़ों का अवलोकन किया। इस दौरान उन्होंने प्राणि उद्यान के अधिकारियों से वन्यजीवों की देखभाल के बारे में जानकारी प्राप्त की। इसके उपरान्त मुख्यमंत्री ने चिड़ियाघर के अस्पताल का भी निरीक्षण किया। उन्होंने वन्यजीवों को रेस्क्यू करने के तरीके, उनके इलाज तथा खानपान के बारे में जानकारी ली। उन्होंने अस्पताल में इलाजरत वन्यजीवों को भी देखा और जानकारी प्राप्त की कि यह कब तक स्वस्थ हो जाएंगे।

चिड़ियाघर भ्रमण के अवसर पर मुख्यमंत्री ने यहां आए दर्शकों से भी मुलाकात की। इस दौरान मुख्यमंत्री ने कई बच्चों को दुलारकर आशीर्वाद दिया और उन्हें चॉकलेट भी दी। वहीं दूसरी ओर उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी ने आज पूर्व पार्षद श्री राम भुआल कुशवाहा के ट्रांसपोर्ट नगर, गोरखपुर स्थित आवास पर जाकर उनका हालचाल लिया। ज्ञातव्य है कि विगत माह श्री कुशवाहा को ब्रेन स्ट्रोक हुआ था, जिसका लखनऊ में ऑपरेशन हुआ था।

चुनावी गणित नहीं गुरु दर्शन, गोसेवा और बालप्रेम में रमे रहे सीएम योगी

● मंदिर की गोशाला में सीएम ने की गोसेवा, गोवंश को अपने हाथों से खिलाया गुड़

लखनऊ/गोरखपुर। लोकसभा चुनाव के अंतिम चरण का मतदान समाप्त होने के अगले दिन रविवार को जहां कई राजनेता चुनावी गणित समझने में उलझे रहे होंगे तो वहीं मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के लिए रविवार की सुबह भी रोज की तरह रही। गुरु दर्शन, पूजन, गोसेवा और भारत के भावी भविष्य को स्नेहाशीष का पोषण। सुबह की रिमझिम बारिश से गोवंश तथा बच्चों के बीच सीएम योगी की आत्मीयता का वातावरण और आनंदित करने वाला रहा।

गोरखनाथ मंदिर प्रवास के दौरान मुख्यमंत्री एवं गोरक्षपीठाधीश्वर योगी आदित्यनाथ की प्रात:कालीन दिनचर्या में बदलाव नहीं होता है। लोकसभा चुनाव को लेकर दो महीने की व्यस्तता के बीच सीएम जब भी मंदिर आए तो दर्शन-पूजन के साथ उन्हें बेहद आत्मीय संतोष देने वाली गोसेवा और बच्चों से मुलाकात-संवाद उनकी दिनचर्या का अपरिहार्य हिस्सा बनी रही। सीएम योगी शुक्रवार शाम से गोरखनाथ मंदिर प्रवास पर हैं। रविवार उनकी दिनचर्या परंपरागत रही। शिवावतार गुरु गोरक्षनाथ का दर्शन-पूजन कर उन्होंने लोकमंगल की कामना की। फिर अपने ब्रह्मलीन गुरुदेव महंत अवेद्यनाथ की समाधि पर जाकर मत्था टेका और उनका आशीर्वाद लिया। तत्पश्चात हर बार की तरह वह मंदिर परिसर के भ्रमण पर निकले। इस दौरान रिमझिम बारिश शुरू हो गई लेकिन उनके कदम नहीं रुके। भ्रमण करते हुए परिसर में उनकी नजर श्रद्धालुओं के साथ आए उनके बच्चों पर पड़ गई। मुस्कुराते हुए मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने बच्चों को अपने पास बुला लिया, सबके माथे पर हाथ फेरकर प्यार-दुलार और आशीर्वाद देने लगे। उन्होंने बच्चों से उनका नाम, उनकी पढ़ाई के बारे में पूछा, खूब हंसी ठिठोली की और सभी को चॉकलेट देकर विदा किया। बारिश की फुहारों के बीच सीएम का सानिध्य पाकर ये बच्चे काफी प्रफुल्लित नजर आ रहे थे।

गोरखनाथ मंदिर प्रवास के दौरान सीएम योगी गोसेवा करना कभी नहीं भूलते हैं। रविवार सुबह भी वह मंदिर परिसर का भ्रमण करते हुए गोशाला में पहुंचे। यहां गोवंश को उनके नाम श्यामा, गौरी, नंदी, भोला आदि से आवाज देकर अपने पास बुलाया। सीएम ने जब गोवंश को आवाज लगाई तो छोटी गायें और बछड़े भाव विह्वल होकर दौड़ते चले आए। मुख्यमंत्री ने सभी को दुलार किया और उन्हें गुड खिलाकर उनकी सेवा की। कई गोवंश तो उनके हाथों से गुड़ खाने के बाद उनसे लिपटने लगे। एक गोवंश की चंचलता देख सीएम ने उसके माथे पर हाथ फेरा और प्यार से हंसते हुए, गुड़ देते हुए बोल पड़े-काहें नाराज है, ले और खा ले। बारिश की फुहारों के बीच सीएम योगी की गोसेवा का दृश्य काफी नयनाभिराम रहा।

अरुणाचल में भाजपा की जीत पर सीएम योगी ने दी बधाई

लखनऊ। अरुणाचल प्रदेश विधानसभा चुनाव में भाजपा की प्रचंड जीत पर मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने हर्ष जताया है। उन्होंने इस जीत को 'फिर एक बार मोदी सरकार' के संकल्प से जोड़ते हुए 4 जून को केंद्र में भी प्रचंड बहुमत से नरेंद्र मोदी और भाजपा की सरकार बनने की उम्मीद जताई है। अपने एक्स हैंडल पर सीएम योगी ने लिखा, 'अरुणाचल प्रदेश विधानसभा में प्रचंड बहुमत से 'फिर एक बार मोदी सरकार' का संकल्प पूरा हो गया है। पूर्व दिशा से आ रही इस अरुणिमा से 04 जून को पूरा देश आलोकित होगा। कांग्रेस नेतृत्व वाले इंडी गठबंधन का 04 जून को चारों खाने चित होना सुनिश्चित है।'

उल्लेखनीय है कि रविवार को अरुणाचल प्रदेश में विधानसभा चुनाव के लिए वोटों की गिनती पूरी हो गई है। नतीजों में भाजपा को बंपर बहुमत मिला है और पार्टी ने 46 सीटों पर जीत दर्ज की है। कांग्रेस का प्रदर्शन निराशाजनक रहा है और पार्टी राज्य में महज एक सीट ही जीत सकी।

निरोधात्मक कार्यवाही में 27,05,146 लोग किए गए पाबंद

लखनऊ। मुख्य निर्वाचन अधिकारी नवदीप रिणवा ने बताया कि उत्तर प्रदेश में कानून व्यवस्था बनाए रखने के लिए भारत निर्वाचन आयोग के दिशा-निर्देशों का कड़ाई से अनुपालन किया जा रहा है। शांति भंग की आशंका में सीआरपीसी के तहत निरोधात्मक कार्यवाही करते हुए 28,44,490 लोगों को पाबन्द किये जाने हेतु नोटिस प्रेषित किये गये है, जिनमें से 27,05,146 लोगों को पाबन्द किया जा चुका है। भारत निर्वाचन आयोग के निर्देशों के अनुपालन में पुलिस, आयकर, आबकारी, नार्कोटिक्स एवं अन्य विभागों द्वारा कार्यवाही की जा रही है। सघन जाँच के लिए 464 अंतर्राज्यीय चेक पोस्ट तथा 1730 चेक पोस्ट राज्य के भीतर संचालित हैं। 16 मार्च से 01 जून, 2024 तक पुलिस विभाग द्वारा अपराधिक व्यक्तियों के 537 लाइसेंसी शस्त्र जब्त किये गये। 4768 लाइसेंसी शस्त्रों के लाइसेंस निरस्त कर जमा कराये गये। पुलिस विभाग द्वारा 10339 बिना लाइसेंसी शस्त्र, 10551 कारतूस, 3162.32 किग्रा विस्फोटक व 620 बम बरामद कर सीज किये गये।

इंडी गठबंधन की भारी जीत होने जा रही:अखिलेश

● भाजपा राजतंत्र के प्रतीक 'सेंगोल' को फिर से स्थापित करना चाहती है: सपा प्रमुख

लखनऊ। समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव ने कहा है कि विभिन्न न्यूज चैनलों द्वारा प्रदर्शित एक्जिट पोल के माध्यम से जनता को धोखा दिया जा रहा है। ये एक्जिट पोल वास्तव में कई महीने पहले ही तैयार कर लिये गये थे। बस चैनलों में इन्हें अब चलाया गया है। इसके पीछे गोदी मीडिया की यह साजिश है कि भाजपा को 300 पार दिखाया जाए, जिससे कि घपला करने की गुंजाइश बनी रहे। इन एग्जिट पोल को आधार बनाकर भाजपाई सोमवार को खुलने वाले शेयर बाजार के ऊपर-नीचे होते सूचकांक से लाभ उठाने की सोच रहे

हों तो आश्चर्य नहीं करना चाहिए।

यादव ने कहा कि भाजपाइयों के मुरझाए चेहरे सारी सच्चाई बयान कर रहे हैं। भाजपाई ये समझ रहे है कि पूरे देश का परिणाम चंडीगढ़ के मेयर के चुनाव की तरह बदला नहीं जा सकता है क्योंकि इस बार विपक्ष पूरी तरह से सजग है और जनाक्रोश भी चरम पर है। कल सातवें चरण के मतदान के बाद भाजपा का विदाई समारोह भी सम्पन्न हो गया है।

अखिलेश यादव ने कहा है कि अब जब 4 जून को वास्तविक जनादेश आना है तब सभी कार्यकर्ता, पदाधिकारी और प्रत्याशी ईवीएम की निगरानी में एक प्रतिशत भी चूक न करें। इंडिया गठबंधन जीत रहा है। इसीलिए मुस्तैद और चौकन्ने रहकर मतगणना कराए और जीत का प्रमाण पत्र लेकर ही विजय का उत्सव मनाएं।

अखिलेश यादव ने स्पष्ट किया है कि लोग दिखाए जा रहे एक्जिट पोल से भ्रमित न हों। इनका उद्देश्य विपक्ष का मनोबल तोड़ना है। इन एक्जिट पोल का आधार ईवीएम नहीं डीएम है। प्रशासन याद रखे जनशक्ति से बड़ा बल और कोई नहीं होता है। 4 जून को मंगलवार के दिन मंगल होगा और समाजवादी पार्टी पीडीए इंडिया गठबंधन की भारी जीत होने जा रही है। यादव ने कहा कि भाजपा राजतंत्र के प्रतीक 'सेंगोल' को फिर से स्थापित करना चाहती है जबकि समाजवादी पार्टी और इंडिया गठबंधन 'संविधान' को लोकतंत्र के प्रतीक के रूप में स्थापित देखना चाहती है। 'संविधान' लोकतंत्र की संजीवनी रहा है और हमेशा रहेगा।

चुनाव के दरम्यान मोदी-योगी के बीच दिखी मजबूत केमेस्ट्री

लखनऊ। सात चरण में हुआ चुनाव और इस दौरान चला लंबा प्रचार अभियान थम चुका है, अब सबकी निगाहें 4 जून को आने वाले परिणामों पर टिक गई हैं। इन सबके बीच शनिवार को विभिन्न सर्वे एजेंसियों की रिपोर्ट पर आधारित एग्जिट पोल के नतीजों ने भाजपा और एनडीए को भरपूर जोश से भर दिया है। एक तरफ जहां मोदी सरकार 400 पार के जादुई आंकड़े को प्राप्त करते हुए तीसरी बार सत्तासीन होने जा रही है तो यूपी में भी बेहतरीन परिणाम प्राप्त होने की उम्मीद है। वहीं अब इस बात पर भी चर्चा हो रही है कि यूपी में मोदी और योगी की जोड़ी एक बार फिर सुपरहिट साबित हुई है। लोकसभा चुनाव के दौरान दोनों नेताओं के बीच आपसी केमेस्ट्री भी काफी मजबूत दिखी। एग्जिट पोल में यूपी के शानदार परिणामों ने भी मोदी योगी के बीच बेहतरीन टीम वर्क होने का पुख्ता प्रमाण पेश किया है।

मेरठ से लेकर मीरजापुर तक प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ तकरीबन 21 कार्यक्रमों में एक दूसरे के साथ रहे। इस दौरान 13 जनसभाएं, 5 रोड शो, वाराणसी में नामांकन और काशी विश्वनाथ मंदिर व काल भैरव मंदिर में दर्शन-पूजन के दौरान दोनों नेताओं का एक दूसरे के प्रति सम्मान और आपसी विश्वास को बढ़ाने वाले संवादों की चर्चाएं हर जगह हुईं। वहीं इसके अलावा इस दौरान के कई वीडियो भी सोशल मीडिया पर खूब वायरल हुए, जिसने प्रधानमंत्री मोदी और मुख्यमंत्री योगी के बीच बढ़ रहे भरोसे को और भी पुख्ता किया। पीलीभीत में आयोजित जनसभा के दौरान मुख्यमंत्री मंचीय उद्बोधन के लिए प्रधानमंत्री के पीछे से डायस की ओर जाना चाहते थे, तभी प्रधानमंत्री द्वारा उनका हाथ पकड़कर सामने से जाने के लिए आग्रह करना सोशल मीडिया के विभिन्न प्लेटफॉर्म पर जबरदस्त वायरल हुआ। इसके अलावा काशी विश्वनाथ मंदिर में प्रधानमंत्री को त्रिशूल भेंट करने वाले वीडियो को भी इंटरनेट यूजर्स ने हाथों हाथ लिया और ये वीडियो भी लंबे समय तक ट्रेंडिंग बना रहा।

पीएम मोदी के साथ 21 कार्यक्रमों में से 15 जनसभाओं में मोदी-योगी ने एक दूसरे के प्रति अपने विश्वास को खुलकर प्रदर्शित किया। प्रधानमंत्री ने सीएम योगी को अपना मुख्यमंत्री बताते हुए खुद को इस बात के लिए गौरवान्वित महसूस करने वाला बताया कि योगी जैसा साथी उनके साथ है। वहीं योगी के कार्यों की तारीफ तो उन्होंने हर कहीं की। खासकर प्रदेश की कानून व्यवस्था में हुए जबरदस्त सुधार को पीएम मोदी ने अपनी हर रैली में सराहा। %हमारे योगी जी%, %मेरे योगी जी% जैसे प्रधानमंत्री के संबोधनों ने भी दोनों नेताओं के बीच प्रगाढ़ रिश्तों को प्रदर्शित किया। वहीं जनता भी मोदी है तो मुमकिन है और योगी है तो यकीन है के नारों से दोनों नेताओं की जोड़ी को यूपी में

वहीं चाहे रोड शो हो या जनसभाएं मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ हरदम पीएम मोदी के दाहिनी तरफ दिखे, जिससे भी जनता के बीच बड़ा संदेश गया। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के साथ जिन जनसभाओं में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ साए की तरह साथ साथ दिखे उनमें मेरठ (31 मार्च), सहारनपुर (6 अप्रैल), पीलीभीत (9 अप्रैल), अमरोहा (19 अप्रैल), अलीगढ़ (22 अप्रैल), आगरा (25 अप्रैल), इटावा (5 मई), लालगंज (16 मई), बाराबंकी (17 मई), वाराणसी में नारी शक्ति संवाद कार्यक्रम (21 मई), बस्ती (22 मई), गाजीपुर (25 मई), मीरजापुर/रॉबर्टसगंज (26 मई) शामिल हैं। इसके अलावा यूपी में पीएम मोदी ने मुख्यमंत्री के साथ पांच बड़े रोड शो किये, जिनमें गाजियाबाद में रोड शो (6 अप्रैल), बरेली में रोड शो (26 अप्रैल), कानपुर में रोड शो (4 मई), अयोध्या में रोड शो (5 मई) और वाराणसी में रोड शो (13 मई) हैं। साथ ही वाराणसी में प्रधानमंत्री के साथ काल भैरव मंदिर और श्रीकाशी विश्वनाथ धाम में दर्शन-पूजन (13 मई) और वाराणसी में ही पीएम मोदी के नामांकन (14 मई) में मुख्यमंत्री परछाई की तरह साथ रहे।

पायनियर वर्गीकृत

सूचना

सूचित हो कि मेरी इंटरमीडिएट 2022 की मार्कशीट रोल नंबर 2226995755 वास्तव में खो गई है। सानवी श्रीवास्तव पुत्री मनोज श्रीवास्तव 264, महाराजगंज, सर्कुलर मार्ग, गोंडा, उत्तर प्रदेश।

सूचना

सूचित हो कि मैं सुरेश लाल अपनी पुत्री अंशिका लाल (ANSHIKA LAL) का नाम बदलकर गौरी लाल (GAURI LAL) कर दिया है भविष्य में मेरी पुत्री को गौरी लाल (GAURI LAL) D/o सुरेश लाल के नाम से जाना व पहचाना जाए। सुरेश लाल पुत्र सोहनलाल निवासी 13/316, इंदिरानगर, लखनऊ।

प्रधानमंत्री मोदी का आत्मविश्वास पूरी तरह से डगमगा गया है: प्रमोद तिवारी

लखनऊ। राज्यसभा में विपक्ष के उपनेता प्रमोद तिवारी ने कहा है कि ताजा लोकसभा चुनाव को लेकर प्रधानमंत्री का आत्मविश्वास पूरी तरह से डगमगा गया है। पीएम मोदी ने चुनाव की शुरूआत में पहले चार सौ पार का नारा दिया, अब वह सौ दिन की कार्य योजना का राग अलापकर अपने खो, हुए आत्मविश्वास का ही प्रदर्शन कर रहे हैं। पीएम के कन्याकुमारी में ध्यान को लेकर तंज कसते हुए राज्यसभा में विपक्ष के उपनेता प्रमोद तिवारी ने कहा कि कैमरों की चकाचैंध में पीएम का ध्यान आखिरी चरण के मतदान को प्रभावित करने का नाटक ही रहा। उन्होंने कहा कि ध्यान व तपस्या तो मन से हुआ करती है। उन्होंने पीएम के ध्यान पर तगड़े कटाक्ष में सवाल दागा कि प्रधानमंत्री जी ध्यान और तपस्या तो दुनिया भर की हर बातों से दूर होकर की जाया करती है। राज्यसभा सदस्य प्रमोद तिवारी ने कहा है कि प्रधानमंत्री का ध्यान तो बड़े बड़े कैमरों

की बड़ी चकाचैंध में देश के सामने आया। उन्होंने कहा कि असलियत यह है कि पीएम ने आखिरी चरण के मतदान को प्रभावित करने के लिए अपना आखिरी असफल प्रयास किया है। चुनाव नतीजे के अनुमान पर एजेसिंयों के सर्वे को एक प्रतिशत भी धरातल का सर्वे नहीं करार दिया है। उन्होंने सर्वे के अनुमान को लेकर यह सवाल उठाया है कि आखिर यह एजेन्सियां बतायें कि वह गांवों में तो मतदाताओं के बीच पहुंच ही नहीं सकीं तब उनके सर्वे का आधार क्या हो सकता है। बिना वोटरों के बीच गये एजेंसिंया हवा में दे रही है आधारहीन सर्वे रिपोर्ट। कांग्रेस स्टार प्रचारक प्रमोद तिवारी ने कहा कि यह सर्वे गांव के मतदाताओं से कोसो दूर हैं। वहीं उन्होंने कहा कि लोकसभा चुनाव में पांच राज्यों में स्टार प्रचारक के रूप में जनता के बीच तथा इण्डिया गठबंधन के विभिन्न दलों के नेताओं से बातचीत के जरिये उन्हें जो रूझान मिला हैए उससे यह पूरी तरह स्पष्ट है कि इण्डिया गठबंधन को दो सौ पन्चानबे से साढ़े तीन सौ सीट पर जोरदार जीत मिलेगी। गठबंधन के पीएम के चेहरे को लेकर भी विपक्ष के उपनेता प्रमोद तिवारी ने स्पष्ट किया है कि देश के चुनाव में सबसे बड़े स्टार प्रचारक राहुल गांधी रहे और जनता के बीच राहुल गांधी की गठबंधन के नेताओं में सबसे बड़ी मांग दिखी। उन्होंने कहा कि इण्डिया गठबंधन की केन्द्र में सरकार बनेगी। प्रमोद तिवारी ने कहा कि ऐसे में यह स्पष्ट है कि गठबंधन की सरकार की बागडोर राहुल गांधी ही संभालेंगे।

उपचुनाव की चारों सीट पर भाजपा फिर करिश्मा करने को तैयार

● जन्मदिन से पहले योगी को जीत का तोहफा देने को बेताब यूपी की जनता

लखनऊ। पांच जून को उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ का जन्मदिन है। चार जून को लोकसभा चुनाव समेत उत्तर प्रदेश के विधानसभा उपचुनाव का भी परिणाम घोषित होगा। सीएम योगी के जन्मदिन के पहले ही यूपी की जनता विधानसभा उपचुनाव की चारों सीटें जिताकर उन्हें तोहफा देने का मन बना चुकी है। जिन चार सीटों पर उपचुनाव हुए हैं, उनमें से तीन पर भाजपा और एक पर सपा ने विधानसभा चुनाव-2022 में जीत हासिल की थी। हालिया उपचुनावों में भी देखें तो गोला गोकर्णनाथ, रामपुर और छानबे विधानसभा सीट पर मतदाताओं ने योगी के विकास पर बटन दबाया तो लोकसभा उपचुनाव में एक तरफ %आजम का गढ़% ढहाया तो दूसरी तरफ रामपुर को भी %आकाश% पर पहुंचाया। योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में सभी 75 जनपदों में समान रूप से विकास कार्यों की बहती गंगा से ही भारतीय जनता पार्टी के कमल की विकास धारा प्रवाहित होती है।

उत्तर प्रदेश के मतदाताओं ने योगी आदित्यनाथ के विकास पर ही ईवीएम का बटन दबाया। 2022 विधानसभा चुनाव में ददरौल से मानवेंद्र सिंह ने कमल के निशान पर जीत हासिल की थी। उनके निधन के उपरांत यहां उपचुनाव में पार्टी ने उनके पुत्र अरविंद सिंह को मैदान में उतारा है। सीएम योगी ने अरविंद के लिए चुनाव प्रचार भी किया। लखनऊ पूर्वी से विधायक, पूर्व कैबिनेट मंत्री व भाजपा के कद्दावर नेता आशुतोष टंडन %गोपाल% के निधन से यह सीट रिक्त हो गई। पार्टी ने यहां से ओपी श्रीवास्तव को प्रत्याशी बनाया तो योगी ने उनका हाथ थामकर मतदाताओं से कमल खिलाने की अपील की, जिस पर मतदाताओं ने उन्हें जीत के प्रति आश्वस्त किया। आमचुनाव में सोनभद्र की दुद्धि सीट भी भाजपा के रामदुलार पर मतदाताओं ने दुलार दिखाया, लेकिन यह सीट रिक्त होने से यहां भी उपचुनाव हुआ। यहां से भाजपा प्रत्याशी श्रवण कुमार गोंड के लिए भी सीएम ने पसीना बहाते हुए दो-दो बार जनसभा की। वहीं गैंसड़ी विधानसभा से सपा विधायक शिवप्रताप यादव के निधन के उपरांत हुए उपचुनाव में भाजपा ने पूर्व विधायक शैलेष कुमार सिंह शैलू को टिकट दिया। सीएम योगी ने विकास के बलबूते उनके लिए वोट मांगा।

उप्र में गोला गोकर्णनाथ, रामपुर, स्वार टांडा और छानबे विधानसभा सीटों पर उपचुनाव हुआ। गोला गोकर्णनाथ में विधायक अरविंद गिरि के निधन के उपरांत उपचुनाव में भाजपा ने उनके पुत्र अमन गिरि को टिकट दिया। सीएम योगी ने उपचुनाव में भी जनता से भाजपा के पक्ष में अपील की तो अमन जीतकर लखनऊ पहुंचे। वहीं स्वार टांडा में भाजपा की सहयोगी अपना दल (एस) ने शफीक अंसारी पर विश्वास जताया और छानबे सीट पर अपना दल एस विधायक राहुल कोल के निधन के उपरांत उनकी पत्नी रिंकी कोल को टिकट मिला। योगी ने सहयोगी दलों के दोनों प्रत्याशियों के लिए न सिर्फ वोट मांगा, बल्कि जीत की रणनीति भी तय की। परिणाम रहा कि विधानसभा उपचुनाव की यह दोनों सीट भी सहयोगी दल ने जीती। वहीं 8 दिसंबर 2022 को रामपुर में हुए उपचुनाव में दस बार के विधायक आजम खां का किला ढह गया और आकाश सक्सेना चुनाव जीते।

वहीं विधान परिषद के उपचुनावों में भी कमल का कमाल बरकरार रहा। लक्ष्मण आचार्य के राज्यपाल व बनवारी लाल दोहरे के निधन के कारण रिक्त हुए उपचुनाव में भी भाजपा के पद्मसेन चौधरी व मानवेंद्र सिंह ने जीत हासिल की। रामपुर व आजमगढ़ लोकसभा उपचुनाव भी योगी आदित्यनाथ के कुशल प्रशासनिक नेतृत्व का ही असर रहा कि 2022 में यहां खास की राजनीति पर विराम लग गया। रामपुर में जहां भारतीय जनता पार्टी के घनश्याम सिंह लोधी ने 367397 वोट (51.96 फीसदी) पाकर यह सीट सपा से छीन ली। वहीं सपा को 325205 वोट (46 फीसदी) ही मिले।

एनएचएआई ने टोल टैक्स में बढ़ोतरी का सर्कुलर किया जारी

● नई दरें जल्दी ही लागू हो जाएंगी

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

लोगों को शहर से गुजरने वाले हाईवे पर सफ र करना आज से महंगा हो जाएगा। नेशनल हाईवे अथॉरिटी ऑफ इंडिया (एनएचएआई) ने रविवार को टोल टैक्स में बढ़ोतरी का सर्कुलर (परिपत्र) जारी कर दिया। हालांकि नई दरें जल्दी ही लागू हो जाएंगी। इसका असर लखनऊ से होकर गुजरने वाले करीब तीन लाख छोटे.बड़े वाहनों के चालकों पर पड़ेगा। शनिवार को सड़क और परिवहन मंत्रालय की मंजूरी के बाद टोल टैक्स बढ़ाया गया हैं। राजधानी से जुड़ने वाले तीन राष्ट्रीय राजमार्ग पर आना.जाना महंगा हो जाएगा। एनएचएआई कानपुर हाईवे पर नवाबगंज, अयोध्या हाईवे पर अहमदपुर, रौनाही, बारा और रायबरेली हाईवे पर दखिना पर वसूली करता है। एनएचएआई के परियोजना निदेशक सौरभ चौरसिया ने बताया कि 2024-25 नोटिफिकेशन मार्च में जारी किया गया था, लेकिन चुनाव आचार संहिता के चलते बढ़ी दरें लागू नहीं हो सकीं जो अब जल्दी ही लागू होंगी। कार और जीप के टोल टैक्स में 10 रुपये इजाफा किया गया है।

टोल प्लाजा- नवाबगंज कानपुर हाईवे

एकल यात्रा	पुरानी दर	नई दर
कार	90	95
बस, ट्रक	310	320
छोटे कॉमा.	150	155

टोल प्लाजा- दखिना शेखपुर, रायबरेली हाईवे

एकल यात्रा	पुरानी दर	नई दर
कार	110	115
बस, ट्रक	375	385
छोटे कॉमर्शियल	180	185

टोल प्लाजा- अहमदपुर अयोध्या हाईवे

एकल यात्रा	पुरानी दर	नई दर
कार	115	115
बस, ट्रक	385	395
छोटे कॉमा.	185	185

टोल प्लाजा- शाहबपुर, अयोध्या हाईवे

एकल यात्रा	पुरानी दर	नई दर
कार	40	40
बस, ट्रक	130	135
छोटे कॉमर्शियल	60	65

टोल प्लाजा रौनाही, अयोध्या हाईवे

एकल यात्रा	पुरानी दर	नई दर
कार	115	120
बस, ट्रक	405	415
छोटे कॉमर्शियल	190	195

टोल प्लाजा- बारा, अयोध्या हाईवे

एकल यात्रा	पुरानी दर	नई दर
कार	100	105
बस, ट्रक	345	350
छोटे कॉमर्शियल	165	170

जककल विभाग ने कृष्णानगर सहित तीन इलाकों में लगाए प्याऊ

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

शहर को भीषण गर्मी में फंसा देखकर जलकल विभाग द्वारा पेयजल की व्यवस्था की गयी है। कृष्णानगर सहित पेयजल के प्याऊ तीन स्थानों पर लगाया गया है। नगर निगम ने भीषण गर्मी को देखते हुए जलकल के सहयोग से प्याऊ लगाए गए हैं। महाप्रबंधक जलकल के आदेश पर जल कल विभाग जोन 5 ने ठंडे जल की व्यवस्था की गयी। जलकल विभाग द्वारा भीषण गर्मी में आम जन मानस को पेय जल की किसी भी प्रकार की समस्या उत्पन्न न हो, इसके लिए हर संभव प्रयास किए जा रहे है । इस प्रयास के तहत रविवार को तीनस्थानों पर शीतल पेय जल की व्यवस्था की गई हैं। कृष्णा नगर पुलिस पिंक बूथ के पास, मेन रोड पूरन नगर पुलिस चौकी के सामने, इको गार्डन धरना स्थल चौराहा पर की है।

प्रबंध निदेशक मध्यांचल ने वर्कशॉप का किया निरीक्षण

लखनऊ। प्रबंध निदेशक मध्यांचल द्वारा अलीगंज वर्कशॉप का निरीक्षण कर संबंधित अधिकारियों को निर्देशित किया गया। जहां विगत माह 400 और 630 केवीए के ट्रांसफॉर्मर डैमेज हुए हैं। वहां लोड का आकलन कर आवश्यकतानुसार अतिरिक्त ट्रांसफार्मर बिजनेस प्लान में रखवाया जाय। वितरण द्वारा तत्काल पूर्व में खराब हुए ट्रांसफार्मर जो अब तक वर्कशॉप में नहीं भिजवाए गए हैं, भिजवा दिए जाएं, ताकि उनको रिपेयर कर किट्टी मेंटेन की जा सके। यदि खराब ट्रांसफार्मर को खुलवाने पर उसमें तेल मानक से कम पाया जाता है, तो जेई वितरण की जिम्मेदारी तय की जायेगी। इवनिंग टाइम में लोड बढ़ने पर ट्रांसफॉर्मर की लोड बैलेंसिंग कर उनका डैमेज नियंत्रित किया जाय।

वाहन पार्ट्स की चोरी पर क्लीनर निलंबित संस्था पर एक लाख का जुर्माना

लखनऊ। नगर निगम में वाहन पार्ट्स की चोरी पर बड़ी कार्रवाई हुई। वाहनों के पार्ट्स की चोरी मामले में लिप्त क्लीनर के निलंबन किया गया। साथ ही कार्यदायी संस्था को नोटिस जारी कर कार्यवाही की गयी। केंद्रीय कार्यशाला में कार्यदायी संस्था के ड्राइवर के कुकृत्य पर संस्था पर एक लाख के जुर्माने का जुर्माना ठोंका गया। साथ ही कार्यदाई संस्था के ड्राइवर को भी तत्काल निकाला गया। नगर निगम ने सरकारी वाहनों के पार्ट्स चोरी करने के मामले पर बड़ी कार्रवाई की। नगर आयुक्त इंद्रजीत सिंह के निर्देश पर केंद्रीय कार्यशाला में तैनात क्लीनर द्वारा किये गए चोरी इत्यादि कार्यों में लिप्त पाया गया। लिप्त पाए जाने पर अनुशासनात्मक कार्यवाही की गई है। आरोपित ड्राइवर को पद मुक्त करने साथ ही कार्यदायी संस्था प्रिया इंटरप्राइजेज को नोटिस जारी कर एक लाख रुपय का जुर्माना भी लगाया गया है। नगर निगम की केंद्रीय कार्यशाला के गैराज नम्बर 07 में कार्यरत क्लीनर रिजवान ट्रैक्टर व एंटी स्मोक गन एवं वाहनों की मरम्मत इत्यादि का कार्य करता है। उस क्लीनर द्वारा दोपहर 12:20 बजे कार्यदायी संस्था प्रिया इंटरप्राइजेज से आबद्ध टाटा.एस के चालक रंजीत के साथ केन्द्रीय कार्यशाला के मुख्य द्वार से स्वराज वाहन का नया सामान ब्रेक डिस्क, ब्रेक प्लेट, डीजल फ़िल्टर आदि चोरी कर केन्द्रीय कार्यशाला के बाहर निकाला जा रहा था। तभी मुख्य द्वार पर तैनात सिक्युरिटी गार्ड द्वारा चेकिंग के दौरान इस कृत्य का खुलासा हो गया। चीफ इंजीनियर आरआर मनोज से जांच कराई। अपर नगर आयुक्त आर आर पंकज श्रीवास्तव से परीक्षण कराया रिपोर्ट प्राप्त होने पर कार्यवाही की गई। क्लीनर रिजवान को कार्यशाला से वाहनों की मरम्मत के सापेक्ष पार्ट्स की चोरी किये गये जाने जैसे गंभीर प्रकरण में लिप्त होने पर निलंबन की कार्यवाही की गई। चालक रंजीत जिस कार्यदायी संस्था प्रिय इंटरप्राइजेज से आबद्ध है उसको नोटिस जारी करने के साथ ही एक लाख के जुर्माने की कार्यवाही की गई है।

● ड्राइवर को पद से तत्काल हटाने का निर्देश संस्था को नोटिस भेजकर की कार्रवाई

जश्न-ए-अदब का कल्चरल कारवां अवध की शाम को बना रहा यादगार

● देश के ख्यातिलब्ध शायर और कलाकार बढ़ाएंगे लखनऊ की रौनक

संवाददाता। लखनऊ

साहित्य, संगीत, कला, संस्कृति की विरासत को वर्षों से संजोकर रखने वाली संस्था जश्न-ए-अदब (साहित्योत्सव) का कल्चरल कारवां शिमला, पुणे, दिल्ली आदि शहरों से होकर लखनऊ शहर तक पहुंच रहा है। देश के नामचीन शायरों, कवियों, गायकों, अभिनेताओं एवं अन्य विधाओं के महत्त्वूर्ण कलाकारों को एक मंच पर लाने का काम बखूबी से कर रही यह संस्था संस्कृति विभाग, भारत सरकार के सहयोग से प्रति वर्ष देश के कई राज्यों में दो या तीन दिवसीय कार्यक्रम में हमारी सांस्कृतिक धरोहर से परिचय कराती आ रही है।

साहित्योत्सव के इस दो दिवसीय आयोजन में दो और तीन जून को लखनऊ शहर के हयात रीजेंसी, गोमतीनगर में कल्चरल कारवां के माध्यम से शहरवालों के लिए उपहार स्वरूप शास्त्रीय गायन, ग़ज़ल गायन, पैनल डिस्कशन, बैतबाज़ी, शेरी नशिस्त,नाटक, वाद्ययंत्र वादन, मुशायरा व कवि सम्मेलन,शास्त्रीय नृत्य, सूफ़ी और लोक गायन आदि महत्त्वपूर्ण कार्यक्रमों का गुलदस्ता सजाकर भेंट किया जाएगा।

पहले दिन उद्घाटन सत्र में बतौर मुख्य अतिथि हाई कोर्ट लखनऊ बेंच के न्यायाधीश जस्टिस राजेश चौहान की उपस्थिति में संस्था के संस्थापक कुंवर रंजीत चौहान कल्चरल कारवां के सफ़र के बारे में चर्चा करेंगे।

उसके बाद प्रदीप अली की ग़ज़ल गायकी का आनंद लेने का अवसर मिलेगा। इसी कड़ी में अनिल शर्मा के निर्देशन और डॉ दानिश इक़बाल द्वारा लिखित नाटक 'कटघरे में ग़ालिब' का मंचन होगा।

उसके बाद बड़े कलाकारों द्वारा पैनल डिस्कशन,कथक नृत्य, वाद्य यंत्र वादन आदि महत्त्वपूर्ण विधाओं के कार्यक्रमों के बाद पहले दिन का समापन कवि सम्मेलन एवं मुशायरा से होगा जिसमें प्रो. वसीम बरेलवी, पद्मश्री सुरेंद्र शर्मा,पद्मश्री प्रो. अशोक चक्रधर, फरहत अहसास, जमुना उपाध्याय आदि नामचीन कवियों एवं शायरों की रचनाओं को सुनने का मौक़ा मिलेगा।

दूसरे दिन का आगाज़ बैतबाज़ी से होगा। उसके बाद स्वामी मानस दास द्वारा सूफ़ी गायन एवं देश के महत्त्वपूर्ण रचनाकारों द्वारा शेरी नशिस्त का आयोजन होगा। सिनेमा और ओटीटी के लिए अवसर और सीमाएं पर चर्चा करने के लिए अभिनेता अमित सियाल, अभिनेता फैसल मलिक जैसी नामचीन हस्तियां मौजूद रहेंगीं। दूसरे दिन के कार्यक्रम का समापन शास्त्रीय गायन -सुर संध्या में पद्मभूषण पंडित साजन मिश्र जी की गायकी से होगा। इस महत्त्वपूर्ण दो दिवसीय आयोजन का हिस्सा बनने के लिए संस्था की वेबसाइट पर नि:शुल्क पंजीकरण कराना अनिवार्य है। दोनों दिन यह आयोजन दोपहर दो बजे से शुरू होकर अनवरत 9 बजे तक चलेगा।

तीन घंटे चले अभियान में निकला दस कुन्तल कचरा

लखनऊ। गोमतीनदी को साफ करने के लिए स्वच्छ पर्यावरण सेना द्वारा तड़के सुबह सफाई अभियान चलाया गया। तीन घंटे चले सफाई अभियान में 10 कुंतल कचरा निकालने में सफल रही। आदि गंगा गोमती मां की विधिवत आरती के बाद मुख्यमंत्री से लखनऊ में बहने वाली गोमती नदी में गिरने वाले गंदे नालों को बंद करने की मांग की गई। भीषण गर्मी को मात देते हुए स्वच्छ पर्यावरण सेना संडे फ ॅर गोमती के दौरान कचरे से भरी गोमती नदी की तलहटी से लगभग 10 कुंतल कचरा निकालने में सफल रही। स्वच्छ पर्यावरण सेना ने रविवार की सुबह 5 बजे हनुमान सेतु निकट झूले लाल पार्क गोमती नदी तट पर सफ ाई अभियान के 312वें रविवार को लगभग 3 घंटे नदी की तलहटी की सफ ाई की। संयोजक रणजीत सिंह के नेतृत्व में लगभग 3 घंटे चले इस अभियान में बबिता यादव, प्रीति जैन, सरिता जैसवाल, शांती कश्यप, महेंद्र प्रताप सिंह, अनुग्रह सिंह, अजय चौधरी, विवेक जोशी, जितेन्द्र शर्मा, सौरभ अग्रवाल, कमलेश कुमार, प्रदीप वर्मा, हरिनाम सिंह, रमेश जोशी, अनमोल वर्मा, विष्णु तिवारी, संजय वर्मा, कृपा शंकर वर्मा, रामकुमार बाल्मीकि, अभिषेक सिंह, आंनद वर्मा, ललित सिंह कश्यप, जेपी गुप्ता इत्यादि स्वयं सेवकों ने गोमती नदी स्वच्छता अभियान चलाकर बड़ी मात्रा में पालीथीन बैग, सड़े गले कपड़े, पालीथीन पैकेटस और देवी देवताओं की सैकड़ों मूर्तियों को गोमती नदी से बाहर निकालकर नदी का लगभग 10 कुंतल कचरा कम किया। आदि गंगा गोमती मां की विधिवत आरती के बाद मुख्यमंत्री से लखनऊ में बहने वाली गोमती नदी में गिरने वाले गंदे नालों को बंद करने की मांग की गई।

मतगणना की सुबह से देर रात तक यातायात व्यवस्था में रहेगा परिवर्तन

● शहीद पथ, आशियाना, बिजनौर, उतरेठिया से आने वाले वाहनों का डायवर्जन रहेगा

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

लोकसभा सामान्य निर्वाचन की मतगणना चार जून को रमाबाई अंबेडकर मैदान रैली स्थल पर होगी। इस दौरान शहीद पथ, आशियाना, बिजनौर, उतरेठिया से आने वाले वाहनों का डायवर्जन रहेगा। इस दौरान राजनैतिक पार्टियों के वाहन पार्किंग स्थल पर खड़े होंगे। यह डायवर्जन व्यवस्था चार जून की सुबह से रात तक लागू रहेगा। शहर में चार जून को लोक सभा चुनाव की मतगणना चार जून को होगी। इसके लिए रमाबाई मैदान पर सभी मतगणना अधिकारी कर्मचारी सबुह पहुंचेंगे। साथ ही राजनैतिक पार्टियों के प्रतिनिधि, बूथ एजेंट आदि रमाबाई स्थल जाएंगे, इसके लिए जाम की स्थित कुछ मार्गों पर बनी रहेगी। ऐसे में शहीद पथ, आशियाना, बिजनौर, उपरेठिया से वाहनों का डायवर्जन रहेगा। यह डायवर्जन व्यवस्था चार जून की सुबह से रात तक लागू रहेगा। इसके लिए प्रशासन द्वारा कुछ मार्गों को प्रतिबंधित किया गया है, जिन्हें चिन्हित किया गया है। इन मार्गों के वैकल्पिक रूटों को आमजन को जानना चाहिए।

इस तरफ रहेगी रोक

● उतरेठिया शहीद पथ अंडरपास से रमाबाई रैली स्थल की तरफरांग साइड में किसी भी प्रकार के वाहन पूर्णतया प्रतिबंधित रहेंगे।

● निजी वाहन रमाबाई पुलिस चौकी रैली स्थल तिराहे से रैन बसेरा तिराहा या बिजनौर शहीद पथ अंडरपास से होकर नहीं जा सकेंगे।

● बिजनौर शहीद पथ अंडरपास चौराहे से निजी वाहन सर्विस रोड होकर रमाबाई पुलिस चौकी की तरफ नहीं जा सकेगा।

● अंबेडकर विवि अंडरपास से कोई भी वाहन रॉन्ग साइड रमाबाई की तरफ नहीं जा सकेंगे।

इधर से वाहन जा सकेंगे

● शहीद पथ के ऊपर से होकर वाहन अपने गंतव्य को जा सकेंगे।

● बिजनौर रोड, ओमेक्स सिटी या न्यू गडौरा होकर वाहन अपने गंतव्य को जा सकेंगे।

● पोलिंग पार्टी के वाहनों के दवाब अधिक होने पर निजी वाहन वैकल्पिक मार्गों का प्रयोग करें।

विशेष सचिव नगर विकास ने कान्हांउपवन गौशाला का किया निरीक्षण

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

कान्हा उपवन गौशाला में विशेष सचिव नगर विकास द्वारा निरीक्षण किया गया। निरीक्षण केदौरान विशेष सचिव को सभी व्यवस्थाएं सही मिलीं। बाड़ों में स्वच्छता और गौ के लिए पर्याप्त चारा भूसे चोकर के साथ पाया गया। गर्मी से बचाने के लिए विशेष इंतजाम गौशाला प्रबंधन के द्वारा किया गया था। विशेष सचिव द्वारा गौशाला में कुछ स्थानों पर शेड के विस्तार के निर्देश दिए गए हैं। शनिवार को विशेष सचिव नगर विकास राजेंद्र पैंसिया ने नगर निगम के संचालित नादरगंज अमौसी स्थिति कान्हा उपवन गौशाला का औचक निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान विशेष सचिव नगर विकास को सभी व्यवस्थाएं सही पायी गयीं। विशेष सचिव ने सभी बाड़ों का निरीक्षण किया, जहां पर भूसे चोकर तथा सभी नांदों में मानकानुसार मिला।

गर्मी एवं लू से बचाव के लिए स्वास्थ्य विभाग ने कसी कमर

● सावधानी बरतकर लू से हो सकता है बचाव

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

भीषण गर्मी और लू ने जीवन बेहाल कर रखा है लेकिन परेशान न हों। स्वास्थ्य विभाग ने इससे बचाव के लिए व्यापक तैयारियां की है और जनसामान्य को गर्मी और लू से बचाव के लिए जागरूक भी किया जा रहा है। मुख्य चिकित्सा अधिकारी डा. मनोज अग्रवाल ने बताया कि लोगों को घबराने की जरूरत नहीं है विभाग द्वारा गर्मी एवं लू से बचाव के लिए व्यापक तैयारियां कर ली गई हैं। सभी राजकीय अस्पतालों में गर्मी के प्रभाव एवं इससे उत्पन्न होने वाले रोगों के प्रबंधन के लिए कोल्ड रूम, कोल्ड पैक, ओआरएस के पैकेट , शुद्ध ठंडा पेयजल, पंखा और कूलर आदि की व्यवस्था एवं पर्याप्त मात्रा में दवाइयों की उपलब्धता सुनिश्चित करा दी गई है। लू से बचाव के लिए सभी नगरीय एवं ग्रामीण सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्रों, प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों के स्टाफ को जूम के माध्यम से प्रशिक्षित किया गया है। शादी, विवाह एवं अन्य समारोह में जनसामान्य को आवश्यक सावधानियाँ बरतने के दिशा निर्देश जारी किए गए हैं। सभी निजी चिकित्सा संस्थानों में लू से बचाव के लिए आवश्यक तैयारिया करा दी गई हैं। चिकित्सा संस्थानों के प्रमुख द्वार पर अस्थायी शेल्टर का निर्माण, उक्त स्थल पर कूलर पंखा, शुद्ध पीने के पानी की व्यवस्था के साथ ही पैरासिटामॉल एवं अन्य आवश्यक दवाइयों की व्यवस्था तथा प्रशिक्षित स्टाफ की व्यवस्था करा दी गई है। जनहित में नि:शुल्क ओआरएस और शरीर को पोंछने के साफ गीले कपड़े की व्यवस्था करा दी गई है।

रेजिडेंट वेल्फेयर एसोसिएशन को निर्देश

उत्तर प्रदेश आवास विकास परिषद द्वारा अधीनस्थ अधिकारियों एवं कर्मचारियों को निर्देश दिए है कि वह रेजिडेंट वेल्फेयर एसोसिएशन को गर्मी एवं लू से बचाव के दिशा निर्देश जारी करें। रोटरी क्लब के साथ बैठक कर उनके स्वयंसेवकों को लोगों को जागरूक करने और गर्मी से बचाव के उपाय करने के निर्देश दिए गए हैं। इसके अलावा मुख्य विकास अधिकारी की अध्यक्षता में भारतीय औद्योगिक संघ के पदाधिकारियों साथ संवेदीकरण बैठक का आयोजन किया गया। कंपनियों द्वारा कर्मचारियों को प्रचार प्रसार सामग्री के माध्यम से जागरूक किया जा रहा है। लखनऊ व्यापार मण्डल द्वारा विभिन्न स्थानों पर शुद्ध पीने के पानी, लखनऊ मेट्रो द्वारा प्लेटफ़ॉर्म पर तथा उत्तर प्रदेश परिवहन विभाग द्वारा बस स्टॉप पर यात्रियों के लिए प्याऊ की व्यवस्था की गई है। साथ ही मेट्रो में ऑडियो-वीडियो जिंगल, होर्डिंग्स के माध्यम से जनमानस को लू से बचाव के लिए जागरूक किया जा रहा है। नगर निगम द्वारा जनपद के विभिन्न स्थानों पर लू से बचाव के लिए होर्डिंग्स एवं एलईडी डिस्प्ले के माध्यम से लोगों को जागरुक किया जा रहा है।

गर्मी एवं लू से बचाव के उपाय के लिए यह करें

दोपहर 12 से तीन के मध्य बेवजह घर से बाहर न निकलें। अगर निकलना बहुत जरूरी है तो घर से बाहर निकलते समय सिर को गीले कपड़े या गमछे से ढकें। छाते का प्रयोग करें और पीने का पानी साथ रखें। हल्के रंग के कपड़े पहने जो पसीना सोखते हों। खुले हवादार कमरे मे रहें। कमरे के खिड़की और दरवाजों पर परदे डालें। खूब पानी पियें, अगर प्यास न लगी हो तो भी पीये।

आम पना, बेल का शर्बत, रसदार फल जैसे संतरा, तरबूज, खरबूजा, खीरा, ककड़ी, छांछ, अन्नानास नारियल पानी, नींबू पानी, घर की बनी लस्सी और ओआरएस का घोल पीयें। जहां तक संभव हो दिन के समय घर के निचले तल पर ही रहें।

सीएमओ कार्यालय में पीने के पानी और मीठे की व्यवस्था

भीषण गर्मी और लू को देखते मुख्य चिकित्सा अधिकारी डा. मनोज अग्रवाल की अगुवाई में अधिकारियों और कर्मचारियों के सहयोग से मुख्य चिकित्सा अधिकारी कार्यालय में जनसमुदाय को गर्मी से राहत देने के लिए पानी, शर्बत और मीठे के साथ बैठने की भी व्यवस्था शुरू हुई है। मुख्य चिकित्सा अधिकारी ने कहा कि लू और गर्मी से बचाव के लिए जरूरी है कि खूब पानी पीये चाहे प्यास लगी हो या न लगी हो। चाय, कॉफी, एल्कोहॉल, कार्बोनेटेड सॉफ्ट ड्रिंक से दूरी बनाएं। यह शरीर में निर्जलीकरण करते हैं।

यह होती है लू या हीट वेव

हीट वेव आमतौर पर रुकी हुई हवा की वजह से होती है। उच्च दबाव प्रणाली हवा को नीचे की ओर ले जाती है। यह शक्ति जमीन के पास हवा को बढ़ने से रोकती है। नीचे बहती हुई हवा एक टोपी की तरह काम करती है। यह गर्म हवा को एक जगह पर जमा कर लेती है। हवा के चले बिना, बारिश नहीं हो सकती है, गर्म हवा को और गर्म होने से रोकने के लिए कोई उपाय नहीं होता है। मैदानी क्षेत्र में जब भी तापमान 40 डिग्री या उससे अधिक हो जाता है तब लू या हीट वेव का असर दिखने लगता है। मौसम विज्ञान विभाग आइएमडी के मुताबिक जब कभी मैदानी इलाकों का अधिकतम तापमान 40 डिग्री सेल्सियस तक और पहाड़ी क्षेत्रों का तापमान 30 डिग्री सेल्सियस तक पहुंच जाता है तो लू चलने लगती है और यह स्वास्थ्य पर बुरा असर डालती है। अत्यधिक गर्म मौसम की अवधि को हीट वेव कहते हैं। अक्सर पारा जब औसत से ऊपर चला जाता है तो भी लू चलने लगती है। एक बात और अगर किसी क्षेत्र में तापमान 47 डिग्री सेल्सियस तक पहुंच जाता है, तो इसे खतरनाक लू की श्रेणी में रखा जाता है। तटीय क्षेत्रों में जब तापमान 37 डिग्री सेल्सियस हो जाता है तो हीट वेव चलने लगती है।

'नाच बसंती नाच' का ट्रेलर व म्यूज़िक लॉन्च

लखनऊ। बालीवुड अभिनेत्री डाक्टर अनीता सहगल वसुन्धरा के मंच संचालन में लुलु मॉल लखनऊ में 'नाच बसंती नाच' का ट्रेलर/म्यूज़िक लॉन्च किया गया। फिल्म के निर्देशक/अभिनेता दिलीप आर्या ने बताया कि 'लौंडा नाच' प्रदर्शन कला या परफोर्मिंग आर्ट के रूप में सम्पूर्ण उत्तर भारत के प्रमुख राज्यों जैसे बिहार, उत्तर प्रदेश, छतीसगढ़, बंगाल और नेपाल के कुछ हिस्सों में कई सौ वर्षों से लोक मनोरंजन का सशक्त माध्यम रहा है। 'नाच बसंती नाच' रेडियम पिक्चर्स कानपुर के बैनर तले बनी पहली हिंदी फीचर फ़िल्म ने मनोरंजन के उस पहलू को छुआ है जिसके लिये मोदी सरकार ने रामचन्द्र मांझी जैसे कलाकार को 'पद्मश्री' देकर सम्मानित भी किया है।

'नाच बसंती नाच' के प्रमुख कलाकारों में अभिनेता दिलीप आर्या जिन्हें उनकी पहली फ़िल्म 'बीहड़ का बागी' में दर्शकों का प्यार मिल चुका है मुख्य भूमिका में हैं। रायबरेली फेम एक्टर गौरव कुमार, अभिनेता मनोज जोशी, स्टैंड अप कॉमेडियन के साथ ही स्थापित कलाकार जय विजय सचान, टेनी दादा, विजय मिश्र, शिव नरेश और अरविंद जादूगर आदि कलाकारों ने अलग अलग भूमिकाओं में काम किया है। फ़िल्म की नायिका रिया कपूर हैं। निर्माता रेडियम पिक्चर्स के पार्टनर के रूप में लतिका कुमार, संध्या ओमर व राधिका आर्या हैं तथा निर्देशन दिलीप आर्या का है। आशीष प्रकाश और दिनेश दीप के द्वारा लिखे गीतों की धुन बनाई है असित त्रिपाठी ने। छ्यांकन, संवाद और कहानी लेखन मुकेश कुमार का है।

पूरी फिल्म जनपद फतेहपुर, कानपुर के अलग अलग लोकेशन्स पर शूट हुयी है। निर्देशक/अभिनेता दिलीप आर्या बताते हैं कि उन्हें लौंडा नाच के अग्रेता रहे बिहार के भिखारी ठाकुर के जीवन को पढ़कर इस फ़िल्म की प्रेरणा मिली और उन्ही की मंडली के अंतिम सदस्य रहे पद्मश्री रामचन्द्र मांझी जैसे लोक कलाकार को एक श्रद्धांजलि है। लौंडा नाच पर आधारित 'नाच बसंती नाच' 14 जून से देश के सभी सिनेमाघरों में प्रदर्शित होगी। इस कार्यक्रम मे डॉ. रहीस सिंह (इतिहासविद, मीडिया सलाहकार मुख्यमंत्री यूपी.), दिनेश कुमार सहगल (पूर्व उप निदेशक फ़िल्म बन्धु, उत्तर प्रदेश), आंनद दीक्षित (सूचना सलाहकार,भारत सरकार), एस के सिंह न्यायधीश संजय सिंह, वरिष्ठ अधिवक्ता हरगोविंद सिंह परिहार, अजीत कुमार सिंहख अभिषेक प्रताप सिंह (समाजसेवी) के अलावा फिल्म से जुड़े कास्ट/कलाकार उपस्थित रहे।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति को शत प्रतिशत लागू कर रोल मॉडल बनें: योगी

● शिक्षा संस्थान विद्यार्थी केंद्रित और चिकित्सा संस्थान मरीज केंद्रित कार्य पद्धति को आगे बढ़ाएं

लखनऊ/गोरखपुर। मुख्यमंत्री एवं गोरक्षपीठाधीश्वर योगी आदित्यनाथ ने कहा है कि महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद की शैक्षिक व चिकित्सकीय समेत सभी संस्थाओं ने हमेशा अपने-अपने कार्यक्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करते हुए समाज और राष्ट्र के हित में अपनी उपयोगिता प्रमाणित की है। इस उत्कृष्टता को आगे बढ़ाते हुए, स्वस्थ प्रतिस्पर्धा करते हुए सभी संस्थाएं परिसर संस्कृति को समृद्ध करने और निरंतर नवाचार पर ध्यान देने की तरफ अग्रसर हों। इस शिक्षा परिषद की संस्थाओं ने सामाजिक सहभाग को भी अपने ध्येय का हिस्सा बनाया है और इसे भविष्य में इसका दायरा और विस्तृत करने की आवश्यकता है। मुख्यमंत्री ने कहा कि महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद की संस्थाओं ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति को अंगीकार करने में अग्रणी भूमिका निभाई है। अब जरूरत है कि हमारी संस्थाएं राष्ट्रीय शिक्षा नीति के प्रावधानों को शत प्रतिशत अपनाकर अन्य संस्थाओं के लिए रोल मॉडल बनें।

सीएम योगी रविवार को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय, आरोग्यधाम गोरखपुर में महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद की सभी संस्थाओं की वार्षिक समीक्षा और भावी कार्ययोजना को लेकर बुलाई गई बैठक की अध्यक्षता कर रहे थे। इस अवसर पर उन्होंने एक-एक कर सभी संस्थाओं के प्रमुखों से उनकी सालभर की गतिविधियों और उपलब्धियों की जानकारी ली और आगामी कार्ययोजना को लेकर उनके लक्ष्यों पर अपने सुझाव दिए। संस्थाओं की तरफ से वार्षिक समीक्षा और भावी कार्ययोजना का प्रस्तुतिकरण पावर प्वाइंट (पीपीटी) डिस्प्ले के जरिये किया गया।

बैठक में मुख्यमंत्री एवं गोरक्षपीठाधीश्वर योगी आदित्यनाथ ने महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद की संस्थाओं की गतिविधियों की सराहना की और भावी लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए अपनी शुभकामनाएं दीं। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद सिर्फ स्कूल, कॉलेज या अस्पताल खोलने वाली संस्था नहीं है। बल्कि इसका ध्येय शिक्षा, स्वास्थ्य व अन्य सेवाओं के माध्यम से समाज और राष्ट्र के सामाजिक विकास में योगदान देना है। इस परिषद की नींव ही इसी भावना के साथ राष्ट्रीयता की भावना का पोषण करने के लिए, राष्ट्र हित में

सुयोग्य नागरिक तैयार करने के लिए रखी गई। परिस्थितियां अनुकूल रही हों, या प्रतिकूल, परिषद इस समग्र लक्ष्य से कभी भी विचलित नहीं हुई।

मुख्यमंत्री ने कहा कि महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद की संस्थाओं में अनुशासित परिसर संस्कृति को सदैव प्राथमिकता पर रखा है। परिषद की संस्थाओं ने इस मामले में अनुकरणीय प्रयास किया है। परिसर में अनुशासन की भावना के साथ, स्वच्छता, हरियाली और सबका सबके प्रति सद्भाव रहे, इसका नियमित पर्यवेक्षण करना सभी संस्थाध्यक्षों की जिम्मेदारी है। उन्होंने शिक्षा संस्थाओं में पठन-पाठन और चिकित्सा संस्थाओं में उपलब्ध सुविधाओं की गुणवत्ता में किसी भी तरह की कोताही न बतरने के निर्देश भी दिए। साथ ही कहा कि समय के साथ और चलने और आगामी समय से तालमेल बैठाने के लिए शोध और नवाचार आज की मांग है। शिक्षा परिषद की संस्थाओं ने शोध और नवाचार को लेकर जो प्रयास किए हैं, वे सराहनीय हैं। शोध और नवाचार को लेकर सतत ध्यान देते रहने की आवश्यकता है। शिक्षा परिषद की संस्थाओं की सामाजिक सहभाग की भी समीक्षा की। यह जाना कि सालभर में किस संस्था ने समाज के बीच जाकर किस तरह अपने सामाजिक सरोकारों को निभाया। उन्होंने कहा कि हर संस्था की जिम्मेदारी बनती है कि वह समाज की उन्नति के लिए, लोगों को स्वावलंबी बनाने के लिए अपने दायरे को बढ़ाए। सीएम ने इस बात पर प्रसन्नता जताई कि परिषद की संस्थाओं ने लगातार अलग-अलग आयामों से जुड़कर समाज की चिकित्सा, शिक्षा, व्यावसायिक प्रशिक्षण और स्वावलंबन के लिए अनवरत कार्यों की श्रृंखला को बनाए रखा है। बैठक के दौरान मुख्यमंत्री ने महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद की संस्थाओं की कार्यपद्धति पर भी विमर्श किया। सभी संस्थाओं की कार्यपद्धति की प्रशंसा करते हुए उन्होंने कहा कि उत्कृष्टता में भी परिमार्जन की गुंजाइश हमेशा रहती है। सीएम ने कहा कि शिक्षा से जुड़ी संस्थाएं विद्यार्थी केंद्रित और चिकित्सा सेवा से जुड़ी संस्थाएं मरीज केंद्रित कार्य प्रणाली का निरंतर उन्नयन करती रहें। जो भी कार्य हों, उनमें सेवा की भावना सर्वोपरि होनी चाहिए। समीक्षा और भावी कार्ययोजना को लेकर आहुत इस बैठक में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद के शताब्दी वर्ष 2032 को भव्य और ऐतिहासिक बनाने के लिए अभी से तैयारी शुरू करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद की स्थापना 1932 में पूर्वी उत्तर प्रदेश में शैक्षिक पुनर्जागरण और राष्ट्रीय मूल्यों के संरक्षण को लेकर की गई थी। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने रविवार को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय परिसर का सघन निरीक्षण किया और अवस्थापना के साथ अन्य सुविधाओं को लेकर जरूरी दिशानिर्देश भी दिए।

1912 को प्रभावी व क्रियाशील बना रहा यूपीपीसीएल

● भीषण गर्मी में विद्युत समस्याओं के निदान के लिए टोल फ्री नंबर को और बेहतर बनाने की तैयारी

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

भीषण गर्मी में विद्युत समस्याओं के निदान के लिए उत्तर प्रदेश पावर कारपोरेशन (यूपीपीसीएल) टोल फ्री नंबर 1912 को और प्रभावी और क्रियाशील बनाने पर ध्यान दे रहा है। इसी क्रम में यूपीपीसीएल के अध्यक्ष डॉ. आशीष कुमार गोयल ने अधिकारियों को 1912 पर प्राप्त होने वाली सूचनाओं पर तत्काल कार्रवाई सुनिश्चित करने के निर्देश दिए हैं। उन्होंने ये भी निर्देश दिए हैं कि उपभोक्ता जब भी 1912 पर कॉल करें तो टोल फ्री नंबर हर हाल में उठना चाहिए और उनकी समस्याओं का निदान किया जाना चाहिए। उल्लेखनीय है कि अप्रैल 2017 में इस टोल फ्री नंबर की शुरुआत की गई थी। प्रदेश में योगी सरकार बनने के बाद उपभोक्ताओं की बिजली समस्याओं के निदान के लिए सरकार ने इसे वन स्टॉप सॉल्यूशन की तर्ज पर विकसित करने पर जोर दिया है। सरकार के प्रयासों के चलते इस टोल फ्री नंबर के माध्यम से बिजली उपभोक्ताओं की समस्याओं का समयबद्ध निस्तारण सुनिश्चित किया जा रहा है।

उपभोक्ताओं की समस्याओं को हल करने में तत्परता से कार्य करें अधिकारी

उत्तर प्रदेश पावर कारपोरेशन अध्यक्ष डॉ. आशीष कुमार गोयल ने आधिकारियों को निर्देशित किया है कि 1912 टोल फ्री नंबर को और प्रभावी एवं क्रियाशील बनाया जाए। उन्होंने कहा है कि यह सुनिश्चित किया जाए कि टोल फ्री नंबर शीघ्र उठे और उपभोक्ता की समस्या हल होने तक उसके संपर्क में रहे। अध्यक्ष ने कहा है कि इस भयंकर गर्मी में जब पारा 50 के आसपास पहुंच गया है तब प्रदेश में टोल फ्री नंबर 1912 का महत्व अत्यधिक बढ़ गया है। उपभोक्ता अपनी समस्या इस टोल फ्री नंबर पर करते हैं, इसलिये इसमें कार्य करने वाले कार्मिक उपभोक्ताओं की समस्याओं को हल कराने में पूरी तत्परता से कार्य करें। उन्होंने अधिकारियों को भी निर्देशित किया है कि वे 1912 से संपर्क में रहें और प्राप्त सूचनाओं पर तुरंत कार्रवाई सुनिश्चित कराएं।

एक अप्रैल 2017 से टोल फ्री नंबर 1912 पर पूरे प्रदेश से बिल, मीटर, कनेक्शन, विद्युत आपूर्ति, विद्युत चोरी एवं सुझाव आदि संबंधी 1,89,12,690 शिकायतें प्राप्त हुई जिनमें 99.72 प्रतिशत (1,88,59,860) शिकायतों का समयबद्ध निस्तारण किया गया। दक्षिणांचल डिस्कॉम में 32,10,816, मध्यांचल में 83,79,434, पश्चिमांचल में 45,36,535, पूर्वांचल में 27,25,922 तथा केस्को से 59,983 शिकायतें प्राप्त हुई। 1912 पर बिल संबंधी 10,51,466 शिकायतें प्राप्त हुई जिसमें 99.75 शत प्रतिशत शिकायतों का निस्तारण किया गया। इसी तरह, मीटर से संबंधित 20,38,117 शिकायतें प्राप्त हुई जिसमें 20,17,677 का निस्तारण किया गया। पूरे प्रदेश में स्मार्ट मीटर संबंधी 2,34,834 शिकायतें प्राप्त हुई जिसमें 2,34,232 का समयबद्ध निस्तारण किया गया। कनेक्शन संबंधी 4,07,523 शिकायतें प्राप्त हुई जिसमें 4,06,475 शिकायतों का निस्तारण किया गया। इसके अलावा विद्युत आपूर्ति संबंधी 1,31,00,458 शिकायतें प्राप्त हुई जिसमें 1,30,94,391 शिकायतों का निस्तारण किया गया जिसमें ट्रांसफ़ार्मर क्षतिग्रस्त संबंधी 2,03,698 शिकायते प्राप्त हुई जिसमें 2,03,481 शिकायतों का निस्तारण किया गया। चोरी संबंधी 1,41,785 सूचनाएं प्राप्त हुई जिसमें 1,39,526 शिकायतों का निस्तारण किया गया।

विहिप गोरक्षा विभाग के क्षेत्रीय कार्यकर्ता प्रशिक्षण वर्ग संपन्न

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

विश्व हिंदू परिषद गोरक्षा विभाग का क्षेत्रीय कार्यकर्ता प्रशिक्षण वर्ग दिनांक 30 मई से 1 जून तक पंडित दीनदयाल विद्या मंदिर इंटर कॉलेज लखीमपुर में संपन्न हुवा है, जिसमे कानपुर प्रांत और अवध प्रान्त का संयुक्त कार्यकर्त्ता प्रशिक्षण वर्ग हुआ ,यह जानकारी विश्व हिंदू परिषद अवध प्रांत के प्रांत गौ रक्षा प्रमुख राजेश सिंह एडवोकेट ने दिया।

राजेश सिंह ने बताया कि वर्ग का प्रथम सत्र का उद्घाटन विश्व हिंदू परिषद बजरंग दल के क्षेत्र संगठन मंत्री पूर्णेंदु सिंह के द्वारा किया गया । जिसमे उन्होंने गोरक्षा विभाग का इतिहास और गाय का महत्व के बारे में अपना विचार रखा और समापन सत्र शैलेंद्र सिंह राष्ट्रीय गो विज्ञान परीक्षा प्रमुख व पालक लखनऊ क्षेत्र के द्वारा किया गया। उक्त सत्र में गोबिज्ञान परीक्षा के संबंध में और गो सम्पदा पत्रिका के प्रचार प्रसार के कार्यक्रमों की जानकारी दी गई।

राजेश सिंह ने बताया कि उक्त क्षेत्रीय कार्यकर्ता प्रशिक्षण वर्ग कार्यक्रम में पूरे समय विश्व हिंदू

परिषद के केंद्रीय मंत्री व अखिल भारतीय गौ रक्षा प्रमुख दिनेश उपाध्याय उपस्थित रहें, उक्त कार्यक्रम दिनेश उपाध्याय जो अपने संरक्षक है, के ही दिशा निर्देश में ही संपन्न हुआ। उपाध्याय ने भारतीय संस्कृति के रक्षण के संबंध में अपने विचार रखे। वर्ग के अगले सत्र में राष्ट्रीय उपाध्यक्ष गोरक्षा विभाग अवधेश गुप्त ने आर्थिक सुचिता पर अपना विचार रखा, केंद्रीय सदस्य वासुदेव पटेल ने भी गौ कृपा अमृतम के निर्माण की जानकारी दिया।

सह क्षेत्रगोरक्षा प्रमुख पूरन सिंह ने संगठन की रूप रेखा तथा संगठन में अपेक्षित लोगो लेखा जोखा हिसाब किया, चंद्रभान ने दायत्व बोध के बारे में बताया, क्षेत्र महिला गो भक्त प्रमुख संगीता सचान ने संगठन में महिलाओं की भूमिका के बारे में बताया और अंत में अवध प्रांत के प्रांत गोरक्षा प्रमुख ने भी अष्टम सत्र संगठन का वार्षिक कैलेंडर की घोषणा कियाऔर वार्षिक कार्य योजना के उपर अपना विचार व्यक्त किया। राजेश सिंह एडवोकेट ने बताया कि वर्ग समाप्त होने के बाद दिनेश चंद्र उपाध्याय केंद्रीय मंत्री और राष्ट्रीय गोरक्षा प्रमुख के पूर्व निर्णय के अनुसार केन्द्रीय टोली की बैठक की गई।

राजेश सिंह ने बताया कि वर्ग में विशिष्ट अतिथि के रूप में भारतीय गौ रक्षण एवं संवर्धन परिषद के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष अवधेश गुप्ता , केंद्रीय संरक्षक वासुदेव पटेल,क्षेत्र सह गोरक्षा प्रमुख पूरन सिंह, क्षेत्र महिला गोरक्षा प्रमुख संगीता सचान, चंद्रभान सिंह बृजेश पांडे, जितेंद्र पांडे, प्रांत मंत्री अमरेश बहादुर सिंह, सह मंत्री संत कुमार मिश्र, केशव शुक्ल, प्रांत कोषाध्यक्ष बच्चा बाजपेई, प्रांत उपाध्यक्ष बंदना गुप्ता, माया देवी,आदि प्रमुख रूप के साथ दोनो प्रांतों के सैकड़ों गौभक्त उपस्थित रहे। कार्यक्रम के अंत में धन्यवाद ज्ञापन गो रक्षा विभाग के सह क्षेत्र गोरक्षा प्रमुख पूरन सिंह ने किया।

पर्यावरण संरक्षण व सततशील विकास में सामुदायिक पहल की भूमिका अहम

● सीड के पर्यावरण अभियान को मिल रहा राज्य में व्यापक समर्थन

लखनऊ। सेंटर फॉर एनवायरनमेंट एंड एनर्जी डेवलपमेंट (सीड) के द्वारा चलाये जा रहे जन-जागरूकता अभियान के तीसरे दिन गो फॉर गोमती के साथ गोमती नदी के स्वच्छता एवं संरक्षण से जुड़ा कार्यक्रम आयोजित किया गया। सीड द्वारा लखनऊ के अलावा राज्य के कई इलाकों में गत 31 मई से शुरू हुआ यह अभियान 5 जून को विश्व पर्यावरण दिवस के आयोजन तक जारी रहेगा। इस अभियान का मुख्य उद्देश्य पर्यावरण दिवस के थीम के अनुरूप भूमि संरक्षण को बढ़ावा देने, सुखाड़ की स्थिति से निबटने और भू-क्षरण को रोकने के मुद्दे पर जन जागरूकता फैलाना एवं सामुदायिक पहल को प्रोत्साहित करना है। साथ ही यह अभियान मिशन लाइफ के सततशील जीवनशैली के उपायों के अनुरूप संचालित किया जा रहा है ताकि पर्यावरण के प्रति जिम्मेदारी की भावना को प्रोत्साहित किया जा सके।

उप्र जलवायु परिवर्तन के लिहाज से सबसे संवेदनशील क्षेत्रों में से एक है। इस लिहाज से इस वर्ष के विश्व पर्यावरण दिवस की थीम राज्य के लिए विशेष महत्व रखती है। अभियान की शुरुआत आम नागरिकों के द्वारा भूमि एवं जल संरक्षण के लिए संकल्प एवं वृक्षारोपण, अनाथालय में बच्चों के साथ जागरूकता प्रसार, हैंड प्रिंट, क्विज, पेंटिंग आदि कई रचनात्मक गतिविधियों में सक्रिय सहभागिता के साथ हुई है। अभियान के संदर्भ एवं उद्देश्य के बारे में रमापति कुमार, सीईओ, सेंटर फॉर एनवायरनमेंट एंड एनर्जी डेवलपमेंट (सीड) ने बताया कि अभियान के थीम हमारी भूमि, हमारा भविष्य और हम हैं। जनरेशन रेस्टोरेशन के अनुरूप सभी नागरिकों से इसे अपने जीवन में आत्मसात करना चाहिए। उन्होंने पर्यावरणीय चुनौतियों से निबटने के लिए वैज्ञानिक अध्ययनों के अनुरूप सहयोगात्मक और स्थानीय समाधान-केन्द्रित दृष्टिकोण की महत्ता पर बल दिया।

बड़ी संख्या में कई नेता कांग्रेस में शामिल

लखनऊ। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की नीतियों एवं उसकी समावेशी विचारधारा में आस्था व्यक्त करते हुए एवं कांग्रेस पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे, पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी, राष्ट्रीय महासचिव श्रीमती प्रियंका गांधी, राष्ट्रीय महासचिव प्रभारी उत्तर प्रदेश अविनाश पाण्डेय, द्वारा देश एवं संविधान की रक्षा हेतु किये जा रहे संघर्षों से प्रेरित होकर रविवार कों प्रदेश कांग्रेस मुख्यालय पर हंसराज यादव (पूर्व प्रधान प्रत्याशी), डा. हरीशचन्द्र यादव, रामकेश यादव, रामलखन यादव, तारा यादव, किशन कुमार, सोनू कुमार, ओंमकार कुशवाहा, वेद प्रकाश, राम लखन, विजय कुमार, अशोक कुमार आदि ने उत्तर प्रदेश कांग्रेस उपाध्यक्ष (प्रभारी प्रशासन) दिनेश कुमार सिंह के समक्ष कांग्रेस पार्टी की प्राथमिक सदस्यता ग्रहण की। इस अवसर पर प्रदेश उपाध्यक्ष दिनेश कुमार सिंह जी ने आये हुए सभी सदस्यों का स्वागत करते हुए उनके गले में कांग्रेस तिरंगा पट्टिका पहनाकर पार्टी का सदस्यता कार्ड देकर उन्हें विधिवत रूप से कांग्रेस पार्टी की सदस्यता ग्रहण कराई।

उच्च रक्तचाप स्वास्थ्य की प्रमुख चुनौती

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

लखनऊ विश्विद्यालय के फैकल्टी ऑफ़ योग एंड अल्टरनेटिव मेडिसिन के योग विभाग में रविवार को उच्च रक्तचाप का योगिक प्रबंधन पर सेमिनार का आयोजन किया गया। जिसकी मुख्य वक्ता डॉ.शिखा गुप्ता एवं प्रियांजलि पांडे थी। कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्वलित कर किया गया। फैकल्टी ऑफ़ योग एंड अल्टरनेटिव मेडिसिन के कोऑर्डिनेटर डॉ. अमरजीत यादव ने बताया कि उच्च रक्तचाप स्वास्थ्य की प्रमुख चुनौती है। उच्च रक्तचाप को ख़ामोश हत्यारा कहा जाता है।

डॉ. अमरजीत यादव ने कहा कि विश्व स्वास्थ्य संगठन की रिपोर्ट में यह अनुमान लगाया गया है कि विश्व में 30 से 79 वर्ष की आयु के लगभग एक तिहाई लोगो को उच्च रक्तचाप की समस्या है। भारत देश में लगभग 18 करोड़ लोग उच्च रक्तचाप के साथ जीवन जी रहे है। अगले 10

वर्षों में हृदय रोग से होने वाली पाँच लाख मौतों को रोका जा सकता है। उन्होंने कहा कि पश्चिमोत्तानासन, सर्वांगासन, भुजंगासन, बालासन के साथ ही अनुलोम-विलोम तथा भ्रामरी प्राणायाम के अभ्यास से लाभ होता है। इसके अतिरिक्त व्यान मुद्रा के अभ्यास से भी लाभ प्राप्त किया जा सकता है। डॉ. शिखा गुप्ता ने कहा की उच्च रक्तचाप के प्रबंधन के लिए नेचुरोपैथी चिकित्सा अग्रणी भूमिका निभाती है।

प्राकृतिक चिकित्सा इस विश्वास पर आधारित है कि मन का शरीर पर गहरा प्रभाव पड़ता है और यह बीमारी के साथ-साथ बीमारी के स्रोत को भी संबोधित करता है। प्राकृतिक चिकित्सा दर्शाती है कि दवा लेना ही एकमात्र विकल्प नहीं है और इसे अलग से काम नहीं करना चाहिए। इसके प्रबंधन लिए माथे की पट्टी, हॉट फुट बाथ, संतुलित आहार, उचित नींद लेना चाहिए। प्रियांजलि पांडे ने अपने संबोधन में कहा कि हाई ब्लड प्रेशर या उच्च रक्तचाप एक गंभीर चिकित्सा स्थिति है। यह दिल को गंभीर नुकसान पहुंचा सकता है। दिल की विफलता (हार्ट फेलियर), सीने में दर्द हो सकता है। यह मस्तिष्क को रक्त और ऑक्सीजन की आपूर्ति करने वाली धमनियों को भी फट या अवरुद्ध कर सकता है, जिससे स्ट्रोक हो सकता है। यह किडनी को भी नुकसान पहुंचा सकता है और किडनी फेलियर का कारण बन सकता है। इस दौरान छात्र-छात्राये, शिक्षक, कर्मचारी तथा आमजन उपस्थित रहे।

जनसुनवाई शिविर में सुनीं गयीं ग्रामीणों की समस्याएँ

● मेधावियों को किया गया सम्मानित

लखनऊ। सरोजनीनगर विधायक डॉ. राजेश्वर सिंह द्वारा संचालित आपका विधायक - आपके द्वार जनसुनवाई शिविर, जनसमस्याओं के समाधान का उत्कृष्ट प्लेटफॉर्म है। विधायक का मानना है कि जनता के लिए सुलभता, संवाद एवं समस्याओं का समाधान जनप्रतिनिधि के लिए सर्वोपरि है। रविवार को नीवां में 74वें आपका विधायक आपके द्वार जनसुनवाई शिविर का आयोजन कर ग्रामीणों की समस्याएं सुनीं गईं। नीवां में आयोजित जनसुनवाई शिविर के दौरान ग्रामीणों ने आवास संबंधित 106, राशन संबंधित 36, सड़क नाली सम्बंधित 5, सोलर लाइट से जुड़ी 4 समस्याओं सहित 160 से अधिक सुझाव व समस्याओं से विधायक की टीम को अवगत कराया। विधायक की टीम ने ग्रामीणों की समस्याओं को सुनकर उनके यथोचित समाधान

हेतु आश्वस्त किया, साथ ही उपस्थित जनता की विधायक द्वारा संचालित योजनाओं से अवगत कराया।

साथ ही गांव की शान पहल के अंतर्गत वर्ष 2024 की इंटरमीडिएट परीक्षा में सर्वाधिक अंक पाने वाले नीवां गांव के 4 मेधावियों तान्या मिश्रा, अंचल पाल, अभिनव मिश्रा एवं आनंद प्रकाश को साइकिल, घड़ी एवं प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया। सरोजनीनगर विधायक डॉ. राजेश्वर सिंह द्वारा युवाओं को खेल संसाधन उपलब्ध कराने के लिए स्पोर्ट्स क्लब गठित किये जा रहे हैं। युवा खिलाडियों को खेल संसाधन उपलब्ध कराने के सतत क्रम में नीवां में 128 वें बॉयज यूथ क्लब तथा 14 वें गर्ल्स यूथ क्लब की स्थापना कर स्पोर्ट्स किट प्रदान की गई।

शिविर के दौरान ग्राम प्रधान नीवां ओमकार चौरसिया के आवास पर रामकुमार शर्मा, संजय मिश्रा, रामू मिश्रा, शकुंतला रावत एवं सुनील कुमार चौरसिया को विधायक जी की ओर से सम्मानित भी किया गया। बता दें की सरोजनी नगर विधायक डॉ. राजेश्वर सिंह द्वारा प्रत्येक रविवार को आपका विधायक आपके द्वार जनसुनवाई शिविर आयोजित किया जाता है। 75वां जनसुनवाई शिविर आगामी 9 जून को ग्राम पंचायत गहरवारा में आयोजित किया जायेगा।

भीषण गर्मी में ड्यूटी पर तैनात पुलिसकर्मियों का रखा जाए विशेष ख्याल: डीजीपी

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

डीजीपी प्रशांत कुमार ने इस भीषण गर्मी में ड्यूटीरत पुलिसकर्मियों का विशेष ख्याल रखने को कहा है। इस संबंध में उन्होंने समस्त जोनल अपर पुलिस महानिदेशक, पुलिस आयुक्त, परिक्षेत्रीय पुलिस महानिरीक्षक, पुलिस उपमहानिरीक्षक, वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक, पुलिस अधीक्षक प्रभारी जनपद को बढ़ती गर्मी (हीटवेव) तथा आग की घटनाओं के दृष्टिगत पुलिस कर्मियों को सुरक्षित रखने, समुचित जागरूक करने तथा अग्नि सुरक्षा हेतु पुलिस प्रबन्ध के सम्बन्ध में महत्वपूर्ण बिन्दुओं पर दिशा निर्देश जारी किए हैं।

डीजीपी ने निर्देश दिए हैं कि कमिश्नरेट, जनपदों के समस्त थानों व चौकियों पर शुद्ध व शीतल पेयजल की व्यवस्था की जाए। पुलिस कर्मियों को ड्यूटी पर जाने से पूर्व तथा ड्यूटी के दौरान नियमित रूप से पेयजल ग्रहण करने, गस्त/ पेट्रोलिंग अथवा अन्य ड्यूटी पर जाते समय पेयजल, नीबू, इलेक्ट्रोल, ग्लोकोज, ओआरएस घोल तथा उपलब्धतानुसार नारियल पानी इत्यादि ऊर्जावर्धक सामग्री अपने साथ रखने तथा अधिक प्रोटीन / वसायुक्त भोजन के सेवन से बचाव हेतु जागरूक किया जाए।

पुलिस कर्मियों को सत्तू, छाछ, दही आदि ठण्डे खाद्य पदार्थों का सेवन कर ड्यूटी करने हेतु प्रेरित किया जाए। यातायात कर्मी जो दिन के समय चौराहे पर ड्यूटी करते हैं, उनके बूथ व शेड आदि ठीक करा लिया जाये तथा उक्त यातायात बूथ शेड में भी पेयजल की समुचित व्यवस्था सुनिश्चित की जाए।

समस्त कमिश्नरेट/ जनपदों में थाना प्रभारी, क्षेत्राधिकारी तथा अन्य वरिष्ठ अधिकारियों द्वारा अपने भ्रमण के दौरान ड्यूटी में लगे पुलिस कर्मियों से उनकी कुशलता ज्ञात करते हुए पेयजल की व्यवस्था सुनिश्चित की जाए। पुलिस कर्मियों की ड्यूटी शिफ्टवार, रोटेशनवार नियमित रूप से लगायी जाय, जिससे किसी भी पुलिस कर्मी की ड्यूटी दिन में, धूप में लगातार न लगे। अस्वस्थ व शारीरिक रूप से बीमार कर्मियों की ड्यूटी धूप के समय न लगायी जाए। थाना, पुलिस लाइन तथा बैरिकों में प्रतिदिन गणना के समय

पुलिस कर्मियों के स्वास्थ्य, कुशलता की जानकारी थाना प्रभारी, प्रतिसार निरीक्षक एवं क्षेत्राधिकारी द्वारा की जाये। किसी भी कर्मी को हीटवेव से सम्बन्धित लक्षण परिलक्षित होते ही उसे समुचित चिकित्सा सुविधा उपलब्ध करायी जाए।

जनपदीय प्रशासन तथा चिकित्सा विभाग के साथ समन्वय स्थापित करते हुए हीटवेव से पीड़ित पुलिस कर्मियों को त्वरित चिकित्सा हेतु समुचित सुविधा उपलब्ध करायी जाए। अग्निशमन के वाहन व कर्मियों का स्ट्रेटजिक व्यवस्थापन किया जाये। समस्त अग्निशमन स्टेशनों को उच्च एलर्ट पर रखा जाए। आग की छोटी से छोटी सूचना पर तत्काल कार्यवाही सुनिश्चित की जाए।

अग्निजनित दुर्घटनाओं से सम्बन्धित संवदेनशील स्थानों / हॉटस्पाट को चिन्हित कर लिया जाये। शॉपिंग माल्स, गेमिंग जोन, मल्टीस्टोरी कॉम्पलेक्स, व्यवसायिक प्रतिष्ठानों, विद्यालयों, रेलवे / बस स्टेशनों, होटल / रेस्टोरेंट आदि का समुचित अग्निशमन ऑडिट अवश्य कर लिया जाये। यह भी सुनिश्चित किया जाये कि ऐसे समस्त स्थल पर फायर सर्विस विभाग द्वारा जॉच / ऑडिट कर लिया गया है। आग की घटना के पश्चात जनपदीय पुलिस / यातायात कर्मी तथा फायर सर्विस विभाग द्वारा और अधिक समन्वय स्थापित कर तत्परता पूर्वक कार्यवाही सुनिश्चित की जाये। यह भी सुनिश्चित कर लिया जाये कि अग्निशमन वाहनों के आवागमन के दौरान कहीं पर भी ट्रैफिक जाम की समस्या उत्पन्न न होने पाए। डीजेपी ने इन सभी निर्देशों का अनुपालन कड़ाई से सुनिश्चित करने को कहा है।

दोस्त से बात कर रहे युवक का मोबाइल फोन धमाके के साथ फटा

मोहनलालगंज। सिसेण्डी में दोस्त से बात कर रहे युवक का मोबाइल फोन अचानक धुआं देने लगा। डरे युवक ने मोबाइल को खुद से दूर फेंका तो धमाके के साथ बैट्री और मोबाइल फोन क्षतिग्रस्त हो गया। युवक ने सोशल मीडिया के जरिए क्षतिग्रस्त सेट का वीडियो वायरल कर लोगों से मोबाइल फोन का उपयोग बेहद सजगता से करने की अपील की है। मोहनलालगंज के सिसेण्डी निवासी सत्यम दीक्षित ने बताया रविवार को वह अपने दोस्त से फोन पर बात कर रहे थे। तभी उनका मोबाइल फोन गर्म होकर धुआं देने लगा। घबराकर सत्यम ने फोन फेंक दिया। नीचे गिरते ही धमाके के साथ मोबाइल फोन क्षतिग्रस्त हो गया। गनीमत रही कि इस दौरान सत्यम की सजगता से बड़ी अनहोनी टल गई। घटना की खबर फैलते ही उसके घर लोगों की भीड़ जुट गई। गांव के लोग मोबाइल फोन में धमाके की घटना को लेकर स्तब्ध नजर आए।

बच्चे हैं देश का भविष्यः न्यायमूर्ति नीरज तिवारी

छात्रए छात्राओं में बढ़ता है आत्मविश्वासः डा. शिखा दरबारी

पायनियर समाचार सेवा। प्रयागराज

आर्य कन्या ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूशंस में चल रही 15 दिवसीय ग्रीष्मकालीन कार्यशाला का आयोजन हुआ। मुख्य अतिथि न्यायमूर्ति नीरज तिवारी एवं आर्य कन्या ग्रुप के चेयरमैन पंकज जायसवाल ने कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्जवलन और गायत्री मंत्र के साथ किया। यह पंद्रह दिवसीय कार्यशाला जो आर्य कन्या ग्रुप के अध्यक्ष पंकज जायसवाल की प्रेरणा से पिछले कई वर्षों से लगातार हो रही है। जिसमें बच्चों को नृत्य गायन जूडोकराटे कला सिलाई कढ़ाई ध्यान योग खेलकूद आदि का प्रशिक्षण दिया जाता रहा है। उन्होंने कहा कि सभी शिक्षिकाओं और छात्र.छात्राओं की मेहनत सराहनीय है। उनके अथक प्रयास से ही यह कार्यशाला पूर्ण रूप से सफल रही।कार्यशाला से बच्चों ने छिपी प्रतिभा बाहर निकलती और उन्हें किताबी ज्ञान के अतिरिक्त और भी बहुत कुछ सीखने को मिलता है। विशिष्ट अतिथि मुख्य आयकर आयुक्त डॉ शिखा दरबारी ने कहा कि कार्यशाला में आयोजित विभिन्न गतिविधियों से जीवन में आगे बढ़ने का जुनून आता है तथा सभी छात्र छात्राओं में आत्मविश्वास बढ़ता है। बालिकाऐं किसी से कम नहीं हैं। आर्य कन्या ग्रुप के चेयरमैन पंकज जायसवाल ने सभी अतिथियों का स्वागत किया। आख्या प्राचार्या प्रो अर्चना पाठक ने धन्यवाद ज्ञापन प्रधानाचार्या अर्चना जायसवाल तथा संचालन डॉ रंजना त्रिपाठी ने किया। संयोजन सलाहकार डॉ ममता गुप्ता ने किया। कार्यक्रम में लोकगीत दादरा चैती तथा देशगान नृत्य जूडो कराटे योग की सफल प्रस्तुतियां हुई। कार्यक्रम में सहयोग करने वाले विभिन्न शिक्षक शिक्षिकाओं को प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया।कार्यक्रम में डॉ आर के उपाध्याय डॉ सुधा रानी उपाध्याय डॉ इभा डॉ चित्रा चौरसिया शिखा जायसवाल आशा श्रीवास्तव नीना प्रजापति रितु अरोरा वंदिता अस्थाना सलोनी अग्रवाल अनुपमा श्रीवास्तव विभा कुसुम जूही मोऊ बसु आकांक्षा एकता सुषमा मोनाली पूनम शिल्पी तथा बड़ी संख्या में अभिभावक भी उपस्थित रहे। राष्ट्रगान के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

प्रेक्षक ने जिला निर्वाचन अधिकारी के साथ लिया मतगणना स्थल का जायजा

अंबेडकर नगर। मतगणना प्रेक्षक श्रीमती नीलिमा धायगुडे तथा जिला निर्वाचन अधिकारी अविनाश सिंह द्वारा मतगणना 04 जून को सकुशल संपन्न कराने के दृष्टिगत मतगणना स्थल राजकीय इंजीनियरिंग कॉलेज अकबरपुर का निरीक्षण किया गया।निरीक्षण के दौरान पुलिस अधीक्षक डॉ कौस्तुभएमुख्य विकास अधिकारी अनुराज जैनएउप जिला निर्वाचन अधिकारी डॉ सदानंद गुप्ताए अपर पुलिस अधीक्षक विशाल पांडेएविधानसभा आलापुरए जलालपुर के सहायक रिटर्निंग आफ्सिर मौके पर उपस्थित रहे। अवगत कराना है कि जिला निर्वाचन अधिकारी द्वारा पूर्व में भी प्रत्येक विधानसभा के मतगणना स्थल का निरीक्षण किया गया तथा आवश्यक सुविधाओं के लिए संबंधित विभाग के अधिकारियों को निर्देशित किया गया। भीषण गर्मी को देखते हुए जिला निर्वाचन अधिकारी द्वारा मुख्य चिकित्सा अधिकारी को निर्देशित किया गया कि प्रत्येक फ्लोर पर एक अस्थाई अस्पताल स्थापित किया जाए साथ ही साथ हर विधानसभा के मतगणना स्थल पर चिकित्सक नियुक्त किया जाए। निरीक्षण के दौरान जिला निर्वाचन अधिकारी द्वारा अधीक्षण अभियंता विद्युत को निर्देशित किया गया कि मतगणना के दौरान निर्वाध विद्युत आपूर्ति सुनिश्चित किया जाएए साथ ही साथ प्रत्येक विधानसभा वार अधिकारियों की ड्यूटी लगाकर विद्युत संबंधित समस्त व्यवस्थाएं को सुनिश्चित किया जाए।जिससे सुचारू रूप से मतगणना संपन्न कराया जा सके। जिला निर्वाचन अधिकारी द्वारा पीने के पानी एछाया सहित अन्य आवश्यक आवश्यकताओं के लिए संबंधित अधिकारियों को निर्देशित किया गया। जिला निर्वाचन अधिकारी द्वारा मीडिया गैलरी का भी निरीक्षण किया गया और वहां की व्यवस्थाओं के लिए आवश्यक दिशा निर्देश दिया गया।गर्मी को देखते हुए सभी स्थानों पर कूलर एएग्जॉट फैन लगाने हेतु निर्देशित किया गया। निरीक्षण के दौरान जिला निर्वाचन अधिकारी तथा पुलिस अधीक्षक द्वारा निर्देशित किया गया कि भीड़भाड़ वाले स्थान पर मिस्ट फैन; हवा के साथ पानी फेकनाद्ध छत एवं दीवारों पर पानी डालने की व्यवस्था की जाए तथा गर्मी से बचाव हेतु ठंडा पानी और ओआरएस घोल की व्यवस्था की जाए।

जिम्मेदारी निभाते हुए सभी के प्रति साबित की मिसाल

प्रयागराज। धीरज धूपर जो इस समय जी टीवी के शो रब से है दुआ में सुभान का किरदार निभा रहे हैं दो साल पहले पिता बने थे और इस समय वो अपने शूटिंग शेड्यूल के साथ.साथ एक पिता होने की जिम्मेदारी निभाते हुए सभी पिताओं के लिए एक मिसाल साबित हो रहे हैं। हाल ही में धूपर के बेटे ज़ायन उनके सेट पर पहुंचे और इसके बाद जो दिल छू लेने वाला पल आया उसे सुनकर आपका दिल भी भर आएगा।ज्यादा जानने के लिए देखिए रब से है दुआ रोज रात साढ़े दस बजे सिर्फ जी टीवी पर आएगा। असल में शूटिंग के दौरान नन्हें ज़ायन अपने पिता का हाथ ही नहीं छोड़ रहे थे और बस उनके साथ खेलना चाहते थे। ऐसे में एक पिता और एक एक्टर होने का फर्ज़ निभाते हुए धीरज ने अपनी व्यस्तता के बावजूद अपने बेटे के साथ वक्त बिताने का तरीका ढूंढ निकाला। उनकी इस खास पहल ने सबका दिल जीत लिया। शो के वर्तमान ट्रैक में फरहान इबादत येशा रुघानी को किडनैप कर लेता है। लेकिन सुभान को इसकी भनक लग जाती है और वो मन्नत सीरत कपूर से सवाल करता है और फिर इबादत को बचाने निकल पड़ता है। जहां धीरज ऐसे इंटेंस सीक्वेंस की शूटिंग करने में व्यस्त हैं। वहीं ऑफसक्रीन उनके बेटे ज़ायन ने उनका मूड बना दिया।

हीट वेव को लेकर अधिकारी चिंतित

शाहजहांपुर। हीट वेव के कारण सम्भावित अग्निकाण्ड की दुर्घटनाओं की रोकथाम के लिए अटल सभागारए अंटा चौराहा शाहजहाँपुर में अपर जिलाधिकारी वि राध्प्रभारी अधिकारी आपदा शाहजहांपुर श्री सुरेश कुमार जी की अध्यक्षता में एक कार्यशाला का आयोजन किया गयाए जिसमे जनपद के विभिन्न संस्थान यथा जनपद में स्थापित संवेदनशील फैक्ट्री के प्रतिनिधिए होटल मालिकए पिक्चर हॉल के प्रतिनिधिए डॉक्टरए विद्युत सुरक्षा के अधिकारीए अग्निशमन सुरक्षा के अधिकारीएअधिशासी अभियंता विद्युतए जनपद के समस्त अधिशासी की कार्यशाला में अपर जिलाधिकारी एने आपदा प्रबंधन के गठन के बारे में बताया और इसको बनाने की आवश्यकता क्यों पड़ी इसके बारे में विस्तृत चर्चा की गए।

राजकीय पालिटेक्निक में 4 जून को 8 बजे से शुरू होगी मतगणना

जिला निर्वाचन अधिकारी ने मतगणना स्थल पर सभी आवश्यक व्यवस्थाओं को सुनिश्चित कराने का दिया निर्देश

सोनभद्र। जिला निर्वाचन अधिकारी चन्द्र विजय सिंह ने अवगत कराया है कि 4 जून को होने वाली मतगणना को सकुशल संपन्न कराने के लिए समस्त प्रभारी, नोडल अधिकारियों को महत्वपूर्ण जिम्मेदारी दी गयी है, जनपद के निर्वाचन क्षेत्रों में सम्पन्न मतदान के उपरान्त मतगणना निर्वाचन आयोग के निर्देशानुसार 04 जून मंगलवार को राजकीय पालिटेक्निक कालेज लोढ़ी में बनाए गए मतगणना केंद्र में विधानसभावार अलग अलग कक्षों में सुबह आठ बजे से शुरू होगी। जिसको लेकर प्रत्येक विधानसभा निर्वाचन क्षेत्रवार अलग अलग मतगणना हालों में ईवीएम की मतगणना के लिए 14-14 टेबल निर्धारित की गई हैं, जिन पर मतगणना करायी जाएगी। वहीं प्रत्येक विधानसभा के ईवीएम के मतों की गिनती के लिए 14-14 टेबल लगाए जाएंगे प्रत्येक टेबल पर मतगणना कार्मिकों की ड्यूटी भी लगाई गई है। लोकसभा सामान्य निर्वाचन 2024 की मतगणना हेतु 76 काउंटिंग सुपर वाईजर 76 काउंटिंग माइक्रो आब्जर्वर 76 मतगणना सहायक और 76 सहायक की तैनाती की गयी है इसी प्रकार से विधान सभा दुद्धी उप निर्वाचन 2024 में काउंटिंग सुपर वाईजर 19 काउंटिंग माइक्रो आब्जर्वर 19 मतगणना सहायक 19 और 19 काउंटिंग सहायक की तैनाती की गयी है, पोस्टल बैलेट एवं ई0टी0पी0बी0एस0 की मतगणना हेतु प्रत्येक विधानसभाओं के लिए एक एक मतगणना सहायक एवं एक एक मतगणना सुपरवाईजर की तैनाती की गयी है। जिला निर्वाचन अधिकारी ने मतगणना कार्य में लगाए गए सभी प्रभारी नोडल अधिकारियों को निर्देशित करते हुए कहा है कि अपने अपने दायित्व के हिसाब से अपनी समस्त तैयारी निर्वाचन आयोग की गाइडलाइन के अनुसार पूरी कर लें, जिससे मतगणना कार्य में किसी प्रकार की कोई असुविधा न हो। ईटीपीबीएस, पोस्टल बैलेट की मतगणना के लिए विधानसभावार टीमें लगाई गई हैं, जिला निर्वाचन अधिकारी द्वारा सम्बन्धित अधिकारियों को निर्देशित किया गया कि मतगणना के दिन मतगणना स्थल पर बैरिकेटिंग, कंप्यूटर प्रिंटर इंटरनेट की व्यवस्था विद्युत सुरक्षा की व्यवस्था अग्निशमन यंत्र की व्यवस्था, खान पान की व्यवस्था, साफ सफाई, पीने के लिए पानी, प्रकाश, मेडिसिन, ओआरएस, एंबुलेंस और अन्य सभी आवश्यक व्यवस्थाएं दुरुस्त किया जाए। स्वास्थ्य विभाग द्वारा 5 6 डाक्टरों की तैनाती में दो से तीन एम्बुलेंस मौके पर तैनात किये गये, तैनात टीम के पास दवाए, इलेक्ट्रोल उपलब्ध रहेगी। जिला पंचायत राज अधिकारी द्वारा मतगणना के दिन मतगणना स्थल पर पीने हेतु शुद्ध पेयजल 15-20 टैंकरों के माध्यम से उपलब्ध कराया जाये, अधिशासी अभियन्ता विद्युत की निर्वाध आपूर्ति सुनिश्चित करायी जाये। पुलिस अधीक्षक डॉ0 यशवीर सिंह ने कहा कि मतगणना परिणाम के दिन जनपद में सुरक्षा व्यवस्था को लेकर सभी तैयारियां सुनिश्चित की गई है। सभी चौराहों व भीड़भाड़ वाले इलाकों में पर्याप्त मात्रा में पुलिस बल तैनात किए जाएंगे। मतगणना के दिन वैध पास धारक ही राजकीय पालिटेक्निक कालेज लोढ़ी में प्रवेश गेट से अंदर प्रवेश करेंगे। प्रत्याशियों अभिकर्ताओं, अधिकारियों कर्मचारियों के लिए वाहन पार्किंग की व्यवस्था निर्धारित की गयी है।

जानकारी के अभाव में बिना मतदान के ही लौटे मतदाता

लोकसभा क्षेत्र रावर्ट्सगंज के साथ ही विधानसभा दुद्धी उप चुनाव मे हुए मतदान मे इण्डिया गठबंधन व एनडीए गठबंधन के बीच मुकाबला काटे का है इससे भी कोई इनकार नही कर रहा है। प्रत्याशियों के भाग्य मतपेटियों मे कैद हो चुके है फैसला 4 जून को होगा। शनिवार को सम्पन्न हुए मतदान मे शहरी क्षेत्रों की अपेक्षा ग्रामीण क्षेत्रों में मतदान का प्रतिशत अधिक रहा है अत्यधिक गर्मी व धूप के बाद भी 55.91 प्रतिशत मतदान हुआ। लोकसभा क्षेत्र रावर्ट्सगंज के विधानसभा क्षेत्र रावर्ट्सगंज व दुद्धी मे मतदान का समय सुबह 7 बजे से साय 4 बजे तक ही रहा जिसकी आम मतदाताओं तक जानकारी पूरी तरह से नही पहुंच पाई थी बडी संख्या में लोग हीट वेब तेज धूप व गर्मी होने के कारण 4 बजे के बाद अपने घरो से निकल कर मतदान केंद्रों पर पहुंचे पर बीना मतदान के ही उन्हें वापस आना पडा वर्ना मतदान का प्रतिशत कुछ और बढ जाता। पुरे जिले में मतदान प्रक्रिया तो सकुशल समपन्न हो गई। पर मतदान से पहले तीन मतदान कर्मियों की हीट वेब की वजह से हुई मौत ने लोगो को दुखी भी कर दिया।

मतगणना को लेकर प्रशासन का हाई अलर्ट

शाहजहांपुर। लोकसभा सामान्य निर्वाचन 2024 तथा ददरौल विधानसभा क्षेत्र के उप निर्वाचन की मतगणना हेतु मतगणना कार्मिको की ड्यूटी का रैण्डमाइजेशन सामान्य प्रेक्षक बाबूलाल गोयलए जिला निर्वाचन अधिकारी उमेश प्रताप सिंह एवं ददरौल विधानसभा मतगणना के प्रेक्षक मुरलीधर पटिहार की उपस्थिति में एन0आई0सी0 कक्ष में संपन्न हुआ। भारत निर्वाचन आयोग के स्टैंडर्ड सॉफ्टवेयर के माध्यम से मतगणना कार्मिकों की ड्यूटी लगाई गयी। लोकसभा सामान्य निर्वाचन में 06 विधानसभाओं में प्रत्येक विधानसभा में 14.14 टेबिल कुल 84 टेबिल लगेगी। रिजर्व टेबिल 18ए आरओध्एआरओ 12 टेबिलए कुल 114 टेबल लगेगी जिसपर काउंटिंग सुपरवाइजरए माइक्रो आब्जर्वर भारत सरकारए काउंटिंग असिस्टेंट एवं एडिशनल काउंटिंग असिस्टेंट ;फ्रेथ क्लासद्ध कुल 456 मतगणना कार्मिक मतगणना करेंगे। ददरौल विधानसभा के उप निर्वाचन में 14 टेबिलए रिजर्व टेबिल 03ए आरओध्एआरओ 02 टेबिलए कुल 19 टेबल लगेगी जिसपर काउंटिंग सुपरवाइजरए माइक्रो आब्जर्वर भारत सरकारए काउंटिंग असिस्टेंट एवं एडिशनल काउंटिंग असिस्टेंट ;फ्रेथ क्लासद्ध कुल 19 मतगणना कार्मिक मतगणना करेंगे।

छोटे से कार्यक्रम को हम चाय पर चर्चा कर सकते हैं

मीरजापुर समय संघ की चिंता का हैएसमय संघ के कार्यकर्ताओं की एक जुटता का हैएसमय देश में चुनावी पर्व का है और ऐसे समय में राष्ट्रीय संघ प्रचारक और क्षेत्रीय संगठन मंत्रीए उत्तर मध्य क्षेत्र . भारत श्रद्धेय श्री अनुपम जी का सानिध्य मीरजापुर में प्राप्त हुआए भारतीय मजदूर संघ की तरफसे श्री चुनरी और श्री तस्वीर भेंट स्वरूप दिया गया छोटे से कार्यक्रम को हम च्चाय पर चर्चा च्कह सकते हैं। श्रीमती शांति तिवारी जीए प्रांतीय अध्यक्षए आंगनबाड़ी संघए श्रीमती डाक्टर सुधा सिंहए श्री प्रेम लाल सिंहएश्रीमती संध्या पाठक जी आंगनबाड़ी कोषाध्यक्षए श्री श्री प्रकाश तिवारीए कार्यवाह अध्यक्ष भारतीय मजदूर संघ के साथ व उन्ही के आवास पर चिंतन.मनन हुआ ।

नहीं रहे भूपेश सिंहए शिक्षकों में शोक की लहर

मिर्जापुर। एएस जुबिली इंटर कॉलेज मिर्जापुर के हरफन्नमौला भूगोल प्रवक्ता एवं उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षक संघ के जिला उपाध्यक्ष भूपेश सिंह की आज रात लू लगने से मौत हो गई। इससे जनपद के शिक्षकों में शोक की लहर व्याप्त हो गई है। लोकसभा चुनाव में भूपेश सिंह की कंट्रोल रूम में ड्यूटी लगी थी। 30 मई को उन्हें ड्यूटी से घर जाते समय लू लग गईए जिससे उनकी हालत बिगड़ गई। परिवार वालों ने उन्हें एक स्थानीय निजी अस्पताल में दाखिल कराया जहां से डॉक्टर ने उन्हें बी एच यू के लिए रेफर कर दिया। बीती रात 12 बजे अचानक उनकी मृत्यु हो गई। श्री सिंह के निधन से शिक्षक समुदाय शोकाकुल हो उठा। रविवार को उनका चौबेघाट पर अंतिम संस्कार किया गयाए जिसमें भारी संख्या में शिक्षक पहुंचे और अपनी श्रद्धांजलि दी। उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षक संघ ने बैठक कर अपने नेता के प्रति शोक प्रकट किया। शोक प्रकट करने वालो में जिला मंत्री डॉ रमाशंकर शुक्लए मंडल अध्यक्ष केदारनाथ दुबेए जिला अध्यक्ष सत्यभूषण सिंहए मंडल मंत्री गणेश प्रसाद सिंहए राधाकांत त्रिपाठीए राजेश कुमार श्रीवास्तवए डॉ रजनीश पाठकए पंकज श्रीवास्तवए नरेंद्र श्रीवास्तवए प्रदीप कुमार पांडेए आफ्ताब अहमदए भूपेंद्र सिंहए सुरेंद्र बहादुर सिंहए राकेश कुमार यादवए इश्तियाक अहमदए चूड़ामणि तिवारी आदि थे।

खेल से स्वास्थ्य के साथ भविष्य भी बनाएंः डा योगेन्द

मेजर रंजीत सिंह स्पोर्ट्स कांप्लेक्स में हॉकी का समर कैंप शुरू

प्रयागराज। मेजर रंजीत सिंह स्पोर्ट्स कांप्लेक्स में समर कैंप का शुभारंभ केपी इंटर कॉलेज के प्रधानाचार्य डॉ योगेंद्र सिंह ने आज किया। इस अवसर पर राजेश वर्मा पूर्व हॉकी खिलाड़ी डॉ बृजेश खरेए सुधांशु गुप्ता अहमद सनी पांडे परवीन एवं शुभम समेत तमाम खेल प्रेमी मौजूद थे। इस अवसर पर मुख्य अतिथि प्रधानाचार्य डॉ योगेंद्र सिंह ने कहा कि आज के दौर में जहां बच्चे मोबाइल और लैपटॉप से चिपके हुए हैं वहीं आप मैदान में अपनी संस्था एवं अपने लिए संघर्ष करते नजर आ रहे हैं आप धन्यवाद के पात्र हैं। उन्होंने कहा कि तमाम बीमारियां घर बैठकर हो रही हैं वहीं आप उससे दूर अपने स्वास्थ्य के लिए मैदानो पर पसीना बहा रहे हैं आप खेल के माध्यम से अपनी संस्था अपने जिले एवं देश प्रदेश का नाम रोशन करें। इस ग्रीष्मकालीन अवकाश का आप भरपूर फायदा उठाएं अपना स्वास्थ्य बनाएं और खुश रहें। पूर्व हॉकी खिलाड़ी राजेश वर्मा ने बच्चों को हॉकी के गुरु सिखाएं। कार्यक्रम का आयोजन खेल प्रवक्ता उमेश खरे ने किया।

सरहद के पहरेदारों को शत-शत मेरा प्रणाम जाय

काव्य गोष्ठी का आयोजन

सोनभद्र। शहीद स्थल प्रवंधन ट्रस्ट करारी सोनभद्र के स्थापना वर्ष गांठ के अवसर पर कचहरी परिसर में काव्य गोष्ठी का आयोजन किया गया। सरस काव्य गोष्ठी का आयोजन विधिवत वाग्देवी सरस्वती के चित्र पर माल्यार्पण दीपदान अध्यक्षता कर रहे मिथिलेश प्रसाद द्विवेदी ने किया और वाणी वंदना करते हुए दिवाकर मेघ ने मां शारदे वर दे हमें तव स्मरण करते रहें सुनाकर श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया। ओज व श्रृंगार की सशक्त हस्ताक्षर कवयित्री कौशल्या चौहान ने दिल में हिन्दुस्तान रखती हूं, गीता बाइबिल कुरान रखती हूं सुनाया और देश को नमन किया तो वहीं श्रृंगार की रचना चांदनी बन सदा मैं चमकती रहूंगी नेह की रागिनी बन कर सदा बजती रहूंगी। काफी सराही गई लोग भाव विभोर रहे। डाला गोली कांड दो जून को ध्यान में रखकर ही शहीद स्थल की स्थापना की गई यह बात बताते हुए शहीद स्थल प्रवंधन ट्रस्ट करारी के निदेशक व साहित्यकार प्रदुम्न त्रिपाठी ने, सरहद के पहरेदारों को शत-शत मेरा प्रणाम जाये। देश खड़ा है साथ आपके ए मेरा पैगाम जाये। ओज पूर्ण भाव देकर खूब तालियां बजवाते रहे। अध्यक्षता कर रहे वरिष्ठ साहित्यकार पत्रकार मिथिलेश प्रसाद द्विवेदी को अंगवस्त्र लेखनी पुस्तिका प्रशस्ति पत्र माल्यार्पण कर सारस्वत अभिनंदन किया गया। लोकभाषा के कवि दयानंद दयालू ने एक दिन पेशी होई गुरू के अदालत में रहना कौनो हालत में सुनकर लोग करुणा से ओत-प्रोत हो गये। संचालन कर रहे अशोक तिवारी ने चांदनी की जमीं पर छटा देखकर, चांद के पार हमको भी जाना पड़ा शायरी सुनाकर वाहवाही बटोरी। धर्मेश चौहान ने राष्ट्र को वंदन करते हुए वतन के लिए जीवन कुर्बान हो गया तो वहीं सोन साहित्य संगम के राकेश शरण मिस्र नोटरी अधिवक्ता ने गंभीर रचना युद्ध युद्ध बस युद्ध छिड़ा है सुनाकर मानवता पर बल देते हुए सबको आईना दिखाया। ओज राष्ट्र वाद के सजग प्रहरी प्रभात सिंह चंदेल ने हाथों में तिरंगा कलेजे में हिन्दुस्तान रखता हूं सुनाया और वीर रस का जज्बा जगाया। इस अवसर पर दिलीप सिंह दीपक जयराम सोनी सुधाकर स्वदेशप्रेम आदि कवियों ने काव्य पाठ किया। अध्यक्षता कर रहे मिथिलेश प्रसाद द्विवेदी ने हाय यह प्रचंड धूप सुनाकर श्रमिक की पीर को उकेरा और पूर्णता प्रदान किया तथा कवियों को आशीर्वाद दिया। आभार आयोजक प्रदुम्न त्रिपाठी ने व्यक्त किया। इस अवसर पर रिषभ शिवमोचन सोनू फरुख अली हाशमी ठाकुर कुशवाहा शिखा मृत्युंजय ममता समता आत्मप्रकाश तिवारी जयशंकर त्रिपाठी देवानंद पांडेय आदि उपस्थित रहे।

स्वास्थ्य सेवा को लेकर समाज में फैली धारणा बदलनी होगीः केसरवानी

महापौर गणेश केसरवानी ने स्वरूप रानी हॉस्पिटल को 20 कूलर किया दान

प्रयागराज। महापौर गणेश केसरवानी में स्वरूप रानी हॉस्पिटल के जनरल वार्ड में गरीबों के इलाज में सुविधा के लिए 20 कूलर का योगदान दिया। कहा कि स्वरूप रानी हॉस्पिटल के डॉक्टर का जीवन गरीबों की सेवा के समर्पित है और दिन रात लगकर उनका इलाज करते हैं लेकिन समाज के अंदर आज भी इलाज को लेकर दोयम दर्जे की धारणा बनी हुई है उन्हें लगता है कि आज भी सरकारी अस्पतालों में इलाज नहीं होता। जिसके कारण आम लोग प्रथम दृष्टया या इलाज के लिए प्राइवेट हॉस्पिटल में जाते हैं और अपनी गाढ़ी कमाई प्राइवेट अस्पतालों के इलाज में खर्च कर देते लेकिन जब उनके पास पैसा खत्म हो जाता है। तो सरकारी अस्पताल में आते हैं तब तक मरीज की हालत बहुत खराब हो जाती है अगर पहले से लोग स्वरूप रानी हॉस्पिटल में आ जाएं तो आम लोगों का पैसा भी बचता है। मरीज की जिंदगी भी बच जाती है लेकिन पूर्ववर्ती सपा एवं कांग्रेस की सरकारों के कारण स्वास्थ्य सेवा के क्षेत्र में लचर व्यवस्था की धारणा आज भी समाज के अंदर बनी है जिसे हमें समाप्त करना है। जिससे लोगों का इलाज आसानी से हो सके उन्होंने कहा कि हमारी सरकार गरीबों के इलाज के लिए 5 लाख का आयुष्मान योजना के तहत गरीबों के इलाज के लिए दे रही है और स्वास्थ्य सेवा के क्षेत्र में कोई गरीब बेइलाज न रह जाए इसके लिए एक जिला एक मेडिकल कॉलेज बनाकर स्वास्थ्य सेवा के क्षेत्र में मेडिकल क्रांति ला रही है। कहा कि इसके अलावा कोरोना जैसी महामारी में डॉक्टर के साथ कदम से कदम मिलाकर स्वास्थ्य सेवा से जुड़ी सभी सुविधाएं देने का काम किया है और आगे भी जो मरीजों की इलाज की सुविधाएं के लिए स्वरूप रानी हॉस्पिटल के डॉक्टर कहेंगे हमारा पूरा प्रयास होगा। उसे हम सरकार के माध्यम से पूरा कराएंगे। इस अवसर पर स्वरूप रानी हॉस्पिटल की प्रधानाचार्य डॉ वत्सला मिश्रा उप अधीक्षक डॉक्टर गौतम त्रिपाठी एवं एस आई सी डॉ विनोद सक्सेना डॉ मोहित जैन डॉ गौतम ने महापौर के प्रति आभार जताते हुए उनका स्वागत किया। इस अवसर भाजपा नेता राम जी केसरवानी विपुल मित्तल पार्षद आकाश सोनकर पार्षद रितेश मिश्रा पार्षद मुकेश लारा राजेश केसरवानी गिरजेश मिश्राएराजन शुक्ला दिनेश विश्वकर्मा आलोक शुक्ला शत्रुघ्न जायसवाल संजीव अग्रवाल विष्णु त्रिपाठी भरत केसरी मोहम्मद सादमान मेडिकल कॉलेज के स्टाफ उपस्थित रहे।

जल संकट

सरकार की जिम्मेदारी

जल संकट से निपटने के लिए दिल्ली सरकार ने पानी की बरबादी करने वालों पर जुर्माना लगाने का निर्णय किया है, लेकिन सवाल है कि क्या वह अपनी जिम्मेदारी ठीक से निभा रही है ? दिल्ली में गर्मी खासकर बहुत अधिक है। इसका कारण 50 डिग्री सेल्सियस के आसपास तापमान तथा अक्सर चलने वाली लू है जिससे भयानक गर्मी पैदा होती है। इन सबके साथ नागरिक सेवाओं में कमी से समस्या और गंभीर हो जाती है। इससे नागरिकों को भारी परेशानी होती है। शहर में 'हीट आईलैंड' प्रभाव पैदा होता है जहां कंक्रीट गर्म होकर गर्मी का विकिरण करती है जिससे वातावरण बहुत गर्म हो जाता है। खासकर पश्चिम में स्थित सुदूर ग्रामीण इलाके पश्चिम में राजस्थान के रेगिस्तानों से आने वाली लू का शिकार होते हैं। इस मौसम में पानी की कमी एक महत्वपूर्ण मुद्दा बन गया है क्योंकि सप्लाई में भारी कमी आई है जिससे नागरिक अपनी प्यास तक ठीक से नहीं बुझा पाते हैं। एयरकंडीशनर, कूलर और पंखे चलाने के लिए बिजली की भारी मांग अक्सर बिजली ग्रिड पर भारी पड़ती है। इसके परिणामस्वरूप अक्सर बिजली कटौती होती है जिससे स्वास्थ्य पर संकट और बढ़ जाता है। गर्मी में धूल के तूफानों तथा वाहनों का उत्सर्जन बढ़ने से हवा की गुणवत्ता खराब हो जाती है। गर्मी के साथ मिल कर यह श्वसन समस्याओं तथा अन्य स्वास्थ्य समस्याओं का कारण बन सकती है। दिल्ली की अनेक समस्यायें हैं। हालांकि, आसमान से बरसती आग के बारे में कुछ नहीं किया जा सकता है, पर बिजली और पानी जैसे संसाधनों के बेहतर प्रबंधन से काफी राहत दी जा सकती है। हर साल दिल्ली सरकार हरियाणा पर उसके हिस्से का पानी जारी न करने का आरोप लगाती है, पर कोई समस्या का दीर्घकालीन समाधान नहीं चाहता है। इसके साथ ही दिल्ली के अनेक हिस्से व खासकर पूर्वी दिल्ली में समुचित हरित क्षेत्रों की कमी है जो छाया प्रदान करने तथा वातावरण ठंडा रखने के लिए जरूरी है। दिल्ली सरकार की लापरवाही के कारण शहर के 22 प्रतिशत से अधिक जल भंडार नष्ट हो गए हैं।

पिछले रिकार्डों से संकेत मिलते हैं कि दिल्ली में 1000 से अधिक जल भंडार थे जो पानी प्रदान करने के साथ ठंडक भी देते थे। वर्तमान जल संकट का सामना करने के लिए दिल्ली सरकार ने पानी की बरबादी के दोषी पर 2,000 रुपये जुर्माने का निर्णय किया है। इस प्रकार दिल्ली सरकार जल-संकट की जिम्मेदारी नागरिकों पर थोपना चाहती है। 20 मिलियन से अधिक जनसंख्या वाली दिल्ली अभूतपूर्व जल-संकट का सामना कर रही है। बढ़ते तापमान से पानी का उपभोग बढ़ा है तथा पहले से ही दबाव का सामना कर रही जल सप्लाई व्यवस्था पर और दबाव बढ़ा है। नागरिक जल सप्लाई में बाधाओं का सामना कर रहे हैं और कई जगह दिन में केवल कुछ घंटे ही पानी आता है। सरकार ने पानी की बरबादी वाली गतिविधियों की पहचान कारों की पाइपों से धुलाई, बागों में बहुत अधिक सिंचाई तथा पानी की टोंटियां खुली रखने के रूप में की है। हालांकि, सरकार का इरादा ठीक है, पर अनेक तत्व इसकी प्रभावशीलता और व्यावहारिकता पर सवाल उठाते हैं। सरकार दोषियों का पता कैसे लगाएगी और पानी की बरबादी कौन परिभाषित करेगा? सरकार उन्हीं लोगों पर और कड़ाई करने जा रही है जो पहले ही बिजली और पानी के संकट के साथ ही भयानक गर्मी का सामना कर रहे हैं। इसके बजाय सरकार को पानी बरबाद करने वालों को चेतावनी देने के साथ जल संकट से अत्यधिक प्रभावित क्षेत्रों में टैंकरों की व्यवस्था करनी चाहिए। ऐसा लगता है कि अब केवल मौसम बदलने से ही राजधानी के नागरिकों को राहत मिलेगी।

कन्याकुमारी में साधना से निकले नये संकल्प

कश्मीर से कन्याकुमारी... ये हर देशवासी के अन्तर्मन में रची-बसी हमारी साझी पहचान हैं। ये वो शक्तिपीठ है जहां मां शक्ति ने कन्या कुमारी के रूप में अवतार लिया था।

नरेंद्र मोदी
(लेखक, देश के प्रधानमंत्री हैं)

मेरे प्यारे देशवासियों,

लोकतन्त्र की जननी में लोकतन्त्र के सबसे बड़े महापर्व का एक पड़ावआज 1 जून को पूरा हो रहा है। तीन दिन तक कन्याकुमारी में आध्यात्मिक यात्रा के बाद,मां अभी दिल्ली जाने के लिए हवाई जहाज में आकर बैठा ही हूं...काशी और अनेक सीटों पर मतदान चल ही रहा है। कितने सारे अनुभव हैं, कितनी सारी अनुभूतियां हैं...मैं एक असीम ऊर्जा का प्रवाह स्वयं में महसूस कर रहा हूं।

वाकई, 24 के इस चुनाव में, कितने ही सुखद संयोग बने हैं। अमृतकाल के इस प्रथम लोकसभा चुनाव में मैंने प्रचार अभियान 1857 के प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम की प्रेरणास्थली मेरठ से शुरू किया। माँ भारती की परिक्रमा करते हुए इस चुनाव की मेरी आखिरी सभा पंजाब के होशियारपुर में हुई। संत रविदास जी की तपोभूमि, हमारे गुरुओं की भूमि पंजाब में आखिरी सभा होने का सौभाग्य भी बहुत विशेष है। इसके बाद मुझे कन्याकुमारी में भारत माता के चरणों में बैठने का अवसर मिला।उन शुरुआती पलों में चुनाव का कोलाहल मन-मस्तिष्क में गूंज रहा था। रैलियों में, रोड शो में देखे हुए अनगिनत चेहरे मेरी आंखों के सामने आ रहे थे। माताओं-बहनों-बेटियों के असीम प्रेम का वो ज्वार, उनका आशीर्वाद...उनकी आंखों में मेरे लिए वो विश्वास, वो दुलार...मैं सब कुछ आत्मसात कर रहा था। मेरी आंखें नम हो रही थीं...मैं शून्यता में जा रहा था, साधना में प्रवेश कर रहा था।

कुछ ही क्षणों में राजनीतिक वाद विवाद, वार-पलटवार...आरोपों के स्वर और शब्द, वह सब अपने आप शून्य में समाते चले गए। मेरे मन में विरक्ति का भाव और तीव्र हो गया...मेरा मन बाह्य जगत से पूरी तरह अलिप्त हो गया।

इतने बड़े दायित्वों के बीच ऐसी साधना कठिन होती है, लेकिन कन्याकुमारी की भूमि और स्वामी विवेकानंद की प्रेरणा ने इसे सहज बना दिया। मैं सांसद के तौर पर अपना चुनाव भी अपनी काशी के मतदाताओं के चरणों में छोड़कर यहां आया था।

मैं ईश्वर का भी आभारी हूँ कि उन्होंने मुझे जन्म से ये संस्कार दिये। मैं ये भी सोच रहा था कि स्वामी विवेकानंद जी ने उस स्थान पर साधना के समय क्या अनुभव किया होगा! मेरी साधना का कुछ हिस्सा इसी तरह के विचार प्रवाह में बहा।

इस विरक्ति के बीच, शांति और नीरवता के बीच, मेरे मन में निरंतर भारत के उज्जवल भविष्य के लिए, भारत के लक्ष्यों के लिए निरंतर विचार उमड़ रहे थे। कन्याकुमारी के उगते हुए सूर्य ने मेरे विचारों को नई ऊंचाई दी, सागर की विशालता नेमेरे विचारों को विस्तार दिया और क्षितिज के विस्तार ने ब्रह्मांड की गहराई में समाई एकात्मकता, का निरंतर ऐहसास कराया। ऐसा लग रहा था जैसे दशकों पहले हिमालय की गोद में किए गए चिंतन और अनुभव पुनर्जीवित हो रहे हों। साथियों, कन्याकुमारी का ये स्थान हमेशा से मेरे मन के अत्यंत करीब रहा है। कन्याकुमारी में विवेकानंद शिला स्मारक का निर्माण श्री एकनाथ रानडे जी ने करवाया था। एकनाथ जी के साथ मुझे काफी भ्रमण करने का मौका मिला था। इस स्मारक के निर्माण के दौरान कन्याकुमारी में कुछ समय रहना, वहां आना-जाना, स्वभाविक रूप से होता था।

कश्मीर से कन्याकुमारी... ये हर देशवासी के अन्तर्मन में रची-बसी हमारी साझी पहचान हैं। ये वो शक्तिपीठ है जहां मां शक्ति ने कन्या कुमारी के रूप में अवतार लिया था। इस दक्षिणी छोर पर मां शक्ति ने उन भगवान शिव के लिए तपस्या और प्रतीक्षा की जो भारत के सबसे उत्तरी छोर के हिमालय पर विराज रहे थे। कन्याकुमारी संगमों के संगम की धरती है। हमारे देश की पवित्र नदियां अलग-अलग समुद्रों में जाकर मिलती हैं और यहां उन समुद्रों का संगम होता है। और यहाँ एक और महान संगम दिखता है- भारत का वैचारिक संगम!

यहां विवेकानंद शिला स्मारक के साथ ही संत तिरुवल्लूवर की विशाल प्रतिमा, गांधी मंडपम और कामराजर मणि मंडपम हैं। महान नायकों के विचारों की ये धाराएँ यहाँ राष्ट्र चिंतन का संगम बनाती हैं। इससे राष्ट्र निर्माण की महान प्रेरणाओं का उदय होता है। जो लोग भारत के राष्ट्र होने और देश की एकता पर संदेह करते हैं, उन्हें कन्याकुमारी की ये धरती एकता का अमिट संदेश देती है।

कन्याकुमारी में संत तिरुवल्लूवर की विशाल प्रतिमा, समंदर से मां भारती के विस्तार को देखती हुई प्रतीत होती है। उनकी रचना 'तिरुक्कुरल' तमिल साहित्य के रत्नों से जड़ित एक मुकुट के जैसी है। इसमें जीवन के हर पक्ष का वर्णन है, जो हमें स्वयं और राष्ट्र के लिए अपना सर्वश्रेष्ठ देने की प्रेरणा देता है। ऐसी महान विभूति को श्रद्धांजलि अर्पित करना भी मेरा परम सौभाग्य रहा।

साथियों, स्वामी विवेकानंद जी ने कहा था, प्रत्येक राष्ट्र के पास देने के लिए एक संदेश है, पूरा करने के लिए एक मिशन है, पहुंचने के लिए एक नियति है।

भारत हजारों वर्षों से इसी भाव के साथ सार्थक उद्देश्य को लेकर आगे बढ़ता आया है। भारत हजारों वर्षों से विचारों के अनुसंधान का केंद्र रहा है। हमने जो अर्जित किया उसे कभी अपनी व्यक्तिगत पूंजी मानकर आर्थिक या भौतिक मापदण्डों पर तकनीकी के इस जनतांत्रीकरण को एक शोध दृष्टि से देख रहा है और बड़ी वैश्विक संस्थाएं कई देशों को हमारे मॉडल से सीखने की सलाह दे रही हैं।

आज भारत की प्रगति और भारत का उत्थान केवल भारत के लिए बड़ा अवसर नहीं है। ये पूरे विश्व में हमारे सभी सहयात्री देशों के लिए भी एक ऐतिहासिक अवसर है। जी-20 की सफलता के बाद से विश्व भारत की इस भूमिका को और अधिक मुखर होकर स्वीकार कर रहा है। आज भारत को ग्लोबल साउथ की एक सशक्त और महत्वपूर्ण आवाज़ के रूप में स्वीकार किया जा रहा है। भारत की ही पहल पर अफ्रीकन यूनियन जी-20 ग्रुप का हिस्सा बना। ये सभी अफ्रीकन देशों के भविष्य का एक अहम मोड़ साबित हुआ है।

साथियों, नए भारत का ये स्वरूप हमें गर्व और गौरव से भर देता है, लेकिन, साथ ही ये 140 करोड़ देशवासियों को उनके कर्तव्यों का अहसास भी करवाता है। अब एक भी पल गंवाए बिना हमें बड़े दायित्वों और बड़े लक्ष्यों की दिशा में कदम उठाने होंगे। हमें नए स्वप्न देखने हैं। अपने सपनों को अपना जीवन बनाना है, और उन सपनों को जीना शुरू करना है।

हमें भारत के विकास को वैश्विक परिप्रेक्ष्य में देखना होगा, और इसके लिए ये जरूरी है कि हम भारत के अंतर्भूत सामर्थ्य को समझें। हमें भारत की शक्तियों को स्वीकार भी करना होगा, उन्हें पुष्ट भी करना होगा और विश्व हित में उनका सम्पूर्ण उपयोग भी करना होगा। आज की वैश्विक परिस्थितियों में युवा राष्ट्र के रूप में भारत का सामर्थ्य हमारे लिए एक ऐसा सुखद संयोग और सुअवसर है जहां से हमें पीछे मुड़कर नहीं देखना है।

21वीं सदी की दुनिया आज भारत की ओर बहुत आशाओं से देख रही है। और वैश्विक परिदृश्य में आगे बढ़ने के लिए हमें कई बदलाव भी करने होंगे। हमें सुधार को लेकर हमारी पारंपरिक सोच को भी बदलना होगा। भारत सुधार को केवल आर्थिक बदलावों तक सीमित नहीं रख सकता है। हमें जीवन में हर क्षेत्र में सुधार की दिशा में आगे बढ़ना होगा। हमारे सुधार 2047 के विकसित भारत के संकल्प के अनुरूप भी होने चाहिए।

हमें ये भी समझना होगा कि किसी भी देश के लिए सुधार कभी एकाकी प्रक्रिया नहीं हो सकती। इसीलिए, मैंने देश के लिए सुधार, निष्पादन और रूपांतरण का विजन सामने रखा। सुधार का दायित्व नेतृत्व का होता है। उसके आधार पर हमारी ब्यूरोक्रेसी निष्पादन करती है और फिर जब जनता जनार्दन इससे जुड़ जाती है, तो रूपांतरण होते हुए देखते हैं।

भारत को विकसित भारत बनाने के लिए हमें श्रेष्ठता को मूल भाव बनाना होगा। हमें गति, पैमाना, दायरा और मानक , चारों दिशाओं में तेजी से काम करना होगा। हमें मैन्युफैक्चरिंग के साथ-साथ क्वालिटी पर जोर देना होगा, हमें शून्य दोष - शून्य प्रभाव के मंत्र को आत्मसात करना होगा।

साथियों, हमें हर पल इस बात पर गर्व होना चाहिए कि ईश्वर ने हमें भारत भूमि में जन्म दिया है। ईश्वर ने हमें भारत की सेवा और इसकी शिखर यात्रा में हमारी भूमिका निभाने के लिए चुना है।

हमें प्राचीन मूल्यों को आधुनिक स्वरूप में अपनाते हुये अपनी विरासत को आधुनिक ढंग से पुनर्परिभाषित करना होगा।

हमें एक राष्ट्र के रूप में पुरानी पड़ चुकी सोच और मान्यताओं का परिमार्जन भी करना होगा। हमें हमारे समाज को पेशेवर निराशावादियों के दबाव से, बाहर निकालना है। हमें याद रखना है, नकारात्मकता से मुक्ति, सफलता की सिद्धि तक पहुंचने के लिए पहली जड़ी-बूटी है। सकारात्मकता की गोद में ही सफलता पलती है।

भारत की अनंत और अमर शक्ति के प्रति मेरी आस्था, श्रद्धा और विश्वास भी दिन-प्रतिदिन बढ़ते जा रहे हैं। मैंने पिछले 10 वर्षों में भारत के इस सामर्थ्य को और ज्यादा बढ़ते देखा है और ज्यादा अनुभव किया है।

जिस तरह हमने 20वीं सदी के चौथे-पांचवे दशक को अपनी आज़ादी के लिए प्रयोग किया, उसी तरह 21वीं सदी के इन 25 वर्षों में हमें विकसित भारत की नींव रखनी है। स्वतंत्रता संग्राम के समय देशवासियों के सामने बलिदान का समय था। आज बलिदान का नहीं निरंतर योगदान का समय है। स्वामी विवेकानंद ने 1897 में कहा था कि हमें अगले 50 वर्ष केवल और केवल राष्ट्र के लिए समर्पित करने होंगे। उनके इस आह्वान के ठीक 50 वर्ष बाद, 1947 में भारत आज़ाद हो गया।

आज हमारे पास वैसा ही स्वर्णिम अवसर है। हम अगले 25 वर्ष केवल और केवल राष्ट्र के लिए समर्पित करें। हमारे ये प्रयास आने वाली पीढ़ियों और आने वाली शताब्दियों के लिए नए भारत की सुदृढ़ नींव बनकर अमर रहेंगे। मैं देश की ऊर्जा को देखकर ये कह सकता हूँ कि लक्ष्य अब दूर नहीं है। आइए, तेज कदमों से चलें...मिलकर चलें, भारत को विकसित बनाएं।

(ये विचार पीएम मोदी द्वारा 1 जून को कन्याकुमारी से वापस दिल्ली की विमान यात्रा के दौरान व्यक्त किये गए)

दैवीय उपस्थिति की अनुभूति

भगवान हमेशा आगे आने वाले हैं। हमें बस इसके लिए योग्य होना चाहिए। आप यह कैसे कर सकते हैं? यह आपकी कल्पना से अधिक सरल है।

अजित कुमार बिश्नोई
(लेखक, आध्यात्मिक चिंतक हैं)

मैं भगवान राम के जन्मस्थान पर बने नए मंदिर में उनके विग्रह की प्राण प्रतिष्ठा देख रहा था। जैसे-जैसे समारोह आगे बढ़ा, मैंने भगवान के भावों में सूक्ष्म परिवर्तन देखना शुरू किया, वे जीवंत हो रहे थे। मैं आश्चर्यचकित था, लेकिन मैं परिवर्तन को देखने से नहीं चूका। मेरे अनुभव की पुष्टि मूर्तिकार ने की, जिसने यह मूर्ति बनाई थी। उसने स्वीकार किया कि उसने जो मूर्ति गढ़ी थी, वह बहुत अलग थी, यानी उसने जो भाव दिया था वह काफी गंभीर था। वैसे, प्राण प्रतिष्ठा मूर्ति को जीवंत करने का एक परिवर्तनकारी कार्य है।

यह प्रकटीकरण कोई आश्चर्यजनक बात नहीं है। भगवान साक्षात प्रकट होते हैं। निम्नलिखित पांच सच्ची जीवन कहानियाँ इसका उदाहरण होंगी। पहली कहानी तब चुनी गई जब भगवान कृष्ण तब प्रकट हुए जब धृतराष्ट्र के राज दरबार में द्रौपदी का चीरहरण करने का प्रयास किया जा रहा था। द्रौपदी ने हताश होकर मदद के लिए प्रार्थना की -कृष्ण, कृष्ण, कृष्ण। भगवान प्रकट हुए और द्रौपदी को अपमान से बचाने के लिए अनगिनत साड़ियां प्रदान कीं।

दूसरी घटना तब की है जब सूरदास अंधे होकर खाई में गिर जाते हैं। वे बाहर निकलने का प्रयास करते हैं, लेकिन असफल रहते हैं। वे मदद के लिए पुकारते हैं, लेकिन कोई नहीं आता। वह स्थान सुनसान था। उनके पूज्य भगवान जानते थे कि उनके सच्चे भक्त को मदद की आवश्यकता है। वे आए और देखा कि सूरदास अपनी दयनीय स्थिति से पूरी तरह बेखबर होकर बैठे हुए भजन गा रहे हैं। भगवान ने उनसे पूछा, तुम बाहर निकलने का प्रयास क्यों नहीं कर रहे हो? सूरदास ने उत्तर दिया, मैंने प्रयास किया, लेकिन असफल रहा। मुझे एहसास हुआ कि केवल तुम ही मेरी सहायता कर सकते हो। भगवान ने सूरदास को अपना हाथ दिया और उन्हें बाहर

निकलने में सहायता की। एक प्रसिद्ध भजन है, जिसमें सूरदास भगवान से विनती करते हैं कि वे उन्हें छोड़कर न जाएं। तीसरी घटना कुछ वर्ष पूर्व हुई। मेरी एक निकट संबंधी अपने घर के पास स्थित मंदिर में गहन चिंतन में लीन बैठी थीं। उनके सामने एक बाबाजी प्रकट हुए। उन्होंने उनसे कहा, तुम अपने ससुराल वालों के व्यवहार से बहुत परेशान हो। चिंता मत करो। तुम्हें एक निश्चित रोग होगा, जिसका नाम उन्होंने रखा है, जो इसके कारण होने वाले तनाव के कारण होगा। लेकिन यह ठीक हो जाएगा; आपको ज्यादा तकलीफ नहीं होगी। इससे पहले कि यह रिश्तेदार कुछ प्रतिक्रिया कर पाता, यह व्यक्ति चला गया। उस बीमारी ने उसे परेशान तो किया, लेकिन जल्द ही काबू में आ गया। यह रिश्तेदार ईश्वर का सच्चा भक्त है। चौथा उदाहरण मेरे एक मित्र से संबंधित है। वह ईश्वर का कट्टर भक्त है। पिछले पाँच दशकों में उसने बहुत आध्यात्मिक प्रगति की है। वह नब्बे के दशक के उत्तरार्ध में है और अभी भी स्वस्थ है। उसकी पत्नी हाल ही में एक संक्षिप्त बीमारी के बाद चल बसी। उसने मंत्र जाप करके इसे रोकने की कोशिश की। उसे यह भी उम्मीद थी कि अगली बार उसकी पत्नी बहुत बढ़िया जन्म देगी। जब वह बहुत ज़्यादा कर रहा था, तो ईश्वर ने उसके घर एक वृद्ध महिला को बुलाया। उसने उसे बताया कि उसकी पत्नी पंद्रहवें दिन चल बसेगी। वह हैरान रह गया।

जब तक वह होश में आता, वह जा चुकी थी। क्या वह स्वयं ईश्वर थी या ईश्वर द्वारा चुनी गई कोई व्यक्ति? अंतिम उदाहरण एक अमेरिकी का है। वह बहुत अमीर हो गया था, लेकिन वह न तो शांत था और न ही खुश।

उत्सुकतावश, उसे इसका कारण खोजना पड़ा। क्या भौतिक धन हमारी सभी समस्याओं का समाधान नहीं है और उसके पास यह बहुत था? उन्होंने विभिन्न चर्चों में जाना शुरू किया, लेकिन कोई संतोषजनक उत्तर नहीं मिला। निराश होकर उन्होंने भारत आने का फैसला किया - जो दुनिया की आध्यात्मिक राजधानी है। यहां भी वही परिणाम हुआ, जहां फर्जी गुरु उन्हें बरगलाने की कोशिश कर रहे थे। बेहद निराश होकर वे हरिद्वार में गंगा के किनारे एक बेंच पर बैठे थे। वे गहरी सोच में डूबे हुए थे, तभी किसी ने उनके कंधे पर हाथ रखा। उन्होंने अपनी आँखें खोलीं और देखा कि उनके सामने एक संत खड़े हैं। उन्होंने कहा, इतना दुखी मत हो। भगवान की शरण में जाओ। और सबसे अच्छा तरीका है भगवान के निर्देशों का पालन करना, जैसा कि प्रामाणिक शास्त्रों में विस्तृत है। भगवद-गीता की एक प्रति खरीदें। जब उन्होंने अपनी आंखें खोलीं, तो संत दिखाई नहीं दिए।

क्या हमें भगवान के साथ ऐसा अनुभव हो सकता है? हां, हो सकता है। भगवान हमेशा आगे आने वाले हैं। हमें बस इसके लिए योग्य होना चाहिए। आप यह कैसे कर सकते हैं? यह आपकी कल्पना से कहीं अधिक सरल है। आध्यात्मिक अभ्यास करें, जो आपके स्वभाव के अनुकूल हो। उदाहरण के लिए, मैं नियमित रूप से दर्शन और नमन, जप, धन्यवाद और प्रार्थना करता हूँ। एक बार जब एक निश्चित मात्रा में आध्यात्मिक ऋण एकत्रित हो जाता है, तो ईश्वर हमारे जीवन में सक्रिय हो जाते हैं।

आप की बात

भयभीत विपक्ष

कांग्रेस अध्यक्ष ने कहा कि 4 जून को इंडिया गठबंधन। की सरकार बन रही है। अखिलेश यादव कह रहे हैं कि 140 करोड़ जनता भाजपा को 140 सीट भी नहीं देगी। भाजपा पहले ही 400 पार का नारा दे चुकी है। इस प्रकार सब नेता अपनी-अपनी ढपली, अपना-अपना राग अलाप रहे हैं। लेकिन कांग्रेस ने अपने प्रवक्ताओं को एक्जिट पोल संबंधी एलेक्ट्रानिक चैनलों के कार्यक्रमों में न जाने की घोषणा कर परोक्ष रूप से हार स्वीकार कर ली है। अमित शाह ने इस पर कांग्रेस का मजाक उड़ाते हुए कहा है कि वह असलियत स्वीकार करने को तैयार नहीं है और इसी कारण यह निर्णय लिया गया। एक्जिट पोल पिछले अनेक चुनावों से एलेक्ट्रानिक चैनलों पर आम हो गए हैं और इनके प्रस्तुतकर्ता बार-बार कहते हैं कि ये केवल अनुमान हैं। ऐसे में कांग्रेस द्वारा इनसे पलायन उसके भय का संकेत है। अखिलेश यादव ने भी कहा है कि जनता एक्जिट पोल के नतीजों से भ्रमित न हो। सवाल है कि नतीजे आने से पहले ही अखिलेश और कांग्रेस इतने भयभीत क्यों हैं? इससे आशंका पैदा होती है कि विपक्षी नेताओं के इशारे पर मतगणना में अनावश्यक बाधा डालने व निरर्थक आपत्तियों का दौर सामने आ सकता है। निर्वाचन आयोग तथा केन्द्रीय गृह मंत्रालय को सतर्क रहना होगा।

- शकुंतला महेश नेनावा, इंदौर

मोदी का ध्यान

कन्याकुमारी में विवेकानंद रॉक पर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी लगभग दो महीने से अत्यधिक व्यस्त चुनाव प्रचार के बाद ध्यान लगाने गए हैं। अब तक चुनाव प्रचार में मोदी के आक्रामक बयानों से परेशान कांग्रेस और विपक्षी नेता अब उनके मौन होकर ध्यान लगाने से भी परेशान हैं। कांग्रेस इसके खिलाफ हाईकोर्ट पहुँच गई है। मोदी इसके पहले 2014 व 2019 में चुनाव प्रचार के बाद भी ध्यान लगाने महाराष्ट्र और केदारनाथ जा चुके हैं। मोदी के किसी स्थान की यात्रा से देश-विदेश के लोग वहां के प्रति आकर्षित होते हैं। केदारनाथ में मोदी के ध्यान लगाने के बाद लाखों लोगों ने केदारनाथ की उसी गुफा में ध्यान लगाया है। इससे भारतीय विरासत के साथ ही पर्यटन व प्रकारान्तर से अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान मिलता है। मोदी स्वामी विवेकानन्द की ध्यान स्थली पर ध्यान लगा कर देश और जनता की भावी प्रगति के बारे में शक्ति और ऊर्जा प्राप्त करने का प्रयास कर रहे हैं। लोकसभा चुनाव में मतदान के अंतिम चरण से पहले कांग्रेस और विपक्ष ने मोदी के ध्यान पर प्रहार कर वैसी ही गलती की है जो अयोध्या में भगवान राम की प्राण प्रतिष्ठा का निमंत्रण ठुकरा कर की थी। जनता उसे इसकी सजा निश्चित रूप से देगी।

- दीप्ति प्रदीप बंदवार, रतलाम

हांगकांग में तानाशाही

हांगकांग कभी आज़ादी एवं लोकतंत्र का उदहारण था, लेकिन आज वह तानाशाही के हाथों लहूलुहान हो चूका है। अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता एवं स्वछंद जीवन जीने की आज़ादी हांगकांग के लोगों से छिन चुकी है। 1984 के चीन-ब्रिटिश संयुक्त घोषणापत्र के अनुसार चीन ने 50 वर्ष तक वहां-एक देश, दो प्रणाली के अंतर्गत सरकार व अर्थव्यवस्था की संरचनायें बनाए रखने का वादा किया था। इस वादे को चीन ने न सिर्फ बीच में ही तोड़ दिया बल्कि राष्ट्रीय सुरक्षा कानून हांगकांग वासियों पर लाद कर राष्ट्रीय सुरक्षा एवं देशद्रोह के नाम पर आम लोगों के विरोध प्रदर्शनों पर रोक लगा दी है। उसने चीन के स्वामित्व पर सवाल उठाने वाले लोगों को जेल में डाल दिया है। 2020 में 47 लोगों पर विरोध प्रदर्शन के जरिये सरकार को उखाड फेंकने का आरोप लगाया था। अब उनमें से 14 लोकतंत्र- समर्थकों पर उम्र क़ैद या मौत की सजा का खतरा मंडरा रहा है। विडंबना है कि चीन की आर्थिक शक्ति व उससे बिजनेस संबंधों के कारण अमेरिका व यूरोप के देश इस पर कोई ठोस कार्रवाई करने की स्थिति में नहीं हैं। इससे चीन को न केवल हांगकांग में तानाशाही थोपने, बल्कि ताइवान पर कब्जे के लिए भी शह मिल रही है। यह स्थिति खतरनाक है।

- जंग बहादुर सिंह, जमशेदपुर

मतदान संपन्न

सात चरणों की लंबी प्रक्रिया के बाद अंतत: चुनाव लगभग निर्विघ्न संपन्न हुए। और पिछले चुनावों से इस बार शिकायतें भी कम आई हिंसा भी कम हुई। मगर भीषण गर्मी के चलते जहां कम मतदान हुआ वही अनेक चुनाव कर्मचारियों और कुछ वोटरों की दु:खद मृत्यु हुई। चुनाव आयोग को इससे सबक लेते हुए भविष्य में चुनाव तारीखों की घोषणा करते समय देश के मौसम को भी ध्यान में रखना चाहिए। यदि अगले चुनाव तक एआई के माध्यम से आधार कार्ड की केवाईसी के जरिए अपने मतदान क्षेत्र से दूर रहने वालों के लिए मतदान सुविधा उपलब्ध हो तो अधिकांश मतदाता आसानी से मतदान कर सकेंगे। चुनाव परिणाम के पहले शुरू एग्जिट पोल टीवी डिबेट के माध्यम से जनता को मसालेदार खबरें परोसते रहेंगे। कांग्रेस का इन एग्जिट पोल में होने वाली डिबेट्स में भाग नहीं लेने का नहीं लेने का निर्णय चौंकाने वाला है। इससे जनता में यही संदेश गया कि अपनी घटती हुई सीटों के कारण शर्मिंदगी से बचने के लिए कांग्रेस इन डिबेट से दूर रहना चाहती है। नतीजे जो भी हों, सबको विनम्रता के साथ जनादेश स्वीकार करना चाहिए।

- सुभाष बुडावन वाला, रतलाम

पाठक अपनी प्रतिक्रिया ई-मेल से
responsemail.hindipioneer@gmail.com
पर भी भेज सकते हैं।

मतगणना को लेकर प्रशासन ने जारी किये निर्देश

- मतगणना की तैयारियों का जिलाधिकारी ने किया निरीक्षण
- मतगणना स्थल के मुख्य द्वारा के समक्ष वाहनों का आवागमन प्रतिबंधित
- परिसर में चिकित्सकों की तैनाती, एंबुलेंस सुविधा भी रहेगी उपलब्ध

संवाददाता। अमेठी

अपर जिलाधिकारी/उप जिला निर्वाचन अधिकारी अर्पित गुप्ता ने बताया कि लोकसभा सामान्य निर्वाचन-2024 के दृष्टिगत मतगणना दिवस को जवाहर नवोदय विद्यालय के मुख्य गेट के सामने स्थित सैंठा रोड पर 100 मी0 की दूरी पर दोनों तरफ वाहनों का आवागमन प्रतिबंधित रहेगा तथा बिना पास के किसी व्यक्ति को प्रवेश की अनुमति नहीं दी जायेगी।

व मतगणना अभिकर्ता मतगणना दिवस की सुबह 07 बजे तक मतगणना केन्द्र पर प्रवेश कर लेंगें, मतगणना अभिकर्ताओं के लिए विधासभावार अलग-अलग रंगों के पास निर्गत किये गये हैं तथा प्रवेश के समय अपने साथ प्रारुप-18 की प्रति, आई0डी0 यथा आधार कार्ड व अन्य तथा मतगणना अभिकर्ता पहुंचान पत्र अनिवार्य रूप से लायेगें, उक्त दस्तावेजों के न लाने पर मतगणना केन्द्र में प्रवेश नही दिया जायेगा, मतगणना स्थल पर जाने वालों के लिए जवाहर नवोदय विद्यालय के गेट के बाहर 100 मी0 दूरी पर खाली पड़े मैदान में वाहनों को खड़े किये जाने का स्थान निर्धारित किया गया है।

सभी कार्मिक व मतगणना अभिकर्ता अपने वाहन निर्धारित स्थल पर ही खड़े कर सकेंगें व मतगणना कैम्पस में वाहन को प्रवेश नहीं दिया जाएगा। इसी क्रम में उन्होंने बताया कि मतगणना अभिकर्ता अपने साथ 17 सी, पेन, पेन्सिल, क्लिपबोर्ड ले जा सकते हैं, मोबाइल फोन, स्मार्ट वॉच, अन्य कोई भी इलेक्ट्रानिक गैजेट, ज्वलनशील पदार्थ अथवा पानी की बोतल आदि कोई भी सामग्री मतगणना स्थल पर अपने साथ नहीं ले जा सकेंगे, मतगणना कार्मिकों एवं अभिकर्ताओं को मोबाइल फोन ले जाने की अनुमति नहीं दी गयी है इस हेतु जिलाधिकारी द्वारा यह अपील की गयी कि मतगणना अभिकर्ता और मतगणना कार्मिक अपने साथ मोबाइल लेकर न आयें एवं भीषण गर्मी को देखते हुए मतगणना अभिकर्ताओं को खाने-पीने की सामग्री पहुंचाने में कठिनाई को देखते हुए जिलाधिकारी द्वारा उक्त सामग्री को गेट के बाहर 100 मी0 की दूरी से मतगणना कैम्पस में लाने के लिए 04 ई-रिक्शे लगाये जाने के निर्देश दिये गये हैं।

उन्होंने बताया कि मतगणना कैम्पस में मतगणना अभिकर्ताओं व कार्मिकों के लिए संकेतक के रूप में जगह-जगह साइनेज लगाये गये हैं एवं प्रत्येक प्वाइंट पर अधिकारियों की तैनाती की गयी है जो व्यवस्था को सुचारु बनाये रखने में सहयोग प्रदान करेगें एवं मतगणना हाल में भीषण गर्मी से बचाव के लिए ए0सी0 व कूलर लगवाये गये हैं तथा कैम्पस में चिकित्सकों की तैनाती की गई है। जो पर्याप्त मात्रा में ओ0आर0एस0 आदि की उपलब्धता सुनिश्चित करेंगें साथ ही दो एम्बुलेंस गाडियॉ भी मतगणना स्थल पर लगायी गयी हैं।

इसी क्रम में उन्होंने बताया कि मतगणना कैम्पस के अन्दर व बाहर मतगणना के परिणामों से अवगत कराने के लिए पब्लिक एड्रेस सिस्टम की व्यवस्था की गयी है एवं मतगणना कैम्पस में मीडिया सेण्टर बनाया गया है जहां टी0बी0, चार्जिंग प्वाइंट व इन्टरनेट की सुविधायें उपलब्ध करायी जायेगी। मतगणना प्रात: 8 बजे शुरु होगी।

मतगणना की तैयारियों का प्रेक्षक ने किया निरीक्षण, निर्वाचन आयोग को भेजी रिपोर्ट

संवाददाता। संतकबीरनगर

प्रेक्षक (सामान्य) जनक प्रसाद पाठक व जिला निर्वाचन अधिकारी/जिला मजिस्ट्रेट महेन्द्र सिंह तंवर द्वारा 62-संतकबीरनगर संसदीय निर्वाचन की मतगणना को सकुशल, पारदर्शी एवं निष्पक्ष सम्पन्न कराने के दृष्टिगत हीरालाल पी0जी0 कॉलेज में बनाये गये स्ट्रॉग रूम, सहित मतगणना कक्षों, मतगणना हेतु लगाये जा रहे टेबल सहित अन्य सुविधाओं/व्यवस्थाओं का स्थलीय निरीक्षण किया गया। इस अवसर पर उप जिला निर्वाचन अधिकारी जय प्रकाश, मुख्य विकास अधिकारी/प्रभारी अधिकारी कार्मिक संत कुमार उपस्थित रहे।

निरीक्षण के दौरान प्रेक्षक व जिला निर्वाचन अधिकारी द्वारा जनपद के तीनों विधानसभा क्षेत्रों मेंहदावल, खलीलाबाद व धनघटा की मतगणना हेतु बनाये गये अलग-अलग मतगणना कक्षों में पहुॅचकर सुचारू, सुव्यवस्थित एवं निष्पक्ष मतगणना हेतु आवश्यक सभी सुविधाओं व्यवस्थाओं एवं संसाधनों का बारिकी से निरीक्षण एवं सम्बंधित ए0आर0ओ0 से विभिन्न बिन्दुओं पर जानकारी लेते हुए आवश्यक दिशा-निर्देश भी दिया गया। निरीक्षण के दौरान मतगणना स्थल पर मतगणना हेतु मतगणना काउंटर, बैरिकेडिंग, सीसीटीवी कैमरा का संचालन, पेयजल व्यवस्था, शौचालय, कूलर, पंखे आब्जर्वर रूम, मीडिया सेंटर, प्रकाश व्यवस्था आदि की जानकारी संबंधित अधिकारियों से ली गयी। प्रेक्षक ने कहा कि मतगणना स्थल पर जो भी कार्य अभी अवशेष है उनको तत्काल पूर्ण कराया जाए। निरीक्षण के दौरान समस्त ए0आर0ओ0, अपर उप जिलाधिकारी रमेश चन्द्र, उप जिलाधिकारी संजीव राय, उप जिलाधिकारी डा0 सुनील कुमार, जिला विकास अधिकारी सुरेश चन्द्र केसरवानी, डीसी एनआरएलएम जीशान रिजवी, सहायक अभियन्ता पीडब्लूडी विमल कुमार, ई0ओ0 खलीलाबाद, सूचना अधिकारी सुरेश कुमार सरोज सहित संबंधित आदि उपस्थित रहे।

मानकों की अनदेखी के चलते आदर्श जलाशयों में पानी नहीं

शिवगढ़, रायबरेली। लाखों रुपए खर्च कर गांवों में बनवाए गए आदर्श जलाशय खुद एक-एक बूंद पानी को तरस रहे हैं। शुरू से ही मानकों की अनदेखी से अपवाद को छोड़ किसी भी गांव में कोई ऐसा आदर्श जलाशय नहीं है जिसमे पानी भरा हो। नगर पंचायत के साथ ही क्षेत्र की 36 ग्राम पंचायतों में लाखों रुपए की लागत से मनरेगा द्वारा आदर्श जलाशय बनवाए गए थे जो पानी के अभाव शोपीस बनकर लोगों को मुंह चिढ़ा रहे हैं। भीषण गर्मी में जलाशयों में पानी की जगह धूल उड़ रही है।

तकरीबन सभी ग्राम पंचायतों में मनरेगा से लाखों रुपए खर्च कर आदर्श तालाब बनवाए गए थे किंतु खाऊ कमाऊ नीति और धन के बन्दरबांट के चलते इनके निर्माण में शुरू से ही मानकों की अनदेखी की गई। शायद यही वजह रही कि ज्यादातर आदर्श जलाशयों में न बोरिंग की गई और न ही उनमें पानी ही भरा जा सका फलत- वे अपनी पहली वर्षगांठ भी ठीक से नहीं मना पाए और स्वयं एक-एक बूंद पानी को तरस गए। अपवाद को छोड़कर ज्यादातर आदर्श जलाशयों में इन दिनों धूल उड़ रही है। शुरू से ही भ्रष्टाचार की भेंट चढ़े आदर्श जलाशय पशु पक्षियों के लिए सफेद हाथी बने उनका मुंह चिढ़ा रहे हैं।

छह परिवारों के बीच महिला थाने में कराया गया सुलह समझौता

संवाददाता। संतकबीरनगर

पुलिस अधीक्षक सत्यजीत गुप्ता के निर्देशन में चलाये जा रहे ''साथ-साथ'' कार्यक्रम (टूटते परिवार को जोड़ने की एक पहल) के तहत रविवार को परिवार परामर्श केन्द्र महिला थाना पर थानाध्यक्ष पूनम मौर्या एवं नियुक्त सदस्य रिफातुल्लाह अंसारी के अध्यक्षता में 6 मामले आये। प्रथम पक्ष इन्द्रजीता पुत्र चन्नू निवासी ग्राम झुंगिया थाना बखिरा व द्वितीय पक्ष सुषमा पुत्री सोलहू निवासी ग्राम झंगहा थाना झंगहा जनपद गोरखपुर को काफी समझाने बुझाने के उपरान्त दोनों पक्ष एक साथ खुशी-खुशी रहने को तैयार हैं।

प्रथम पक्ष अख्तर जहां पुत्री असलम हुसैन निवासी ग्राम पचपोखरिया थाना दुधारा व द्वितीय पक्ष मो0 लतीफ पुत्र मो0 इस्माईल निवासी ग्राम सिसवां फत्ताउल्लाह थाना दुधारा को काफी समझाने बुझाने के उपरान्त दोनों पक्ष एक साथ खुशी-खुशी रहने को तैयार हैं। प्रथम पक्ष मुकेश कुमार पुत्र छोटेलाल निवासी ग्राम बालूशासन थाना कोतवाली खलीलाबाद व द्वितीय पक्ष करिश्मा पत्नी मुकेश कुमार निवासी ग्राम बालूशासन थाना कोतवाली खलीलाबाद दोनों पक्ष एक साथ खुशी-खुशी रहने को तैयार हैं। प्रथम पक्ष अन्जनी पुत्री फूलदेव निवासी ग्राम ऐंचाकाट थाना कोतवाली खलीलाबाद व द्वितीय पक्ष अजय पुत्र राजेश निवासी ग्राम गोरयाभार थाना कोतवाली खलीलाबाद को काफी समझाने बुझाने के उपरान्त दोनों पक्ष एक साथ खुशी-खुशी रहने को तैयार है।

प्रथम पक्ष रीता देवी पत्नी जोगिन्दर निवासी ग्राम दुर्गजोत थाना बखिरा व द्वितीय पक्ष जोगिन्दर पुत्र ढिरे प्रसाद निवासी ग्राम दुर्गजोत थाना बखिरा को काफी समझाने बुझाने के उपरान्त दोनों पक्ष एक साथ खुशी-खुशी रहने को तैयार है। प्रथम पक्ष अंजू पुत्री सुमेर निवासी ग्राम निवरहर थाना सहजनवां जनपद-गोरखपुर व द्वितीय पक्ष पंकज पुत्र मुरलीधर निवासी ग्राम छाछापार थाना कोतवाली खलीलाबाद को काफी समझाने बुझाने के उपरान्त दोनों पक्ष एक साथ खुशी-खुशी रहने को तैयार हैं।

700 ग्राम गांजे के साथ युवक को किया गिरफ्तार

मुसाफिरखाना, अमेठी। अपराध एवं अपराधियों पर अंकुश लगाए जाने हेतु चलाए जा रहे नशा मुक्ति अभियान के तहत उपनिरीक्षक राजेश कुमार तिवारी ने मय हमराही पुलिस के साथ वाहन चेकिंग व क्षेत्र भ्रमण करने के दौरान करपिया तिराहे के पास से 700 ग्राम गांजा ले जा रहे एक युवक को गिरफ्तार कर उचित विधिक कार्यवाही करते हुए जेल भेज दिया।

शनिवार को शाम मुखबिर से सूचना प्राप्त होने पर प्रभारी निरीक्षक विनोद कुमार सिंह के निर्देशन में उपनिरीक्षक राजेश कुमार तिवारी मय हमराही कोतवाली पुलिस के साथ क्षेत्र भ्रमण के दौरान करपिया तिराहे के पास से 700 ग्राम गांजा के साथ अभियुक्त जमीर अहमद पुत्र लल्लन उम्र करीब 40 वर्ष निवासी करपिया थाना मुसाफिरखाना को गिरफ्तार कर उसके विरुद्ध विधिक कार्यवाही करते हुए सुसंगत धाराओं में मुकदमा दर्ज कर जेल भेज दिया।

मतगणना दिवस को जिले के सभी शराब तथा भांग के ठेके रहेंगे बंद

उरई, जालौन। जिला मजिस्ट्रेट राजेश कुमार पाण्डेय ने बताया कि विशेष सचिव उत्तर प्रदेश शासन के पत्र 22 मार्च, 2024 एवं आवकारी आयुक्त, उप्र प्रयागराज के पत्र 28 मार्च, 2024 द्वारा लोकसभा सामान्य निर्वाचन-2024 में मतगणना 4 जून 2024 को शुष्क दिवस घोषित करने व कृत कार्यवाही से सूचना उपलब्ध कराये जाने के निर्देश दिये गये हैं।

यदि किसी प्रादेशिक निर्वाचन क्षेत्र में सामान्य या उप निर्वाचन हो, उस निर्वाचन क्षेत्र तथा उसके चारों ओर 8 किमी क्षेत्र में स्थित देशी शराब, विदेशी मदिरा, वियर, मॉडल शॉप एवं भांग की समस्त लाइसेंस प्राप्त दुकानें और उनकी बिक्री के लिए स्वीकृत अन्य लाइसेंस लोक प्रतिनिधित्व अधिनियम-1935 की धारा-135 (ग) के खण्ड-1 में यथा उपवन्धित मतदान की समाप्ति के लिए नियत समय से 48 घण्टे पूर्व तथा मतगणना दिवस को पूर्णतया बंद रखे जाने का प्राविधान है। निर्वाचन के दौरान लोक शान्ति बनाये रखने तथा स्वतंत्र, निष्पक्ष एवं शांतिपूर्ण मतदान कराये जाने के उद्देश्य से मतदान समाप्ति से 48 घण्टे पूर्व की अवधि से एवं मतगणना दिवस को जनपद की समस्त आबकारी दुकानों की बंदी एवं बंदी दिवसों में मादक वस्तुओं के उपभोग को प्रतिबंधित, नियंत्रित किया जाना आवश्यक है।

अत: मैं राजेश कुमार पाण्डेय जिलाधिकारी जालौन लोक प्रतिनिधित्व अधिनियम-1951 की धारा-135 (ग) के खण्ड-1 में यथा उपबंधित एवं संयुक्त प्रान्त आवकारी अधिनियम 1910 की धारा-59 में प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए जनपद जालौन में स्थित देशी शराब, विदेशी मदिरा, वियर, मॉडल शॉप एवं भांग की फुटकर, थोक (एफएल-2, 2वी एवं सीएल-2) एवं अन्य समस्त आवकारी अनुज्ञापन निम्नानुसार बन्द रखे जाने का आदेश देता हूं।

अवर अभियंता पर लगाया महिलाओं से बदसलूकी व धन उगाही का आरोप

- पीड़ित धनश्याम ने कोतवाली में दी तहरीर
- अधीक्षण अभियंता ने कही जांच कराने की बात

संवाददाता। डलमऊ, रायबरेली

उत्तर प्रदेश विधुत विभाग के डलमऊ विधुत विभाग के धूता फीडर के कनिष्ठ अभियंता कमलेन्द्र सिंह पर पीड़ित घनश्याम ने गंभीर आरोप लगाते हुए विधुत विभाग के वसूली और बदसलूकी की मिल रही शिकायतों में एक अध्याय और जोड़ दिया। डलमऊ विधुत विभाग में अवैध वसूली या अवैध उगाही की मिल रही शिकायतों में लगातार इजाफा इस बात का सूचक है कि विद्युत विभाग निरंकुश होता जा रहा है। कनिष्ठ अभियंता कमलेन्द्र सिंह द्वारा अवैध उगाही के लिए कहीं भी किसी भी क्षेत्र को चुना जा सकता है वो भी नशे की हालत में।

जब रात में सब उपभोक्ता सोने की तैयारी कर रहे होते हैं तो धूता क्षेत्र में तैनात कनिष्ठ अभियंता किसी के घर मे घुस कर विधुत चोरी की जांच के नाम पर घुस जाते हैं।

पीड़ित घनश्याम पुत्र शिवकुमार ने बताया कि शनिवार रात्रि लगभग 10.45 के आसपास कनिष्ठ अभियंता कमलेन्द्र सिंह,संविदा कर्मी वीरेंद्र सिंह व छ: लोग जबरन विद्युत जांच के नाम पर घर मे घुस कर महिलाओं से बदसलूकी की व पीड़ित के साथ मारपीट की जिसकी तहरीर डलमऊ कोतवाली में दी गयी है। इससे पूर्व भी कनिष्ठ अभियंता कमलेन्द्र सिंह पर एक महिला द्वारा जांच के नाम पर शोषण की शिकायत खूब चर्चा में आई जो बाद में गुमनाम हो गयी।

यहां सवाल ये उठता है कि जब कनहा चौराहा क्षेत्र कनिष्ठ अभियंता का कार्यक्षेत्र नही है तो वहां विधुत चोरी की जांच में कैसे पहुंच गए इस शिकायत की सत्यता की जांच के लिए जब कनिष्ठ अभियंता कमलेन्द्र सिंह से बात की गई तो बड़े निरंकुशता वाले अंदाज में बताया कि मेरा सारा क्षेत्र है शहरी भी और ग्रामीण भी, मैं कहीं भी जांच कर सकता हूं।

और आज भी दो जगह जांच करूंगा ये जांच उच्चाधिकारियों के निर्देशन पर हो रही है जबकि इस प्रकरण पर अधीक्षण अभियंता मनु सिंह चंदेल ने बताया कि मेरे द्वारा किसी भी तरह की गैर कार्यक्षेत्र में जांच कार्य के लिए कनिष्ठ अभियंता कमलेन्द्र सिंह को निर्देशित नही किया गया है। अगर ऐसा कृत्य हुआ है तो निश्चित गलत है और विभागीय जांच कराई जाएगी।

12वीं पास छात्र-छात्राओं को प्रबंधक करेंगे सम्मानित

संतकबीरनगर। हीरालाल रामनिवास इंटर कॉलेज खलीलाबाद में 5 जून को कक्षा 12 पास छात्र-छात्राओं के लिए प्रतिभा सम्मान समारोह एवं नि:शुल्क कैरियर काउंसलिंग सेशन का आयोजन विद्यालय के प्रधानाचार्य राम कुमार सिंह द्वारा किया गया है। इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि विद्यालय के प्रबंधक अमरनाथ रुंगटा है। समस्त छात्र-छात्राओं को जो 2024 में हीरालाल रामनिवास इंटर कॉलेज से इंटर पास किए हैं को मेडल से सम्मानित किया जाएगा तथा विद्यालय के शीर्ष 50 उच्चतम अंक प्राप्त छात्र-छात्राओं को मेडल के साथ प्रशस्ति पत्र भी प्रबंधक एवं प्रधानाचार्य द्वारा दिया जाएगा। इस दौरान छात्र-छात्राओं को नि:शुल्क करियर काउंसलिंग के लिए बीएनसीईटी लखनऊ से कंप्यूटर साइंस एंड इंजीनियरिंग के असिस्टेंट प्रोफेसर तथा आईटीएम मेरठ के बायोकेमेस्ट्री के असिस्टेंट प्रोफेसर राजीव राय तथा नीट और जेईई की तैयारी करने वालों के मार्गदर्शन हेतु केकौत्स एजुकेट लखनऊ के कौत्स कुमार को बुलाया गया है।

हीट स्ट्रोक से होमगार्ड व किराना व्यापारी की मौत

लालगंज, रायबरेली। कस्बे के आचार्य नगर निवासी होमागार्ड व घसियारी मंडी निवासी व्यापारी पुत्र की हीट स्ट्रोक के चलते मौत हो गई। कस्बे के रहने वाले दो लोगो की एक साथ गर्मी के चलते हुई मौत के बाद चिकित्सको ने लोगो से लापरवाही न बरतने की सलाह दी है।

कस्बे के आचार्य नगर मोहल्ले में रहने वाले शिवबहादुर सिंह(55) फतेहपुर में होमगार्ड के पद पर तैनात थे। 1 जून को मिर्जापुर में चुनाव ड्यूटी के दौरान अत्यधिक गर्मी के चलते उनकी हालत खराब होने पर साथी कर्मचारियों ने उन्हे अस्पताल में भर्ती कराया जहां उनकी मौत हो गई। जिसके बाद प्रशासन ने अन्त्य परीक्षण कराने बाद शव को उनके परिजनो के सुपुर्द शनिवार की देर सायं कर दिया था। रविवार को उनका अंतिम संस्कार किया गया। शिवबहादुर की मौत से उनकी पत्नी उमा, बेटे सचिन व पुत्री शालू समेत परिजनो का रो-रो कर बुरा हाल है। वहीं घसियारी मंडी निवासी अरविंद(28) पुत्र शिवशंकर किराने की दुकान चलाता था। जहां देर सायं वह अचानक बेहोश हो गया जिसके बाद परिजन उसे आनन-फानन सीएचसी ले गया जहां हालत गंभीर होने के चलते उसे जिला चिकित्सालय रेफर कर दिया गया। जिसके बाद एम्बुलेंस की मदद से उसे जिला चिकित्सायल में भर्ती कराया गया जहां इलाज के दौरान उसकी मौत हो गई। अरविंद की अचानक हुई मौत से परिजनो में कोहराम मच गया।

परिजनों के अनुसार गर्मी व लू की चपेट में आने से अरविंद की मौत हुई है। वही चिकित्साधिकारी डा. कुमार विमल ने लोगो से अत्यधिक धूप में घरो से बाहर न निकलने की सलाह दी है। उन्होने बताया कि अधिक से अधिक पानी पियें साथ ही आवश्यक होने पर ही घरो से पूरे शरीर को ढंककर ही बाहर निकलें।

आम जनजीवन के लिए चुनौती बना भीषण गर्मी में व्याप्त बिजली संकट

उरई, जालौन। भीषण गर्मी के दौर में जहां एक और गरीब और मध्यम वर्गीय लोगों के लिए प्रकृति का प्रकोप कहर ढा रही है तो वही अब व्यवस्थाएं भी गंभीर संकट खड़ा करने में पीछे नहीं है बात हम भीषण गर्मी के दौरान विद्युत आपूर्ति की करें तो जिस तरह से बीते कुछ दिनों से लगातार अघोषित विद्युत कटौती ने आम लोगों का जीना दुश्वार कर दिया है तो वहीं दिनों दिन बढ़ता तापमान लोगों के स्वास्थ्य के लिए गंभीर चुनौती बन गया है फिलहाल जो भी हो प्रशासन और विद्युत विभाग के जिम्मेदार लोगों को मौसम की मार को देखते हुए विद्युत आपूर्ति पर गंभीर होने की जरूरत है।

वैसे तो गर्मियों के दौरान हर साल लोगों को मई और जून माह में भीषण गर्मी का सामना करना पड़ता है लेकिन इस बार जून माह की गर्मी का असर मई के महीने में ही देखने को मिला जब सामान्य से हटकर पारा 45 से 48 डिग्री से ऊपर निकल गया पिछले दो दिनों से तो यह हालत है कि सुबह से ही भीषण गर्मी का दौर शुरू हो जाता है और देर शाम तक कायम रहता है कमोबेश रात्रि के वक्त भी लोगों को गर्मी का एहसास होता है। लेकिन विडंबना यह है कि इस भीषण गर्मी में भी विद्युत विभाग की व्यवस्थाएं लोगों के लिए संकट बन गई हैं विद्युत आपूर्ति का यह आलम है कि कब बिजली चली जाए और कब आ जाए कोई भरोसा नहीं रहा पिछले कुछ दिनों से तो दिन के वक्त बिजली आवाजाही का सिलसिला इस कदर रहता है कि लोगों की समझ में नहीं आ रहा है कि वह क्या करें क्या न करें दोपहर के वक्त बिजली चले जाने पर गरीब और मध्यम बरगी लोग जिनके घरों में एसी कूलर नहीं है वह भीषण गर्मी को कैसे बर्दाश्त करते होंगे इस बात का तो अंदाजा भी नहीं लगाया जा सकता। सवाल संपन्न लोगों का तो जिनके यहां इनवर्टर और जनरेटर जैसी सुविधाएं उपलब्ध हैं उन पर इस भीषण गर्मी का कोई असर ही नहीं होता।

अयोध्या में भगवान परशुराम का मंदिर बनाने का चाणक्य परिषद ने लिया निर्णय

संवाददाता। अयोध्या

अखिल भारतीय चाणक्य परिषद एंवम श्री श्री परशुराम सेवा ट्रस्ट की आवश्यक बैठक प्रेस क्लब सिविल लाइन अयोध्या में संपन्न हुई। बैठक के मुख्य अतिथि परिषद के राष्ट्रीय संरक्षक एवं श्री श्री परशुराम सेवा ट्रस्ट के राष्ट्रीय अध्यक्ष पंडित कृपा निधान तिवारी ने किया और संचालन जिला महामंत्री लषणधर त्रिपाठी और अध्यक्षता पूर्व प्रधान उमाशंकर तिवारी ने किया।

बैठक में परिषद के उत्थान पर विस्तार से चर्चा की गई जिसमें परिषद से युवाओं को जोड़ने एवं ब्राह्मणों के मजबूत करने की योजनाओं को मूर्त रूप देने के साथ गरीब ब्राह्मणो का सहयोग एवं परिषद की संख्या बढ़ाने के लिए युवा बिंग तैयार करने के लिए सुनील कुमार पांडे को सर्व सम्मत से युवा अध्यक्ष मनोनीत किया गया।

परिषद ने राम जन्मभूमि निर्माण समिति के अध्यक्ष नृपेद्र मिश्र को अयोध्या धाम में भगवान परशुराम जी के मंदिर को रामलला के मंदिर परिसर में बनाने हेतु ज्ञापन देने का सर्वसम्मत से निर्णय लिया गया। सर्व विदित है कि मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान राम और भगवान परशुराम का संवाद हुआ था। इसके जीवन्त संस्मरण के लिए उनका मंदिर बनाने की आवश्यकता ब्राह्मण समाज ने मानते हुए मांग की है।बैठक का संचालन लषणधर त्रिपाठी ने किया।

बैठक मे चाणक्य परिषद के प्रयाग दत्त तिवारी जिला कोषाध्यक्ष कौशल किशोर मिश्रा उमाशंकर तिवारी केपी तिवारी, अशोक कुमार तिवारी, देवेंद्र पांडे, इंद्रदेव प्रसाद चौबे, सुनील पांडेय ,डॉ दुर्गा प्रसाद तिवारी, उमा प्रसाद दुबे, शिवाकांत तिवारी, रमा पांडे ,नंदेश्वर पान्डेय ,पी डी दुबे शिव कुमार पांडे गुड़िया त्रिपाठी, गीता मिश्रा ,अजीत तिवारी, उमाशंकर मिश्र ,राज किशोर शर्मा ,देवी प्रसाद दुबे ,दिनेश पाठक, विश्वनाथ तिवारी, राजेंद्र प्रसाद मिश्र, राम सुरेंद्र मिश्र, अवधेश मिश्र, प्रदीप पाठक राजेंद्र तिवारी, जयप्रकाश आदि भारी संख्या मे परिषद के लोग उपस्थित रहे।

मतगणना के लिए प्रशिक्षित किए जाऐंगे भाजपा कार्यकर्ता

अयोध्या। चार जून को लोक सभा क्षेत्र फैजाबाद की मतगणना होगी। जिसको लेकर भारतीय जनता पार्टी ने अपनी तैयारियां पूर्ण कर ली है। प्रत्येक मतगणना टेबल तथा एआरओ टेबल पर एक-एक कार्यकर्ता नियुक्त किए गए है। मतगणना से पूर्व 3 जून को सभी को प्रशिक्षण दिया जाएगा। प्रशिक्षण लोक सभा चुनाव के सह संयोजक ओम प्रकाश सिंह व प्रो. कृष्ण मुरारी सिंह देंगे। तैयारियों को अंतिम रूप देने के लिए लोक सभा चुनाव कार्यालय पर बैठक हुई। बैठक में प्रत्याशी व सांसद लल्लू सिंह ने बताया कि मतगणना को लेकर सभी तैयारियां पूर्ण कर ली गई हैं। प्रत्येक विधान सभा में 14 मतगणना टेबल तथा एक एआरओ टेबल लगी है। प्रत्येक मतगणना टेबल पर भाजपा कार्यकर्ता नियुक्त रहेंगे। इसके अतिरिक्त अन्य व्यवस्थाओं के लिए भी कार्यकताओं को लगाया गया है। लगभग 82 कार्यकर्ता मतगणना के दौरान उपस्थित रहेंगे।

लोकसभा चुनाव संयोजक डा बांके बिहारी मणि त्रिपाठी ने बताया कि मतगणना में शामिल होने वाले कार्यकताओं को 3 जून को 5 बजे लोक सभा चुनाव कार्यालय बुलाया गया है। सभी को प्रशिक्षण दिया जाएगा। मतगणना के हर पहलू की जानकारी दी जाएगी।

जिम्मेदारों के दावों को झुठलाते नजर आये ओवरलोड मौरंग भरे वाहन, पांच पकड़े गए

संवाददाता। कालपी, जालौन

प्रशासन भले ही बालू के अवैध परिवहन न होने का दावा करे पर यह ठीक नहीं है। रविवार सुवह हाईवे से गुजर रहा बालू से भरे ओवरलोड ट्रकों का रैला हकीकत बयां कर रहा है जिनकी वजह से अन्य वाहनों का निकलना तक मुश्किल है।

बालू का अवैध परिवहन इस क्षेत्र के लिए कोई नया नहीं है बल्कि यह गोरखधंधा यहां वर्षो से चला आ रहा है हालांकि जिम्मेदार ऐसा न होने देने का दावा करते चले आ रहे हैं लेकिन उनके दावे में कोई दम नहीं हकीकत समय समय पर सामने आती ही रहती है और इस हकीकत का नजारा रविवार सुबह नगर सीमा में देखने को मिला तो प्रशासन के दावों की हकीकत लोगों के सामने आ गयी है। विदित हो कि रविवार सुबह अचानक कानपुर देहात के परिवहन एवं प्रशासनिक अधिकारियों ने वालू के अवैध परिवहन पर कार्यवाही शुरू कर दी तो अमलतास तिराहे से लेकर कानपुर देहात की सीमा तक वालू भरे ट्रकों की कतार लग गयी थी और हाईवे पर जैम की स्थित बन गई थी जिससे कानपुर की तरफजाने वाले वाहनो को काफी परेशानी हुई थी और लगभग दो घंटे तक हाईवे पर यातायात व्यवस्था के हालात खराब रहे जिससे आम लोगों को भी परेशानी उठानी पडी है लेकिन हैरत की बात यह कि बालू का अवैध परिवहन रोकने की जिम्मेदारी उठाए जिम्मेदारों को पता भी नहीं चल सका। ऐसा भी नहीं है कि खनिज विभाग बालू का अवैध परिवहन करने वालो के खिलाफ कार्यवाही नही करते हैं बल्कि वह कभी कभार आकस्मिक छापामार कर कार्यवाही करते हैं। इसी के चलते विभाग की टीम ने शनिवार की रात जोल्हूपुर हमीरपुर रोड से अवैध बालू से भरे 5 ट्रकों को पकड़कर उन्हें पुलिस अभिरक्षा में गल्ला मण्डी परिसर में खड़ा करा दिया है।

मोहम्मदी और ऊचौलिया में हुई सड़क दुर्घटनाओं में चार लोगों की मौत

●गोला शाहजहांपुर रोड पर ब्रेजा और बस की जबर्दस्त टक्कर में ड्राइवर की मौत 21 लोग घायल

●ऊचौलिया मे सवार पांच लोगों में तीन की मौके पर मौत, दो गंभीर

संवाददाता। मोहम्मदी, खीरी

शाहजहांपुर और गोला मार्ग पर गोकन के समीप ब्रेजा कार और रोडवेज की अनुबंधित बस की जोरदार टक्कर हुई जिसमें बस अनियंत्रित होकर खाई में जा गिरी बस में सभी सबार.सवारियों को तत्काल प्रभाव से सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र पहुंचाया गया जिसमें छोटे बच्चों से लेकर बूढ़े बुजुर्ग तक 21 लोगों को चोटे आई, अस्पताल में सभी का इलाज युद्ध स्तर पर जारी हुआ जिसमें 6 लोगों को जिला अस्पताल के लिए रेफर किया गया।

वहीं ब्रेजा कार के ड्राइवर प्रदीप सिंह की शाहजहांपुर जिला अस्पताल ले जाते समय मृत्यु हो गई ,घटना की सूचना पाकर उप जिला अधिकारी डॉक्टर अवनीश कुमार, पुलिस उपाध्यक्ष अरुणकुमार सिंह, प्रभारी निदेशक निरीक्षक चन्द्र शेखर सिंह दलबल के साथ मौके पर पहुंचे और घायलों को तत्काल प्रभाव से सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र पहुंचाया वही थाना ऊचौलिया में ब्रेजा कार डिवाइडर से टकराने के बाद एक बाहन से टकराई जिसमें तीन लोगों के मौके पर हो गई, दो गंभीर रूप से घायल हुए हैं। वहीं जानकारी के अनुसार कार सबार के नीद आने के कारण हुआ बडा हादसा, पुलिस ने उचौलिया और मोहम्मदी में हुई घटना में सभी गाड़ियों को अपने कब्जे में लेकर कार्रवाई शुरू कर दी है,ऊचौलिया मे ब्रेजा कार में सवार सभी लोग लखनऊ के निवासी बताये जा रहे हैं, पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेजा है।

पुलिस ने किया चोरी का खुलासा माल समेत तीन महिलाएं गिरफ्तार

फतेहपुर। तेरह दिन पूर्व शहर के आवास-विकास आबूनगर में हुई चोरी का कोतवाली पुलिस ने खुलासा करते हुए माल समेत तीन महिलाओं को पीडब्ल्यूडी तिराहा के समीप से गिरफ्तार कर लिया। उनके खिलाफ सुसंगत धाराओं में कार्रवाई कर न्यायालय भेज दिया। बताते चलें कि वांछित चल रहे चोरों की गिरफ्तारी के लिए कोतवाली पुलिस सक्रिय थी।

लगातार चोरों को गिरफ्तार किए जाने के लिए मुखबिरों का जाल बिछाया जा रहा था। मुखबिर की सूचना पर पुलिस ने शहर के पीडब्ल्यूडी तिराहा के समीप से तीन महिलाओं को गिरफ्तार कर लिया। जिन्होने आवास-विकास आबूनगर में हुई चोरी की घटना को कबूल कर लिया। उनकी निशानदेही पर पुलिस ने पीली व सफेद धातु के 275000 रूपए के जेवरात व पांच हजार रूपए नगद के अलावा तीन मोबाइल फोन बरामद किए। गिरफ्तार महिलाओं ने अपने नाम शिवानी उर्फ आलिया पुत्री राम गोपाल निवासी नई बस्ती आधारपुर थाना कोतवाली, नीलम पुत्री शिवकरन गुप्ता निवासी बरौली थाना बबेरू, राधा उर्फ सरोज पुत्री कल्लू निवासी कोराई थाना मलवां बताया। गिरफ्तारी करने वाली पुलिस टीम में प्रभारी निरीक्षक राजेंद्र सिंह, थाना कोतवाली के चौकी प्रभारी धनंजय कुमार सरोज, महिला उपनिरीक्षक प्रियंका वर्मा, हेड कांस्टेबल हरिपाल यादव, कांस्टेबल नीतेश कुमार व महिला कांस्टेबल रिंकी जादौन शामिल रहीं।

पहिया निकल जाने के कारण पटरी से उतरी मालगाड़ी, आवागमन हुआ बाधित

संवाददाता। फतेहपुर

मालगाड़ी के डिरेल होने का मामला सामने आया है। दिल्ली-हावड़ा रूट पर जा रही मालगाड़ी डाउन लाइन पर डिरेल हो गई। दरअसल, मालगाड़ी का पहिया निकलकर बाहर आ गया। इसके बाद ट्रेन की बोगियां एक-दूसरे से टकराने लगी। हालांकि, इस हादसे में किसी प्रकार के जानमाल के नुकसान की कोई रिपोर्ट नहीं है। एक्सिडेंट के कारणों की जांच शुरू कर दी गई है। मालगाड़ी का पहिया निकलने के कारण डाउनलाइन पर रेल ट्रैफिक प्रभावित हुआ है। दुर्घटना की जानकारी मिलते ही रेलवे के अधिकारी मौके पर रवाना हो गए। मालगाड़ी के डिरेल होने का यह मामला काटोघन रेलवे स्टेशन के पास आया है।

मालगाड़ी की डाउनलाइन बाधित होने की स्थिति को देखते हुए ट्रैक को जल्द से जल्द खाली कराने और ट्रैफिक को रिस्टोर करने की कोशिश की जा रही है। डीएफसीसी लाइन पर हादसा: डीएफसीसी लाइन पर रविवार की सुबह मालगाड़ी बेपटरी हो गई। दुर्घटना की जानकारी मिलते ही संबंधित विभागों के अफसर मौके पर पहुंचे और लाइन दुरुस्त कराना शुरू किया। अधिकारियों के अनुसार, लाइन पर ट्रैफिक शुरू करने में 12 घंटे का समय लग सकता है। मिली जानकारी के अनुसार, डीएफसीसी के कटोघन रेलवे स्टेशन पर डाउन लाइन से जा रही मालगाड़ी का एक वैगन सुबह 05.17 बजे हो पटरी से उतर गया। अन्य ट्रेनों को स्टेशनों पर रोका: ब्रेकवान (गार्ड वाला कोच) से 34वें वैगन के बेपटरी होने अन्य ट्रेनों को उनके स्टेशनों पर रोका गया। क्रेन की मदद अफसरों की देखरेख में राहत का काम शुरू कराया गया। प्रयागराज के अधिकारियों ने भी मौका मुआयना किया। हादसे का कारण जानने के लिए ज्वाइंट टीम को लगाया गया है।

पैथोलॉजी केंद्रों में रेट तय न होने से गरीब मरीजों का होता है शोषण

हमीरपुर। जिले में पैथोलाजी जांच केंद्रों में जांच के रेट निश्चित न होने के कारण गरीब मरीजों का जमकर शोषण हो रहा है,सात साल पहले तत्कालीन सीएमओ ने रेट निश्चित कर केंद्रों के बाहर सूची चस्पा करा दिया था मगर उनके जाने के बाद पैथोलाजिस्ट फिर पुराने ढर्रे पर आ गये हैं।

जानकारी के मुताबिक ग्रामीण क्षेत्रों से आने वाले गरीब मरीजों का इलाज के नाम पर जांचों में जमकर शोषण होता है,कोई रेट फिक्स न होने के कारण मरीजों से मनमानी पैसा वसूल किया जाता है गरीब मरीज गांवों से कर्ज लेकर इलाज कराने आता है और उसे जांच के नाम पर जमकर लूटा जाता है। डाक्टर ज्यादातर ऐसे जांचे लिखते है जो अस्पताल में नही होती है इसलिये मरीजों को मजबूरन प्रायवेट जांच केंद्रों में जांच करानी पड़ती है। यही नही पैथोलाजी केंद्रों में अनटेंड जांच कर्ता बैठे होने के कारण सही जांचे भी नही हो पाती है इसलिये मरीजों को कानपुर की शरण लेनी पड़ती है महिला व पुरुष अस्पताल में दलालों द्वारा मरीजों को गुमराह कर प्रायवेट जांच केंद्रो में लाकर खड़ा कर दिया जाता है। मजे की बात तो यह है कि सीएमओ दफ्तर के सामने ही मरीजों का शोषण होता है मगर आज तक सेहत विभाग के किसी भी अधिकारी ने इसकी जांच पड़ताल नही की है न ही जानने की कोशिश की है कि पिछले सात साल पहले तत्कालीन सीएमओ ने सभी पैथालाजिस्टों की एक आवश्यक बैठक बुलाकर रेट निश्चित कर हरेक केंद्रों में सूची चस्पा करा दी गयी थी मगर उनके जाने के बाद फिर वही ढर्रा शुरु हो गया है। अनाप शनाप रेट क्यो लिये जा रहे है। हालाकि इस मामले की शिकायत उच्चाधिकारियों से कई मर्तवा की गयी है मगर अभी तक कोई कार्यवाही नही हुई है लिहाजा गरीब मरीजों के शोषण रुकने का नाम नही ले रहा है।

मतगणना से पूर्व एसपी ने सुरक्षा व्यवस्था का किया निरीक्षण

●प्रभारी निरीक्षक ने पीस कमेटी की बैठक में लोगों से की शांति बनाए रखने की अपील

●एसपी ने अधीनस्थ कर्मियों को दिए एलर्ट मोड में रहने के निर्देश

संवाददाता। कन्नौज

सामान्य निर्वाचन लोकसभा चुनाव 2024 की मतगणना को सकुशल संपन्न कराए जाने के उद्देश्य से पुलिस अधीक्षक अमित कुमार आनंद ने मतगणना स्थल सहित अन्य चेक प्वाइंटों का निरीक्षण किया। इस दौरान उन्होंने अधीनस्थ कर्मियों को आवश्यक दिशा निर्देश दिए।

रविवार को पुलिस अधीक्षक अमित कुमार आनंद ने अपर पुलिस अधीक्षक डॉ. संसार सिंह, सदर क्षेत्राधिकारी कमलेश कुमार के साथ मतगणना स्थल मंडी समिति, चौराहों व तिराहों पर लगवाए गए बैरियर प्वाइंटों सहित चौराहों, तिराहों पर लगे सीसीटीवी कैमरों का निरीक्षण किया। इस दौरान उन्होंने अधीनस्थ कर्मियों को अलर्ट मोड पर रहने के निर्देश दिए। इस दौरान यातायात प्रभारी आफाक खान सहित तमाम कर्मी मौजूद रहे।

वहीं सामान्य निर्वाचन लोकसभा चुनाव 2024 की मतगणना के दृष्टिगत स्थानीय कोतवाली परिसर में पीस कमेटी की बैठक का आयोजन किया गया। जिसमें नगर के बुद्धिजीवियों नागरिकों व ग्राम प्रधानों को संबोधित करते हुए प्रभारी निरीक्षक जेपी शर्मा ने कहा कि मतगणना के बाद शांति व्यवस्था बनाए रखें। किसी तरह की अफवाह फैलाने वाले को बख्शा नहीं जाएगा।

रविवार को स्थानीय कोतवाली परिसर में आयोजित शांति कमेटी की बैठक को संबोधित करते हुए प्रभारी निरीक्षक जयप्रकाश शर्मा ने कहा कि आगामी 04 जून को आने वाले चुनाव परिणाम को हर किसी को सहर्ष स्वीकार करने की जरूरत है। कहा कि किसी भी प्रकार का विजय जुलूस नहीं निकला जाएगा। आतिशबाजी एवं शोर सराबा नहीं किया जाएगा। इस पर प्रतिबंध है। कहा कि चुनाव परिणाम के दिन प्रशासन की पैनी नजर रहेगी एवं पुलिस बल की गाड़ियां लगातार भ्रमण करती रहेंगी।

इस दौरान कस्बा प्रभारी रोबिन सिंह, रामाश्रम चौकी प्रभारी चंद्रभान सिंह, समधन चौकी प्रभारी राजेश प्रताप सिंह, मजपुर्वा चौकी प्रभारी विनय शर्मा व महिला उप निरीक्षक नीलम सिंह सहित शहर काजी हाफिज जुम्मन, मुनीर कुरैशी, प्रधान प्रतिनिधि मोहम्मद इरफान उर्फ राजू, सुगम दुबे, अभय चतुर्वेदी, प्रशांत कुमार, व्यापारी नेता परवेज अहमद उर्फ चंदन सहित तमाम लोग मौजूद रहे।

क्विक न्यूज

जरूरतमन्द मरीजों के लिए सदस्यों ने किया रक्तदान

फतेहपुर। इमरजेंसी केस में जिला अस्पताल में भर्ती मरीज मनोज कुमार पुत्र गोरेलाल निवासी विनोबा नगर है, मरीज पीलिया से ग्रसित है जिसके चलते मरीज को रक्त की कमी हो गई। डॉक्टर ने ए पाजिटिव की अवश्यकता बताई। जिला अस्पताल में ए पाजिटिव रक्त न होने के कारण मरीज के तीमारदार काफी परेशान थे। जानकारी सर्वफॉर ह्यूमैनिटी को होते ही तुरन्त केस वेरिफाई किया गया और सर्वफॉर ह्यूमैनिटी ग्रुप में डाला गया केस ग्रुप में डालते ही टीम के सदस्य पद्माकर यादव निवासी आवास विकास रक्तदान के लिए तैयार हो गए और जिला अस्पताल रक्तकेन्द्र पहुंचकर अपना तीसरी बार ए पाजिटिव रक्त समूह का दान किया जिससे मरीज के तीमारदार को आसानी से रक्त उपलब्ध हो सका। दूसरे केस में जिला अस्पताल लेबर रूम में भर्ती महिला मरीज रजनी पत्नी सुनील कुमार निवासी ग्राम जमलामऊ पोस्ट बेरोई है। मरीज को डिलवरी के दौरान ए पाजिटिव रक्त की आवश्यकता थी। जिला अस्पताल में चल रही रक्त की कमी के चलते ए पाजिटिव रक्त उपलब्ध न था। केस सर्वफॉर ह्यूमैनिटी ग्रुप में डालते ही देवीगंज निवासी विजय मौर्य रक्तदान के लिए तैयार हो गए और जिला अस्पताल रक्तकेन्द्र पहुंचकर महिला मरीज के लिए अपना 19 वां ए पाजिटिव रक्त का दान किया।

मतगणना के दिन अकबरपुर माती रोड पर नहीं चलेंगे वाहन

कानपुर देहात। मंगलवार को लोकसभा निर्वाचन -2024 मतगणना के दृष्टिगत अकबरपुर महाविद्यालय में निर्वाचन की मतगणना के कारण अकबरपुर माती रोड पर वाहनों का आवागमन पूर्णतः प्रतिबंधित रहेगा। मतगणना के दिन प्रातः काल 6 बजे से मतगणना की समाप्ति तक वाहन डायवर्जन व्यवस्था अकबरपुर चौराहे से माती/ मा0 न्यायालय की तरफ जाने वाले वाहन डायवर्जन व्यवस्था के अंतर्गत अकबरपुर चौराहा से बाराजोड़, नबीपुर होकर मा0 न्यायालय की ओर जाएंगे। मा0 न्यायालय माती से अकबरपुर की तरफ जाने वाले वाहन, डायवर्जन व्यवस्था के अनुरूप मा0 न्यायालय/माती तिराहा से नबीपुर, बाराजोड होकर अकबरपुर की तरफ जायेंगे। एम्बुलेन्स/108/फायर सर्विस पर यह नियम लागू नही होगा।

अब ग्राम सचिवालय में ही संचालित होंगे कम्प्यूटर

फतेहपुर। अब ग्राम प्रधान या पंचायत सचिव के घर पर या उनके किसी अन्य ठिकाने पर पंचायतीराज विभाग के कम्प्यूटर काम नहीं करेंगे बल्कि यह कम्प्यूटर प्रत्येक ग्राम सचिवालय में ही संचालित होंगे। यह कम्प्यूटर तभी काम करेंगे जब ग्राम पंचायत सहायक अपने रजिस्टर्ड मोबाइल फोन से पंचायत गेट-वे एप पर क्यूआर कोड प्रमाणित कर लागिन करेंगे। यानि ग्राम पंचायत सहायक का चेहरा देखकर ही कम्प्यूटर खुलेगा। इससे ग्राम सचिवालय में उनकी उपस्थिति भी सत्यापित होगी। पंचायती राज निदेशक अटल कुमार राय ने यह पत्र सभी जिला पंचायतीराज अधिकारियों को जारी किया है। इसमें निर्देश दिए गए हैं कि सभी पंचायत सहायक द्वारा अपने मोबाइल फोन पर पंचायत गेट-वे मोबाइल एप और पंचायत गेट-वे पोर्टल इंस्टाल करें। आदेश के मुताबिक पंचायत सहायक, एकाउंटेंट-कम-डाटा इण्ट्री आपरेटर द्वारा ही अपने रजिस्टर्ड मोबाइल फोन से पंचायत गेट-वे एप पर क्यूआर कोड प्रमाणित कर लागिन किया जा सकेगा। कम्प्यूटर सिस्टम से ही सभी भुगतान किये जा सकेंगे।

मतगणना के दौरान चौकसी बरतने की रणनीति

फतेहपुर। मतगणना से पूर्व आए हुए एक्जिट पोल को छलावा बताते हुए इंडिया गठबंधन के दलों कांग्रेस व सपा कार्यकर्ताओं ने मतगणना एजेंटों को मतगणना के दौरान चौकसी बरतने को कहा। इस दौरान उन्होंने विभिन्न टीवी चैनलों पर दिखाए जा रहे एक्जिट पोल को छलावा और विपक्ष को हतोत्साहित करने वाला बताया। रविवार को तपस्वी नगर स्थित इंडिया गठबंधन के सहयोगी दल सपा व कांग्रेस नेताओं ने समाजवादी पार्टी के वरिष्ठ नेता कपिल यादव, शेरू यादव व उ. प्र. कॉंग्रेस कमेटी अल्पसंख्यक विभाग के प्रदेश उपाध्यक्ष एवं पीसीसी सदस्य मिस्बाहुल हक, जनपदीय अल्पसंख्यक कांग्रेस विभाग के पदाधिकारियों ने मतगणना दिवस के दिन अपनायी जाने वाली प्रक्रिया पर चर्चा की। इस दौरान मतगणना अभिकर्ताओ से बबर शेर की तरह मतगणना कार्यों में नज़र रखने, मतगणना में वाली ईवीएम मशीन नंबर का क्रमांक, मतदान लेखा का मिलान, पर कडी निगाह रखने को कहा। उन्होंने कहा कि यह चुनाव लोकतंत्र को बचाने का है। चैनलों के एक्जिट पोल भ्रमित करने वाले है कार्यकर्ता को पूरे उत्साह के साथ यज्ञ में शामिल होना है। मिस्बाहुल हक ने कहा कि इक्जिट पोल का आधार उनके झूठ के दर्शन पर आधारित सत्ता के अवतारित आंकडों से जनता का लोकतंत्र और संविधान पर गहरी आस्था को हतोत्साहित करना है।

दुर्घटना में घायल युवक ने इलाज दौरान तोड़ा दम

गुरसहायगंज, कन्नौज। क्षेत्र के ग्राम पट्टी मटेना निवासी रामगिरी पुत्र सत्यनारायण द्वारा कोतवाली में दर्ज कराए गए मुकदमे में कहा गया है कि विगत 29 मई की रात्रि उसका पुत्र राहुल बाइक पर सवार होकर कमालगंज स्थित अपनी ससुराल जा रहा था। जैसे ही समधन के निकट स्थित अलीगढ़ हॉस्पिटल के सामने पहुंचा तभी अनियंत्रित गति से आ रही अल्टो कार के अज्ञात चालक ने टक्कर मार दी। जिससे उसका पुत्र राहुल गंभीर रूप से घायल हो गया। जिसे इलाज के लिए सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र ले जाया गया जहां हालत चिंताजनक होने के कारण मेडिकल कॉलेज तिर्वा रिफर कर दिया गया जहां इलाज दौरान उसके पुत्र की मृत्यु हो गई। मृतक के पिता की तहरीर पर कोतवाली पुलिस द्वारा मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू कर दी गई है।

असंतुलित ट्रैक्टर पलटने से पिता पुत्र घायल

सुमेरपुर, हमीरपुर। कस्बे से वापस लौटकर बिरखेरा जा रहा ट्रैक्टर पारा विद्युत सब स्टेशन के आगे अनियंत्रित होकर सड़क किनारे खड्ड में पलट गया। इस घटना में पिता पुत्र घायल हो गए। पुत्र का पैर टूटने पर सदर अस्पताल ले जाया गया है। बिरखेरा निवासी शंकर वाल्मीकि (45)अपने पुत्र कल्लू वाल्मीकि(16) के साथ ट्रैक्टर लेकर कस्बे में आया था। सुबह वह ट्रैक्टर लेकर गांव लौट रहे थे। तभी पारा विद्युत सब स्टेशन के आगे ट्रैक्टर अनियंत्रित होकर सड़क किनारे खड्ड में पलट गया। इस घटना में पिता पुत्र घायल हो गए। कल्लू का पैर टूट जाने से उसे सदर अस्पताल ले जाया गया। चालक शंकर को मामूली चोटे लगी हैं।

ई-ग्राम स्वराज पोर्टल पर अपलोड करना होगा भुगतान

फतेहपुर। गांव के विकास कार्यों को कराए जाने के बाद होने वाले भुगतान में अब फर्जीवाड़ा नहीं चलेगा। क्योंकि कार्यों पर जो भी खर्च होगा, उसका बिल, मस्टर रोल व वाउचर ई-ग्राम स्वराज पोर्टल पर अपलोड करना होगा। अपलोड करने के बाद ही भुगतान किया जाएगा। केंद्र-प्रदेश सरकार गांवों के विकास के लिए केंद्रीय व राज्य वित्त से करोड़ों की धनराशि देती है। यह पैसा ग्राम पंचायत के खाते में आता है। अभी तक इस पैसे को ग्राम प्रधान और सचिव डोंगल के जरिए सामग्री उपलब्ध कराने वाली फर्म को भुगतान करते हैं। इस भुगतान राशि का जिक्र पोर्टल पर तो किया जाता है लेकिन बिल वाउचर अपलोड करने की अनिवार्यता नहीं है। इसके चलते इस धनराशि से ग्राम पंचायतों में कराए जाने वाले विकास कार्यों को लेकर सवाल पर उठते रहते हैं। इस पर अंकुश लगाने के लिए शासन ने विकास कार्यों पर खर्च की गई धनराशि का बिल वाउचर भी अपलोड करने की व्यवस्था तैयार की है। पांच जून से शुरू होने जा रही इस व्यवस्था में हर काम का बिल वाउचर ऑनलाइन अपलोड करना होगा। बिल वाउचर ऑनलाइन अपलोड होगा तो लेखा परीक्षकों को आडिट करने में आसानी होगी। डीपीआरओ ने बताया कि हर बिल वाउचर या मस्टरोल को भुगतान से पूर्व अनिवार्य रूप से पोर्टल पर अपलोड करना होगा।

बांदा में विकास प्राधिकरण के नियमों का खुले आम हो रहा उल्लंघन व राजस्व हानि

संवाददाता। बांदा

उत्तर प्रदेश के बांदा जनपद में करोड़ों रुपए का राजस्व का नुकसान हो रहा है। विकास प्राधिकरण के नियमों का खुले आम उल्लंघन हो रहा है। सर्वोदय नगर चिल्ला रोड वार्ड नंबर 31 के बाबा तालाब रोड पर बगैर भू परिवर्तन किया और विकास प्राधिकरण का नक्शा बगैर पास कारये कृषि भूमि आलीशान अस्पताल बनाए जा रहे हैं इसमें विकास प्राधिकरण भी शामिल है जगह-जगह मकान बन रहे हैं, किसी में भी रिचार्जिंग के पॉइंट नहीं बन रहे तथा प्लाटिंग बगैर लेआउट पास कारये रोड बनाए और पार्क बगैर बनाए हुए करोड़ रूपीस के प्लांट बेचे रहे हैं।

यह अवैध प्लाटिंग कृषि जमीन पर बगैर भूपरिवर्तन का कार्य पूरे जनपद में धुआंधार तरीके से चल रहा है विकास प्राधिकरण कुछ भी नहीं कर रहा और स्वयं प्लाटिंग में कमीशन खा रहा है, बगैर प्राधिकरण से पास किए नक्शा के अवैध तीन-तीन खंड की बिल्डिंग तैयार हो रही है कार्य चल रहा है कोई नियमावली का पालन नहीं होगा तापमान इतना बढ़ रहा है रिचार्जिंग की कोई भी व्यवस्था नहीं हो रही है ना ही कोई पार्क के लिए जमीन छोड़ी जा रही हैं

आपको बताते चले कि कई समाजसेवियों ने इस गम्भीर मामले को लिखित रूप से सूचनार्थ जिला कलेक्टर बांदा, मुख्य सचिव ,होम सचिव,नगरी आवासीय सचिव, मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ को भेजकर, अवैध प्लाटिंग का खेल भूमाफियों द्वारा धड़ल्ले से किया जा रहा है,कृषि योग्य भूमि को आवासीय में तब्दील हुये बगैर,बेच कर अबैध बस्तियां बढ़ाई जा रही है,जबकी विकासस्पर्धिकर्ण बाँदा में निर्जीव हो चुका है भरस्टाचार्य की गंगा में गोते लगा रहा है। जिलाकलेक्टर दुर्गाशक्ति नागपाल अपना तीसरा नेत्र खोल दें तो ऐसे भूमाफिया, जेल के अंदर होंगे जो आम पब्लिक को फसा कर कृषि योग्य जमीन को प्लाट दिखा कर बेचते हैं।

मिलीभगत के चलते तालाबों में जेसीबी से हो रही खुदाई

फतेहपुर। राजस्व विभाग और पुलिस की मिलीभगत से तालाबों की खोदाई जेसीबी से कराई जा रही है। जब कि जाब कार्ड धारकों को सौ रुपये देकर उनके खाते से एक हजार रुपये निकाले जा रहे हैं। मामले में भाजपा भिटौरा मंडल के पूर्व अध्यक्ष ने मोर्चा खोल दिया है। विकास खण्ड तेलियानी की ग्राम पंचायत मिश्रामऊ में मनरेगा की गाइड लाइन खुद अपनी हकीकत बयान कर रही है। यहां पर तालाब का निर्माण धड़ल्ले से जेसीबी से किया जा रहा है लेकिन जिम्मेदार अधिकारी जांच कमेटी बनाने की बात कर रहे हैं। दो दिनों से चल रहे इस खोदाई की जानकारी ग्रामीणों ने राजस्व विभाग को दी है लेकिन कोई सुनने को तैयार ही नहीं है। ग्रामीणों का कहना है कि आखिर अब वह शिकायत करने कहां जाएं। ग्रामीणों की इस बात को लेकर भाजपा भिटौरा मंडल के पूर्व अध्यक्ष गिरजा दत्त बाजपेई ने अब अपनी ही सरकार के के खिलाफ आवाज बुलंद करने का निर्णय लिया है।

शिविर में 68 नेत्र रोगियों का किया गया परीक्षण, 17 रेफर

पुखरायां, कानपुर देहात। श्री ओमर वैश्य सेवा समिति पुखरायाँ की ओर से रविवार को सुआ बाबा मंदिर परिसर में एक नि:शुल्क नेत्र शिविर आयोजित किया गया। जिसमें दूर दूर से आए 68 मरीजों का स्वास्थ्य परीक्षण किया गया।

जिसमें उपयुक्त पाये गए 17 मरीजों को जांचोपरांत मोतियाबिंद आपरेशन के लिए चौबेपुर, कानपुर के शंकरा आई हॉस्पिटल रेफर किया गया। श्री ओमर वैश्य सेवा समिति पुखरायाँ कैंप आयोजककर्ता शारदा ओमर ने बताया कि समिति की ओर से यह 109 वाँ नेत्र शिविर आयोजित कराया गया था। इसमें शंकरा आई हॉस्पिटल चौबेपुर कानपुर की टीम के डॉ0 प्रतिष माथुर, डा0 सुष्मिता एवं फार्मासिस्ट करतिका, विशाल व राम मोहन ने कुल 68 मरीजों का शुगर लेवल, ब्लड प्रेशर की जांच की। जांच के बाद कुल 17 मरीज मोतियाबिंद आप्रेशन के लिए उपयुक्त पाये गए। चिन्हित सभी 17 मरीजों को निजी बस द्वारा शंकरा आई हॉस्पिटल चौबेपुर कानपुर पहुंचाया गया। समाज सेवी शारदा ओमर व हरी कृष्ण ओमर, गौरी शंकर ओमर ने सभी मरीजों के लिए स्वलपाहार पुडी सब्जी की व्यवस्था कराई।

लंबे समय से चिपड़ का खेल जारी, पुलिस की भूमिका पर भी उठ रहीं उंगलियां

●पुलिस के गठजोड़ के चलते युवा पीढ़ी व कमसिन बालक व छात्र बर्बादी के कगार पर

●एकांत स्थानों पर चिपड़ का धुआं उड़ाते दिखते हैं लोग

संवाददाता। गोला गोकर्णनाथ, खीरी

लम्बे समय से चिपड़ का खेल जारी है जिसमें लाल अंगौछा व सफेद पोशधारी माफिया पूरी तरह से सक्रिय होकर इस अवैध व्यवसाय का बेखौफ होकर खेल खेल रहे जिसमें पुलिस को मोटा पैसा उनके पास तक पहुचांने के बाद युवा - नौनिहालों को मंहगी दर पर चिपड की सुविधाओं को उपलब्ध कराया जाता है अपनी नाकामियों को छिपाने के लिए गांजा में बंद करने का अभियान चलाने व वांछित अपराधियों को गिरफ्तार कर उनकों गांजा में जेल भेजा जाता है गाजा भी चिपड़ माफिया पुलिस को उपलब्ध कराते हैं।

लोकसभा चुनाव से काफी पहले इस मादक पदार्थ चिपड के तमाम मामले जनपद खीरी के थाना-कोतवालियों में पहुंच कर पुलिस से अपने बालको व नौनिहालों को मादक पदार्थ चिपड के नशे का आदी बनाने वालों के खिलाफ कठोर कार्रवाई की मांग उठाई थी बाद में गोला के नगर के वरिष्ठ पत्रकार होतीलाल रस्तोगी ने मंडलाययुक्त लखनऊ मंडल लखनऊ रोशन जैकब के जनता दरबार में मामला उठाया था। बाद में लखनऊ जाकर उनके आफिस में मिलकर फिर मादक पदार्थ चिपड़ की खुले आम बिक्री जारी रहने से अवगत कराया।

जिसमें कुछ दिन तक चिपड का गोरख धंधा अपना स्वरूप बदल कर केवल जानने व परिचितों को ही मिलता था, और इधर पुलिस ने चिपड के नाम पर अभियान चलाया और गांजा में वांछित, अपराधियों को जेल भेजने और गांजा की व्यवस्था यही चिपड माफिया के माध्यम से कराने से होनी लगी।

लोकसभा चुनाव के बाद नगर के प्रमुख समाजसेवी /वरिष्ठ पत्रकार होतीलाल रस्तोगी ने तीसरी बार पुन: लखनऊ जाकर प्रमुख सचिव उत्तर प्रदेश, पुलिस महानिदेशक उत्तर प्रदेश व लखनऊ मंडल लखनऊ की मंडलायुक्त रोशन जैकब से मिलकर गांजा - चिपड की फोटो दिखाकर हकीकत पर से पर्दा उठाने व खुलासा करने का प्रयास करेंगे।

गौरतलब है कि जनपद लखीमपुर खीरी के तमाम विधालयों के बच्चों को आजकल नशे का आदी बनाने का अभियान चलाया जा रहा है और मादक पदार्थ चिपड का भाव तीन गुना बढकर तीन से पांच सौ रुपये की एक पुड़िया मिलती है और इसका कैमिकल युक्त खोल पान की दुकानों में मिलता है नशाखोर बालक पहले चिपड को खरीदते हैं बाद में वह पान की दुकानों में बिक्री होने वाला गोल को खरीदते हैं

तेज रफ्तार ट्रक की टक्कर से आटो सवार युवक घायल ट्रक चालक को दबोचा

भरुआ सुमेरपुर। नेशनल हाईवे में पशु बाजार के निकट रविवार को तेज रफ्तार से आ रहे अनियंत्रित ट्रक ने ऑटो में जोरदार टक्कर मार दी। जिससे आटो सड़क पर पलट गया। उसके पलटने से सड़क किनारे गन्ने का रस बेच रहा युवक गंभीर रूप से घायल हो गया। घटना को अंजाम देने के बाद मौके से भागने का प्रयास कर रहे ट्रक को राहगीरों ने पेट्रोल पंप के समीप दौड़कर पकड़कर पुलिस की सुपुर्द किया है। रविवार को दोपहर में तेज रफ्तार ट्रक ने पशु बाजार के समीप ऑटो में जोरदार टक्कर मार दी। इससे ऑटो अनियंत्रित होकर सड़क किनारे पलट गया और हाईवे किनारे गन्ना का रस बेच रहा कुंडौरा निवासी मोहित गंभीर रूप से घायल हो गया। इस घटना में ऑटो चालक बाल बाल बच गया। घटना को अंजाम देकर मौके से भाग रहे ट्रक चालक को लोगों ने पेट्रोल पंप के समीप जाकर दबोच कर पुलिस हवाले कर दिया।

ज्ञानार्जन के लिए स्वाध्याय आवश्यक: आनंद पुरुषार्थी

सुमेरपुर, हमीरपुर। क्षेत्र के पंधरी गांव में आर्य समाज ने दो दिवसीय वार्षिकोत्सव कार्यक्रम आयोजित किया है। जिसमें हवन यज्ञ व प्रवचन के माध्यम से विश्व कल्याण की कामना की गई। रविवार को प्रात: यज्ञ में मध्य प्रदेश नर्मदापुरम से आए आचार्य आनंद पुरुषार्थी ने वेद मंत्रों से आहुतियां दिलवाई और गुरुकुल में अध्ययन कर रहीं कस्बे की तीन बेटियों ने वेद पाठ किया। फरीदाबाद से आए पं. प्रदीप शास्त्री ने मधुर भजनों से सबका मन मोह लिया । उन्होंने साधना में आत्मसंयम, आत्मज्ञान,आत्मबल, आत्म विश्वास इन चार शब्दों की शास्त्रीय व्याख्या की । अपनी इंद्रियों व मन पर नियंत्रण होने से हमारा आत्म संयम हो जाता है इसके बाद स्वाध्याय से हमारा ज्ञान बढ़ता है फिर हमारी सांसारिक रुचि कम होकर आत्मा का बल बढ़ने से कठिन व संघर्ष के दु:ख समस्याएं हमको पर्वतवत होने पर भी राई जैसी प्रतीत होती है। परिणाम स्वरूप आत्म विश्वास में अभूतपूर्व वृद्धि होती है। जिस कार्य को करने में सांसारिक व्यक्ति को असंभव लगता है। साधक विश्वास से अलंकृत हो उसे सहज ही करने लगता है। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने अपने कालजयी ग्रंथ सत्यार्थ प्रकाश में इसका विस्तार से वर्णन किया है।

राजग को एग्जिट पोल के अनुमान से अधिक सीटें मिलेंगीः आठवले

भाषा। मुंबई

केंद्रीय मंत्री रामदास आठवले ने रविवार को कहा कि सत्तारूढ़ राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) को एग्जिट पोल में लगाए गए अनुमान से ज्यादा लोकसभा सीट मिलेंगी। आठवले ने यहां एक संवाददाता सम्मेलन को संबोधित करते हुए विश्वास जताया कि भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के नेतृत्व वाले राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) को 543 सदस्यीय लोकसभा में 400 से ज्यादा सीट मिलेंगी। एग्जिट पोल में शनिवार को अनुमान लगाया गया कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी लगातार तीसरी बार सत्ता में बने रहेंगे तथा भाजपा-नीत राजग को लोकसभा चुनाव में भारी बहुमत मिलने की उम्मीद है। इंडिया टुडे-एक्सिस माय इंडिया ने अपने सर्वेक्षण में राजग को 361-401 सीट मिलने की संभावना जताई है। उसका अनुमान है कि इंडिया गठबंधन को 131-166 सीट से संतोष करना पड़ेगा। एबीपी-सी वोटर ने भाजपा के नेतृत्व वाले गठबंधन के लिए 353-383 सीट और विपक्षी इंडिया गठबंधन के लिए 152-182 सीट का अनुमान लगाया है। टुडेज् चाणक्य ने 2019 के चुनावों की तुलना में भाजपा और उसके गठबंधन के लिए कहीं अधिक सीट मिलने की भविष्यवाणी की है। इसने भाजपा को 335 सीट और राजग को 400 सीट दी हैं। इसने विपक्षी गठबंधन को 107 सीट दी हैं।

इस लोकसभा चुनाव में भाजपा ने अपने गठबंधन के लिए 400 पार का नारा दिया था। आठवले ने कहा कि एग्जिट पोल में अनुमान लगाया गया है कि राजग 350 से 375 सीट जीतेगा, लेकिन भाजपा के नेतृत्व वाले गठबंधन को ज्यादा सीट मिलेंगी। रिपब्लिकन पार्टी ऑफ इंडिया (ए) के प्रमुख आठवले ने कहा, "महाराष्ट्र में सत्तारूढ़ महायुति 35 से 40 सीट (48 में से) जीतेगी और देश में राजग को 400 से अधिक सीट मिलेंगी।" आठवले की पार्टी राज्य में शामिल है। महाराष्ट्र में महायुति में मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे के नेतृत्व वाली शिवसेना, भाजपा और उपमुख्यमंत्री अजित पवार के नेतृत्व वाली राकांपा शामिल हैं। आठवले ने कहा कि पिछले साल राजस्थान, मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ के विधानसभा चुनाव में भाजपा को एग्जिट पोल की भविष्यवाणी से कहीं अधिक सफलता मिली थी। उन्होंने कहा, "अब एग्जिट पोल में राजग को 375 सीट मिली हैं, लेकिन सत्तारूढ़ गठबंधन 400 सीट पार कर जाएगा। आठवले ने कहा कि कांग्रेस के नेतृत्व वाले विपक्ष ने संविधान बदलने की बात कहकर दलितों के बीच भ्रम पैदा करने की कोशिश की, लेकिन राजग लोगों के बीच भ्रम दूर करने में सफल रहा है। उन्होंने दावा किया कि कांग्रेस और उसके सहयोगियों के इस शरारती अभियान का अच्छी तरह से मुकाबला किया गया और इसलिए दलितों, बहुजनों, बौद्धों और बाबासाहेब आंबेडकर के अनुयायियों ने सत्तारूढ़ गठबंधन का समर्थन किया। आठवले ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने महाराष्ट्र में 18 रैलियों को संबोधित किया और लोगों को अपनी सरकार के कामों के बारे में बताया और विश्वास जताया कि राज्य में सत्तारूढ़ गठबंधन 35 से 40 सीट जीतेगा। केंद्रीय मंत्री ने कहा कि महाराष्ट्र में सत्तारूढ़ और विपक्षी गठबंधन के बीच कड़ी टक्कर है, लेकिन महायुति जीतेगी। उन्होंने कहा कि आरपीआई (ए) के कार्यकर्ताओं ने महायुति उम्मीदवारों का समर्थन किया और पूरे दिल से प्रचार किया।

लोकसभा चुनाव के परिणामों को लेकर चिंता नहीं, अच्छे नतीजों की आशाः राव

हैदराबाद। तेलंगाना के पूर्व मुख्यमंत्री के. चंद्रशेखर राव ने एग्जिट पोल (चुनाव बाद सर्वेक्षण) को ज्यादा महत्व नहीं देते हुए रविवार को कहा कि नतीजे जो भी हो, पार्टी लोगों के लिए काम करती रहेगी। लोकसभा चुनाव के अंतिम चरण में मतदान संपन्न होने के बाद आए कई एग्जिट पोल (चुनाव बाद सर्वेक्षण) में भारत राष्ट्र समिति (बीआरएस) के खराब प्रदर्शन का अनुमान जताया गया है। तेलंगाना राज्य के दसवें स्थापना दिवस के अवसर पर पार्टी के नेताओं और कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए राव (जिन्हें केसीआर के नाम से भी जाना जाता है) ने कहा कि हाल में हुए विधानसभा चुनाव में बीआरएस की हार एक अस्थाई झटका है। राज्य की कांग्रेस सरकार पर निशाना साधते हुए राव ने दावा किया कि वर्तमान सरकार के प्रति लोगों में इतना गुस्सा है कि असंतोष जल्द ही बम की तरह फट जाएगा। उन्होंने कहा, संसदीय चुनाव में क्या होगा? इसका (नतीजा) कुछ भी हो सकता है। किसी ने कहा था कि हमें (बीआरएस) 11 सीट मिलेंगी। किसी ने कहा कि हमें एक ही सीट मिलेगी। किसी ने कहा कि हमें दो से चार सीट मिलेंगी। यह तो जुआ हो गया। देखते हैं कि क्या होता है। मेरी बस यात्रा (चुनाव प्रचार) के दौरान जनता में अच्छी प्रतिक्रिया देखने को मिली है। राव ने कहा, परिणाम जो भी हो, बीआरएस तेलंगाना के लिए सुरक्षा कवच है। उन्होंने कहा कि विधानसभा चुनाव में बीआरएस को मिली हार एक अस्थाई झटका है, जो किसी भी राजनीतिक दल को अपनी यात्रा के दौरान लग सकता है। उन्होंने विश्वास जताया कि बीआरएस अगले विधानसभा चुनाव में फिर से सत्ता में आएगी। राव ने दावा किया कि सत्ता में आने के छह महीने बाद भी कांग्रेस सरकार ने उद्योग, आईटी और कृषि जैसे क्षेत्रों के लिए एक भी नीति की घोषणा नहीं की है।

अब एग्जिट पोल पर ऐतराज

ममता बोलीं-इसका कोई महत्व नहीं, दो महीने पहले ही घर में तैयार किया गया

भाषा। कोलकाता

पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने रविवार को कहा कि एग्जिट पोल के अनुमान जमीनी हकीकत से मेल नहीं खाते क्योंकि ए दो महीने पहले ही घर पर ही गढ़े गए थे।उन्होंने दावा किया कि ऐसे एग्जिट पोल का कोई मूल्य नहीं है और उन्होंने इन्हें दिखाने के लिए मीडिया की आलोचना की। उन्होंने टीवी9 बांग्ला को बताया, हमने देखा कि 2016, 2019 और 2021 में एग्जिट पोल कैसे किए गए थे। कोई भी भविष्यवाणी सच नहीं हुई। बनर्जी ने कहा, ए एग्जिट पोल कुछ लोगों ने दो महीने पहले मीडिया के लिए घर पर ही बनाए थे। इनका कोई महत्व नहीं है। उन्होंने कहा कि उनकी रैलियों में लोगों की प्रतिक्रिया एग्जिट पोल की भविष्यवाणियों से मेल नहीं खाती। मुख्यमंत्री ने कहा, जिस तरह से भाजपा ने ध्रुवीकरण की कोशिश की और झूठी सूचना फैलाई कि मुसलमान अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति और अन्य पिछड़ा वर्ग का आरक्षण छीन रहे हैं, मुझे नहीं लगता कि मुसलमान भाजपा को वोट देंगे। और, मुझे लगता है कि माकपा और कांग्रेस ने पश्चिम बंगाल में भाजपा की मदद की। अधिकांश एग्जिट पोल ने भविष्यवाणी की है कि राज्य में भाजपा को तृणमूल कांग्रेस से अधिक सीटें मिलेंगी। विपक्षी गठबंधन इंडिया की संभावनाओं पर उन्होंने कहा, अखिलेश (यादव), तेजस्वी (यादव), स्टालिन (एम.के. स्टालिन) और उद्धव (ठाकरे) अच्छा प्रदर्शन करेंगे। क्षेत्रीय दल हर जगह अच्छा प्रदर्शन करेंगे। उनसे यह भी पूछा गया कि क्या पश्चिम बंगाल में माकपा और कांग्रेस के साथ उनके संबंधों से केंद्र में इंडिया के सत्ता में आने पर सरकार में शामिल होने की उनकी संभावनाओं पर असर पड़ेगा।बनर्जी ने कहा, मुझे नहीं लगता कि अखिल भारतीय स्तर पर कोई बाधा आएगी, जब तक कि सीपीआई (एम) हस्तक्षेप न करे। उन्होंने कहा, देखिए, हर क्षेत्रीय पार्टी का अपना सम्मान होता है, और सभी से बात करने के बाद, अगर हमें आमंत्रित किया जाता है तो हम जाएंगे। हम अन्य क्षेत्रीय दलों को भी साथ लेकर चलेंगे। लेकिन पहले चुनाव के नतीजे आ जाने दीजिए। इस बीच, प्रदेश भाजपा अध्यक्ष सुकांत मजूमदार ने दावा किया कि उनकी पार्टी पश्चिम बंगाल में कम से कम 25 सीटें जीतेगी, लेकिन मुझे असली खुशी तब होगी जब 30 सीटें मिलें।उन्होंने कहा, जब मैंने ढाई साल पहले प्रदेश अध्यक्ष का पद संभाला था, तो मैंने कहा था कि हम पश्चिम बंगाल में लोकसभा चुनावों में 25 का आंकड़ा पार करेंगे।

केरल में एलडीएफ, कांग्रेस ने अनुमानों को निराधार बताया

तिरुवनंतपुरम। केरल में सत्तारूढ़ वाम दल और कांग्रेस ने एग्जिट पोल (चुनाव बाद सर्वेक्षण) को रविवार को निराधार बताकर खारिज कर दिया। एग्जिट पोल के अनुमानों में कहा गया है कि भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) नीत राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) केंद्र में सत्ता में आएगा और केरल में अपना खाता खोलेगा। एलडीएफ ने एग्जिट पोल को संदिग्ध और राजनीति से प्रेरित भी बताया जबकि कांग्रेस ने कहा कि एग्जिट पोल पर यकीन करने की जरूरत नहीं है क्योंकि पूर्व में भी ए गलत साबित हुए हैं। एलडीएफ और कांग्रेस दोनों ने राज्य में लोकसभा चुनाव में अच्छा प्रदर्शन करने का विश्वास जताया है। दोनों का कहना है कि भाजपा केरल में अपना खाता नहीं खोलेगी। एलडीएफ के संयोजक और माकपा के वरिष्ठ नेता ई पी जयराजन ने कहा कि एग्जिट पोल के अनुमान कुछ वैज्ञानिक निष्कर्ष या प्रयोगों के जरिए नहीं निकाले गए, यह जन भावनाओं पर आधारित नहीं हैं और यह चुनावों का उचित विश्लेषण करने के बाद का अवलोकन नहीं है। उन्होंने एक टीवी चैनल से कहा, मुझे संदेह है कि यह राजनीति से प्रेरित है। सभी एग्जिट पोल में ऐसा दिखाया गया है, जिसे भाजपा अब तक जो कहती रही है (चुनाव नतीजों के बारे में), उसे ही दोहराया गया है। इससे यह और ज्यादा संदिग्ध बन जाता है। कांग्रेस के वरिष्ठ नेता रमेश चेन्नीथला ने भी ऐसे ही विचार व्यक्त किए हैं।

एग्जिट पोल कॉरपोरेट खेल और फर्जीवाड़ा हैः संजय राउत

मुंबई। शिवसेना (उद्धव बालासाहेब ठाकरे) सांसद संजय राउत ने रविवार को एग्जिट पोल को कॉरपोरेट खेल और फर्जीवाड़ा करार दिया और दावा किया कि एग्जिट पोल जारी करने वाली मीडिया कंपनियों पर दबाव था। संवाददाताओं से बातचीत के दौरान संजय राउत ने दावा किया कि विपक्षी गठबंधन इंडिया (इंडियन नेशनल डेवलपमेंटल इन्क्लूसिव अलायंस) 543 सदस्ईय सदन (लोकसभा) में 295 से 310 सीट जीतेगा और सरकार बनाएगा। राउत ने यह भी कहा कि उन्हें एग्जिट पोल की जरूरत नहीं है क्योंकि वे धरातल पर काम करते हैं और मूक लहर से परिचित हैं। शनिवार को जारी हुए एग्जिट पोल में अनुमान जताया गया कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी लगातार तीसरी बार सत्ता में बने रहेंगे। इसमें भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के नेतृत्व वाले राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) को लोकसभा चुनाव में भारी बहुमत मिलने का अनुमान व्यक्त किया गया है। राउत ने दावा किया, इन मीडिया कंपनियों पर बहुत दबाव है।

घुसपैठ की फिराक में हैं 70 आतंकवादी

जम्मू-कश्मीर के पुलिस महानिदेशक रश्मि रंजन स्वैन के अनुसार नियंत्रण रेखा (एलओसी) के पार सक्रिय है गुट

श्रीनगर। जम्मू-कश्मीर के पुलिस महानिदेशक (डीजीपी) रश्मि रंजन स्वैन के अनुसार नियंत्रण रेखा (एलओसी) के पार स्थित लॉन्च पैड पर सक्रिय लगभग 60 से 70 आतंकवादी भारत में घुसपैठ की फिराक में हैं। इसके साथ ही स्वैन ने कहा कि घटती क्षमता के बावजूद पाकिस्तान जम्मू-कश्मीर में लोगों और सामग्री को भेजने से बाज नहीं आ रहा है। सीमावर्ती इलाकों में मौजूदा सुरक्षा हालात के समग्र आकलन से अवगत कराने के साथ ड्रोन के जरिए हथियार समेत अन्य सामग्री गिराए जाने की चुनौतियों का जिक्र करते हुए स्वैन ने कहा कि भारतीय सुरक्षाकर्मियों की दृढ़ प्रतिबद्धिता के कारण दुश्मन का सफल होना बहुत मुश्किल है। जम्मू-कश्मीर पुलिस और अपराध जांच विभाग (सीआईडी) का दोहरा कार्यभार संभाल रहे स्वैन ने पीटीआई-भाषा को दिए एक साक्षात्कार में कहा, हमारे सुरक्षा साझेदारों के साथ बैठकों में हम आम तौर पर इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि यह एक तथ्य है कि प्रतिद्वंद्वी या दुश्मन ने लोगों और सामग्री को भेजने पर रोक नहीं लगाई है। उन्होंने क्षेत्र में पश्चिमी पड़ोसी देश से आए विदेशी आतंकवादियों की मौजूदगी का भी जिक्र किया। इन प्रयासों का मुकाबला करने में कुछ सफलता मिलने की बात को स्वीकार करते हुए स्वैन ने कहा कि खतरा बना हुआ है। उन्होंने कहा कि क्षेत्र को अस्थिर करने की दुश्मन की क्षमता को और कम करने के लिए निरंतर प्रयासों की आवश्यकता है। उन्होंने कहा, मैं कहूंगा कि दुश्मन का इरादा वही है, क्षमता निश्चित रूप से कम हुई है, लेकिन कभी-कभार व्यवस्था को झकझोरने और आपको अस्थिर करने की क्षमता उसमें अब भी मौजूद है। स्वैन ने कहा कि किसी एक समय पर संभवतः पाएंगे कि अलग-अलग स्थानों पर पांच या छह के समूहों में लगभग 60-70 लोग हमारी तरफ भेजे जाने का इंतजार कर रहे हैं। सेना, अर्धसैनिक बलों और जम्मू-कश्मीर पुलिस के बीच तालमेल का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा, हम पूरी तरह प्रतिबद्ध हैं कि हम दुश्मन की सफलता को मुश्किल बना देंगे।

पशु बलि संबंधी टिप्पणी पर विवाद से श्रद्धालु हो रहे चिंतितः केरल मंदिर

कथित पशु बलि को लेकर कर्नाटक के उपमुख्यमंत्री डी. के. शिवकुमार की टिप्पणी से विवाद

कन्नूर (केरल)। केरल के एक मंदिर के तंत्री ने रविवार को कहा कि कथित पशु बलि को लेकर कर्नाटक के उपमुख्यमंत्री डी. के. शिवकुमार की टिप्पणी से विवाद पैदा हो रहा है और इससे श्रद्धालुओं के मन में चिंता उत्पन्न हो रही है। यहां कथित तौर पर हुई पशु बलि को लेकर संबंधित तंत्री के नाम का उल्लेख हाल में शिवकुमार ने किया था। कन्नूर जिले के तालिपरंबा में स्थित राजराजेश्वरी मंदिर के तंत्री या मुख्य पुजारी ई पी कुबेरन नंबूदिरीपाद ने कहा कि अनावश्यक विवाद के कारण बहुत से श्रद्धालु पूछ रहे हैं कि क्या मंदिर में ऐसा कुछ हुआ है जिसका जिक्र शिवकुमार ने किया है। उन्होंने कहा, इससे श्रद्धालुओं के मन में चिंता पैदा हो रही है। अगर यह चर्चा जारी रही तो इससे ऐसी स्थिति पैदा हो सकती है जिससे मंदिर के नाम और प्रतिष्ठा को नुकसान हो सकता है। शिवकुमार ने शनिवार को स्पष्ट किया कि पशुओं की बलि देने वाला शत्रु भैरवी यज्ञ नामक अनुष्ठान केरल के राजराजेश्वर मंदिर में नहीं, बल्कि पास के एक निजी स्थान पर किया गया।उन्होंने शनिवार को संवाददाताओं से कहा, मैं आपको बता रहा हूं, मंदिर के प्रति मेरे मन में बहुत सम्मान है, [8230]मैंने यह नहीं कहा कि मंदिर में कोई अनुष्ठान हुआ था। मंदिर में कुछ भी नहीं हुआ है, मैं जानता हूं। यह मंदिर के पास ही एक निजी स्थान है, जहां कुछ हुआ है। मुझे यही जानकारी मिली है। सटीक स्थान के बारे में पूछे जाने पर उन्होंने कहा, मैं खुलासा नहीं करना चाहता। उस (अनुष्ठान) में शामिल एक पुजारी ने मुझे कुछ जानकारी दी है। मैं राजराजेश्वर मंदिर गया हूं[8230], मुझे पता है कि पहले मंदिर में कुछ प्रथाएं थीं, लेकिन अब वे मंदिर में नहीं हो रही हैं। लेकिन उनमें से कुछ लोग इसे (बाहर) करने की कोशिश कर रहे हैं। उन्हें (सरकार को) जांच करने दें। मुझे बहुत सी चीजें पता हैं, लेकिन मैं चीजों का खुलासा नहीं करना चाहता। उनका स्पष्टीकरण तब आया जब केरल सरकार ने कहा कि राज्य के उत्तरी हिस्से में किसी मंदिर के पास कोई पशु बलि नहीं दी गई, जैसा कि शिवकुमार ने दावा किया था। केरल सरकार ने यह भी कहा कि वह इस बात की जांच कर रही है कि क्या राज्य में कहीं और ऐसी कोई घटना हुई है जिसके बारे में शिवकुमार ने कहा है। इसने कहा कि हालांकि शुरुआती खबरों के मुताबिक ऐसी कोई घटना दक्षिणी राज्य में नहीं हुई है।मंदिर की प्रबंध समिति ने शुक्रवार को शिवकुमार के आरोपों का खंडन किया था और उनके दावों को 100 फीसदी झूठा बताया था। विशेष शाखा ने उसी दिन राज्य पुलिस प्रमुख को एक रिपोर्ट भी दी जिसमें कहा गया है कि केरल में किसी मंदिर के पास किसी पशु की बलि देने का कोई सबूत नहीं है, जैसा कि कर्नाटक के उपमुख्यमंत्री ने दावा किया है। शिवकुमार ने बृहस्पतिवार को दावा किया था कि उन्हें, कर्नाटक के मुख्यमंत्री सिद्धरमैया और राज्य की कांग्रेस सरकार को निशाना बनाकर केरल के राजराजेश्वरी मंदिर के पास शत्रु भैरवी यज्ञ किया गया।
कर्नाटक प्रदेश कांग्रेस प्रमुख शिवकुमार ने किसी का नाम लिए बिना आरोप लगाया था कि राज्य में कुछ राजनीतिक लोग इसे करवा रहे हैं और इसके लिए अघोरियों से सलाह ली जा रही है।

चलती ट्रेन से उतरने के प्रयास में महिला कांस्टेबल की मौत

शाहजहांपुर। एक महिला पुलिसकर्मी की ट्रेन से कटकर मौत हो गई। महिला कॉन्स्टेबल मुरादाबाद जिले में विभागीय कार्य से गई थी। वापसी में लखनऊ की ओर जाने वाली जनसेवा एक्सप्रेस से शाहजहांपुर आ रही थी।
रोजा रेलवे स्टेशन पर ट्रेन जब धीमी हुई तो महिला कांस्टेबल अचानक ट्रेन से कूद पड़ी। शारीरिक संतुलन सही न रहने के कारण महिला कांस्टेबल रेलवे लाइन व प्लेटफार्म के बीच में गिरकर गंभीर रूप से घायल हो गई। हादसे की सूचना मिलती जीआरपी पुलिस ने मौके पर पहुंच कर घायल महिला कांस्टेबल को उपचार के लिए मेडिकल कॉलेज रवाना किय। उपचार के दौरान महिला कांस्टेबल ने दम तोड़ दिया। जिला कानपुर की तहसील बिल्हौर की मूल निवासी महिला कांस्टेबल किरण कटियार की उम्र 36 वर्ष थी। उसकी ससुराल कन्नौज जनपद के इंदलगढ़ थाना क्षेत्र के कचाटी गांव में हुई थी। वह वर्तमान में जिला शाहजहांपुर की चौक कोतवाली में पिछले कई महीनो से तैनात थी। पुलिस अधीक्षक अशोक कुमार मीणा ने बताया महिला कांस्टेबल किरन विसरा लेकर मुरादाबाद में दाखिल करने गई थी। किन्हीं कारणों से विसरा दाखिल नहीं हो पाया।महिला पुलिसकर्मी जननायक एक्सप्रेस ट्रेन में बैठकर वापस शाहजहांपुर के लिए चल दी। ट्रेन का स्टाफशाहजहांपुर स्टेशन पर न होने के कारण रोजा स्टेशन पर जैसे ही ट्रेन की गति धीमी हुई। तभी महिला कांस्टेबल ट्रेन से उतारने का प्रयास किया। इसी दौरान हादसा हो गया।मृतका कॉन्स्टेबल की रिश्तेदार उसकी शिनाख्त कर परिजनों और रिश्तेदारों को सूचना दी गई है और सबको पोस्टमार्टम के लिए भेजा गया है।

भाजपा ने डायमंड हार्बर लोकसभा सीट के कई केंद्रों पर पुनर्मतदान की मांग की

कोलकाता। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) ने पश्चिम बंगाल के दक्षिण 24 परगना जिले की डायमंड हार्बर लोकसभा सीट के कई मतदान केंद्रों पर पुनर्मतदान की मांग करते हुए आरोप लगाया है कि शनिवार को मतदान प्रक्रिया के दौरान गड़बड़ी की गई थी। पश्चिम बंगाल के मुख्य निर्वाचन अधिकारी (सीईओ) को एक जून को लिखे पत्र में भाजपा नेता शिशिर बाजोरिया ने कहा कि उनकी पार्टी के कई बूथ एजेंट को बाहर निकाल दिया गया, सीसीटीवी कैमरे मतदान कक्ष के बजाय अन्य दिशा में लगे पाए गए और मतदाताओं को बूथ तक पहुंचने से रोका गया। पत्र में कहा गया है, डायमंड हार्बर लोकसभा क्षेत्र के भाजपा उम्मीदवार अभिजीत दास (बॉबी) की ओर से हम आपसे कई मतदान केंद्रों पर पुनर्मतदान की अनुमति देने का अनुरोध करते हैं। भाजपा द्वारा बजबज, फाल्टा, महेशतला, डायमंड हार्बर, बिष्णुपुर, सतगछिया और मेटियाब्रुज विधानसभा क्षेत्रों के मतदान केंद्रों पर पुनर्मतदान की मांग की गई। तृणमूल कांग्रेस के मौजूदा सांसद अभिषेक बनर्जी डायमंड हार्बर से दोबारा चुनाव लड़ रहे हैं।पश्चिम बंगाल में सातवें और अंतिम चरण के तहत नौ लोकसभा सीट के लिए हुए चुनाव में शनिवार को 73.79 प्रतिशत मतदान हुआ।

भाजपा सांसद रामकृपाल यादव पर हमले के सिलसिले में एक व्यक्ति हुआ गिरफ्तार

पटना। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के सांसद रामकृपाल यादव के काफिले पर यहां हमले के सिलसिले में एक व्यक्ति को रविवार को गिरफ्तार किया गया। यह जानकारी पुलिस ने दी। पुलिस ने बताया कि आरोपी की पहचान मसौढ़ी निवासी विकास यादव के रूप की गई है। उन्होंने बताया कि फरार आठ अन्य आरोपियों को पकड़ने के लिए एक विशेष टीम गठित की गई है। यादव ने आरोप लगाया कि उनके पाटलिपुत्र लोकसभा क्षेत्र में मतदान खत्म होने के करीब एक घंटे बाद राष्ट्रीय जनता दल (राजद) समर्थकों ने उन पर और उनके काफिले पर हमला किया। उन्होंने दावा किया कि पटना के मसौढ़ी इलाके में शाम करीब साढ़े सात बजे हुए हमले में उनके कुछ समर्थक घायल भी हुए हैं। बिहार के उपमुख्यमंत्री सम्राट चौधरी ने हमले में शामिल लोगों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की मांग की। चौधरी ने संवाददाताओं से कहा, यह घटना बेहद निंदनीय है। जिस तरह से हमारे सांसद के काफिले पर राजद समर्थकों ने हमला किया, उससे पता चलता है कि लालू प्रसाद की पार्टी केवल हिंसा में विश्वास करती है।

पेज 1 का शेष

मोदी...

प्रधानमंत्री को बताया गया कि कैसे राष्ट्रीय आपदा मोचन बल (एनडीआरएफ) की टीम ने लोगों को बचाने, हवाई मार्ग से उन्हें निकालने और सड़क साफ करने का काम चलाया। बयान में कहा गया कि केंद्रीय गृह मंत्रालय राज्य सरकारों के साथ नियमित संपर्क में है।बयान के अनुसार, मोदी ने कहा कि केंद्र सरकार चक्रवात से प्रभावित राज्यों को पूर्ण समर्थन देना जारी रखेगी। प्रधानमंत्री की अध्यक्षता में शीर्ष नौकरशाहों ने इन बैठकों में हिस्सा लिया। प्रधानमंत्री विश्व पर्यावरण दिवस बड़े पैमाने पर मनाने की तैयारियों की समीक्षा के लिए भी एक बैठक में शामिल होने वाले हैं। विश्व पर्यावरण दिवस पांच जून को मनाया जाता है। लोकसभा चुनाव शुरू होने से बहुत पहले मोदी ने नई सरकार के लिए 100 दिन का एजेंडा तैयार करने के वास्ते विभिन्न सरकारी मंत्रालयों को काम सौंपा था। उन्होंने अपनी मंत्रिपरिषद से पहले 100 दिनों के लिए कार्यक्रमों को प्राथमिकता देने के लिए कहा है।

भाजपा...

नेतृत्व में कुछ राजनीतिक दल, कुछ नागरिक समाज समूहों और गैर सरकारी संगठनों के साथ मिलकर चुनावी प्रक्रिया को कमजोर करने का प्रयास कर रहे हैं। उन्होंने कहा, भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस और उनके इंडिया गठबंधन सहयोगियों और कुछ प्रेरित नागरिक समाज समूहों और गैर सरकारी संगठनों के नेतृत्व में राजनीतिक दलों के एक वर्ग द्वारा बार-बार किए जा रहे प्रयासों के आलोक में, हमें आज ईसीआई से मिलना पड़ा। भारत की मजबूत चुनावी प्रक्रिया के खिलाफ उनके प्रयास हमारे लोकतांत्रिक संस्थानों पर सीधा हमला है। बैठक के दौरान, भाजपा प्रतिनिधिमंडल ने चुनावी प्रक्रिया की अखंडता सुनिश्चित करने के उद्देश्य से चार प्रमुख अनुरोधों को रेखांकित किया। गोयल ने कहा कि, उन्होंने मतगणना प्रक्रिया में शामिल सभी अधिकारियों को निर्धारित प्रक्रियाओं से पूरी तरह परिचित होने और चुनाव आयोग के सभी प्रोटोकॉल का सख्ती से पालन करने की आवश्यकता पर जोर दिया। इसके अतिरिक्त, उन्होंने मतगणना और परिणामों की घोषणा दोनों के दौरान चुनावी प्रक्रिया की सुरक्षा की गारंटी के महत्व पर प्रकाश डाला। गोयल ने चुनाव आयोग से चुनावी प्रक्रिया को कमजोर करने के व्यवस्थित प्रयासों को पहचानने और उनका समाधान करने और ऐसी गतिविधियों के लिए जिम्मेदार लोगों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई करने का भी आग्रह किया। निर्वाचन सदन में इंडिया ब्लॉक की बैठक के बाद मीडिया को जानकारी देते हुए, कांग्रेस नेता अभिषेक सिंघवी ने कहा कि यह तीसरी बार है कि विपक्षी नेताओं के एक प्रतिनिधिमंडल ने आम चुनाव के दौरान चुनाव आयोग का दौरा किया और अन्य बातों के अलावा, अधिकारियों से यह सुनिश्चित करने का आग्रह किया कि डाक इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीनों (ईवीएम) के परिणाम घोषित होने से पहले मतपत्रों की गिनती की जाती है और उनके परिणाम घोषित किए जाते हैं। सलमान खुर्शीद, डी राजा, समाजवादी पार्टी नेता राम गोपाल यादव, संजय यादव, नासिर हुसैन और सलमान खुर्शीद के साथ चुनाव आयोग पहुंचे। सीताराम येचुरी भी अन्य नेताओं के साथ चुनाव आयोग के दफ्तर पहुंचे। सिंघवी ने कहा, यह इस प्रक्रिया के दौरान चुनाव आयोग का दौरा करने वाला तीसरा बहुदलीय प्रतिनिधिमंडल है... हमने दो-तीन प्रमुख मुद्दों पर चुनाव आयोग के साथ चर्चा की। सबसे महत्वपूर्ण था डाक मतपत्रों की गिनती करना और सबसे पहले नतीजे घोषित करना। यह बहुत स्पष्ट है वैधानिक नियम बताया गया है, जो विशेष रूप से कहता है कि आपको पहले डाक मतपत्र लेना चाहिए। उन्होंने कहा, हमारी शिकायत यह है कि इस दिशानिर्देश को नजरअंदाज कर दिया गया है। उन्होंने इस प्रथा को निरस्त कर दिया है। इंडिया गुट के नेताओं ने चुनाव आयोग से अपने अधिकारियों को निर्देश देने का अनुरोध किया कि उन्हें दिशानिर्देशों का पालन करना चाहिए। भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (मार्क्सवादी) के महासचिव सीताराम येचुरी ने कहा कि उन्होंने चुनाव पैनल से यह सुनिश्चित करने का आग्रह किया है कि उसके अपने दिशानिर्देशों को लागू किया जाए, जिसमें यह सुनिश्चित करना शामिल है कि ईवीएम की नियंत्रण इकाइयों को सीसीटीवी-निगरानी वाले गलियारों के माध्यम से ले जाया जाए और वर्तमान का सत्यापन किया जाए।

फिर जेल...

शनिवार को आए एग्जिट पोल में अनुमान जताया गया है कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी लगातार तीसरी बार सत्ता में आएंगे और राजग को भारी बहुमत मिलने की संभावना है। केजरीवाल ने पार्टी नेताओं और कार्यकर्ताओं से कहा, वे चार जून को सरकार नहीं बना रहे हैं। ये एग्जिट पोल आपको अवसाद में ले जाने का खेल हैं। इससे पहले, उन्होंने अपने समर्थकों के लिए एक भावनात्मक संदेश साझा किया था और उनसे 1 जून को 21 दिन की अंतरिम जमानत समाप्त होने के बाद तिहाड़ जेल में आत्मसमर्पण करते समय अपना ख्याल रखने को कहा था। एक्स (पूर्व में ट्विटर) पर एक पोस्ट में आप संयोजक ने कहा, माननीय सुप्रीम कोर्ट के आदेश पर मैं 21 दिनों के लिए चुनाव प्रचार के लिए निकला। मैं माननीय सर्वोच्च न्यायालय का बहुत आभारी हूं। आज मैं तिहाड़ जाकर सरेंडर करूंगा। मैं दोपहर 3 बजे घर से निकलूंगा। सबसे पहले मैं राजघाट जाऊंगा और महात्मा गांधी को श्रद्धांजलि अर्पित करूंगा। वहां से मैं हनुमान जी का आशीर्वाद लेने कनॉट प्लेस स्थित हनुमान मंदिर जाऊंगा। और वहां से पार्टी कार्यालय जाकर सभी कार्यकर्ताओं और पार्टी नेताओं से मुलाकात करूंगा। वहां से मैं फिर तिहाड़ के लिए निकलूंगा। एक्स पर अपने पोस्ट में उन्होंने आगे कहा, आप सभी अपना ख्याल रखें। मैं जेल में तुम सबका ख्याल रखूंगा। अगर आप खुश हैं तो आपका केजरीवाल भी जेल में खुश होगा। आप मुख्यालय में अपने संबोधन में केजरीवाल ने कहा, मैं वापस जेल जा रहा हूं, इसलिए नहीं कि मैं भ्रष्टाचार में शामिल था, बल्कि इसलिए जा रहा हूं क्योंकि मैंने तानाशाही के खिलाफ आवाज उठाई थी। मुझे सुप्रीम कोर्ट ने 21 दिन की (राहत) दी थी। ये 21 दिन अविस्मरणीय थे। मैंने एक मिनट भी बर्बाद नहीं किया। मैंने देश को बचाने के लिए अभियान चलाया। आम आदमी पार्टी महत्वपूर्ण नहीं है, देश पहले है।

अरुणाचल में..

आठ बार के विधायक चामलिंग अपने पैतृक नामची जिले की पोकलोक कामरंग सीट पर सिक्किम क्रांतिकारी मोर्चा के भोज राज राय से 3,063 वोटों से हार गए। राय को 8,037 वोट मिले जबकि चामलिंग को 4,974 वोट मिले। पोकलोक कामरंग विधानसभा सीट पर अर्जुन राय (भाजपा) और संजू राय (सीएपी-एस) को क्रमशः 739 और 691 वोट मिले। पांच बार के पूर्व सीएम नामचेयबुंग विधानसभा क्षेत्र से एसकेएम के राजू बासनेट से 2,256 वोटों से हार गए। बासनेट को 7,195 वोट मिले जबकि चामलिंग को 4,939 वोट मिले। सिक्किम में विधानसभा चुनाव जीतने के बाद मनोनीत मुख्यमंत्री प्रेम सिंह तमांग ने कहा, (एसडीएफ नेता) पवन कुमार चामलिंग 2019 में पूरी तरह से हार गए लेकिन यह एक लोकतंत्र है।

ऐसे तो...

अगले 15 दिनों के भीतर पूरा किया जाना चाहिए। अदालत ने निर्देश दिया, सुनवाई की अगली तारीख 29 जुलाई पहले ही तय हो चुकी है, इसलिए उम्मीद है कि अध्यक्ष और समिति की जरूरत की सभी चीजें और आवश्यकताएं उससे पहले ही पूरी तरह से काम करने की स्थिति में होंगी।

तपते मुंगेशपुर...

अपने चार दोस्तों के साथ नंगे पैर खेल रही आठ साल की लड़की वर्षा के चेहरे पर मुस्कान थी और उसने कहा, गर्मी की छुट्टियां शुरू होने के बाद यह पहली बार है जब मैं दोपहर में खेलने आई हूं। साथ में खेल रहे एक अन्य 13 वर्षीय लड़के ने कहा, पापा लोहार हैं, इतनी गर्मी में पसीने में भीगे रहते हैं। एक पिता और पुत्र की जोड़ी, जिसमें 65 वर्षीय अरमान और 27 वर्षीय सुभाष शामिल हैं, जिनकी अपनी कबाड़ की दुकान है। वे रोजाना गर्मी, धूल और बारिश का सामना करते हुए अपनी दुकान में पंखे के बिना 12 घंटे लगातार काम करते हैं। जब दोनों से पूछा गया कि वे लू से बचने के लिए बिना किसी सावधानी के ऐसी परिस्थितियों में काम कर रहे हैं तो उन्होंने कहा, पापी पेट का सवाल है। बारिश में चारपाई पर लेटे 20 साल के सुरेश ने बताया कि बीच में 15 दिनों तक पानी की आपूर्ति बंद थी और उस समय उनका एकमात्र सहारा खेतों में लगे ट्यूबवेल का पानी था। उन्होंने आगे कहा कि पिछले 3 दिनों में पानी की आपूर्ति पटरी पर आ गई है लेकिन सुबह के समय पानी अभी भी केवल 2 घंटे ही आता है। दो बच्चों की माँ ने अपने बच्चे को दूध पिलाने की अपनी तकलीफें साझा कीं।

अरुणाचल के लोगों ने प्रधानमंत्री मोदी के योगदान का कर्ज चुकाया : खांडू

भाषा। ईटानगर

अरुणाचल प्रदेश के मुख्यमंत्री पेमा खांडू ने रविवार को विधानसभा चुनावों में भाजपा की भारी जीत को ऐतिहासिक बताया और कहा कि चार जून को जब लोकसभा चुनाव के नतीजे घोषित होंगे तो यह लहर देश के अन्य हिस्सों में भी फैलेगी। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) रविवार को लगातार तीसरी बार अरुणाचल प्रदेश में सत्ता में लौटी और उसने 60 सदस्ईय विधानसभा में 46 सीटों पर जीत हासिल की जबकि विपक्षी कांग्रेस को करारी शिकस्त झेलनी पड़ी जिसे सिर्फ एक सीट मिली। उन्होंने कहा, यह भाजपा और पूरे अरुणाचल प्रदेश के लिए एक ऐतिहासिक अवसर है। अरुणाचल प्रदेश के लोगों ने घोषणा की है कि वे चाहते हैं कि भाजपा अगले पांच साल तक सत्ता में रहे। इस बार जनादेश 2019 से भी ज्यादा है। 2019 के विधानसभा चुनाव में भाजपा ने 41 सीटें जीती थीं, जबकि इस बार हमने 46 सीटें जीती हैं। राज्य में विधानसभा चुनाव के लिए रविवार को वोटों की गिनती हुई। मुक्तो विधानसभा क्षेत्र से खांडू निर्विरोध विजई हुए। भाजपा के नौ अन्य उम्मीदवारों ने भी निर्विरोध जीत दर्ज की। खांडू ने कहा, राज्य के लोगों ने प्रधानमंत्री (नरेन्द्र मोदी) के योगदान का कर्ज चुकाया है... राज्य में भाजपा नीत राजग शासन के तहत हुआ विकास राज्य में पार्टी की जीत का प्रमुख कारक है। मुख्यमंत्री ने कहा कि भाजपा नीत केंद्र सरकार के तहत अरुणाचल प्रदेश में हुआ विकास राज्य में पार्टी की जीत का प्रमुख कारक है। उन्होंने संवाददाताओं से कहा, भाजपा ने अपनी जीत का सिलसिला उगते सूरज की भूमि (अरुणाचल) से शुरू किया है और यह सिलसिला पूरे देश में फैलेगा, जिसे लोग चार जून को देखेंगे।

खांडू ने अरुणाचल प्रदेश में फिर खिलाया कमल

ईटानगर। खेल और संगीत के शौकीन पेमा खांडू पिछले कुछ वर्षों मे अरुणाचल प्रदेश मे एक बड़े नेता के रूप मे उभरे है, विशेषकर 2016 मे पैदा हुए उस संवैधानिक संकट के बाद जिसके कारण राज्य मे राष्ट्रपति शासन लगाना पड़ा था।खांडू कुशल चुनावी रणनीतिकार के रूप मे अपनी छवि बनाने मे भी सफल रहे है। अपनी रणनीति की बदौलत ही उन्होंने इस पूर्वोत्तर राज्य मे कमल (भाजपा का चुनाव चिह्न) फिर से खिलाया है। भाजपा ने अरुणाचल प्रदेश मे लगातार तीसरी बार सत्ता मे वापसी करते हुए रविवार को 60 सदस्ईय विधानसभा मे 46 सीट जीतकर बहुमत हासिल कर लिया। खांडू की राजनीतिक यात्रा एक व्यक्तिगत त्रासदी के बीच शुरू हुई। उनके पिता एवं पूर्व मुख्यमंत्री दोर्जी खांडू का 2011 मे एक हेलीकॉप्टर दुर्घटना मे निधन हो गया था। पेमा खांडू वर्ष 2000 मे कांग्रेस मे शामिल हुए और विभिन्न पदो पर रहे। वह जून 2011 मे अपने पिता के निर्वाचन क्षेत्र मुक्तो से कांग्रेस उम्मीदवार के रूप मे विधानसभा उपचुनाव मे निर्विरोध चुने गए। पेमा खांडू मुख्यमंत्री नबाम तुकी की सरकार मे जल संसाधन विकास और पर्यटन मंत्री बने थे। जनवरी 2016 मे उस संवैधानिक संकट के बाद उनके नेतृत्व का दायरा तेजी से बढ़ा था।

अरुणाचल में भाजपा की सभी चार महिला उम्मीदवारों ने जीत दर्ज की

ईटानगर। अरुणाचल प्रदेश विधानसभा चुनाव में भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) की ओर से मैदान में उतारी गई सभी चार महिला उम्मीदवारों ने जीत दर्ज की है। विधानसभा चुनाव में कुल आठ महिला उम्मीदवार मैदान में थीं। इनमें से चार भाजपा की ओर से, तीन कांग्रेस की ओर से और एक निर्दलीय उम्मीदवार थी। पूर्व मुख्यमंत्री कलिखो पुल की पत्नी दासंगलू पुल ने अंजॉ जिले की हयूलियांग सीट पर निर्विरोध जीत दर्ज की। उन्होंने इस निर्वाचन क्षेत्र से लगातार तीसरी बार जीत हासिल की। पुल ने पहली बार 2016 में इस निर्वाचन क्षेत्र से उपचुनाव जीता था, जब उस वर्ष नौ अगस्त को उनके पति की मृत्यु हो गई थी। उन्होंने 2019 में भी यह सीट जीती थी।पूर्व विधायक जाम्बे की पत्नी ताशी त्से रिंग लामू ने लुमला सीट।,531 मतों के अंतर से जीती। इससे पहले, उन्होंने दो नवंबर, 2022 को दिल का दौरा पड़ने से अपने पति की मृत्यु के बाद पिछले साल फरवरी में निर्वाचन क्षेत्र के लिए उपचुनाव जीता था। खोंसा पश्चिम सीट पर भाजपा की एक और उम्मीदवार चकत अबोह ने 804 वोटों से जीत दर्ज की। अबोह ने पहली बार 2019 में उपचुनाव में यह सीट जीती थी। उनके पति एनपीपी के तिरोंग अबोह की एनएससीएन उग्रवादियों ने उसी साल 21 मई को नतीजों की घोषणा से एक दिन पहले हत्या कर दी थी। न्याबी जिनी दिरची ने इस बार बसर विधानसभा क्षेत्र में मौजूदा विधायक गोकर बसर को 1,791 मतों के अंतर से हराया है।

शिक्षा मंत्री तेदिर की हार

ईटानगर। अरुणाचल प्रदेश के शिक्षा मंत्री एवं याचुली के विधायक तबा तेदिर की हार को भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के लिए एक झटका माना जा रहा है। भाजपा ने रविवार को अरुणाचल प्रदेश की 60 सदस्ईय विधानसभा में 46 सीट जीतकर बहुमत हासिल कर लिया और लगातार तीसरी बार सत्ता में वापसी की। वह राकांपा उम्मीदवार टोको तातुंग से 228 मतो के मामूली अंतर से हार गए। तेदिर ने 2019 के विधानसभा चुनावों से राजनीति में कदम रखा था, जब वह निर्वाचन क्षेत्र से निर्विरोध चुने गए थे। राजीव गांधी विश्वविद्यालय के राजनीति विज्ञान के एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. नानी बाथ ने कहा कि तेदिर की हार का कारण यह है कि ईसाइयों ने उनके खिलाफ वोट दिया है।

पुरी पटाखा विस्फोट: मृतकों की संख्या बढ़कर 13 हुई

भुवनेश्वर। ओडिशा के पुरी में पटाखों के ढेर मे विस्फोट की घटना मे मरने वालो की संख्या बढ़कर 13 हो गई है। एक आधिकारिक विज्ञप्ति मे यह जानकारी दी गई।उन्होंने बताया कि फिलहाल पुरी, भुवनेश्वर और कटक के विभिन्न अस्पतालो मे कुल 17 लोग उपचाराधीन है।विशेष राहत आयुक्त कार्यालय द्वारा जारी एक बयान मे कहा गया कि घायलो मे से दो की रविवार सुबह मौत हो गई, जबकि दो अन्य ने दोपहर को दम तोड़ दिया।पुरी मे 29 मई की रात भगवान जगन्नाथ की चंदन यात्रा उत्सव के दौरान पटाखो के ढेर मे हुए विस्फोट मे 30 लोग घायल हो गए थे।

उत्कर्ष बैंक का 900वां आउटलेट खुला

मुंबई। उत्कर्ष स्मॉल फाइनेंस बैंक लिमिटेड ने खुंटी, रांची, झारखंड में बैंक के 900वें आउटलेट के उद्घाटन की घोषणा की। यह मील का पत्थर व्यापक विस्तार का हिस्सा है, जिसमें आज बिहार, झारखंड और उत्तर प्रदेश में 7 नए आउटलेट खोले गए हैं। इसके साथ ही,अब बैंक झारखंड में 81 बैंकिंग आउटलेट्स और पूरे देश में कुल 903 आउटलेट्स का संचालन करता है। अब खुंटीए रांची के ग्राहक बैंक के विभिन्न उत्पादों और सेवाओं का लाभ उठा सकेंगे। उत्कर्ष स्मॉल फाइनेंस बैंक लिमिटेड के प्रबंध निदेशक और सीईओ गोविंद सिंह ने कहा कि हमारे लिए एक ऐतिहासिक दिन है।

आइस मेक का शुद्ध लाभ 65.24 प्रतिशत बढ़ा

नई दिल्ली। आइस मेक रेफ्रिजरेशन लिमिटेड , अभिनव शीतलन समाधानों की अग्रणी प्रदाता और भारत में 50 से अधिक प्रकार के रेफ्रिजरेशन उपकरणों की एक प्रमुख निर्माता, ने अपने शुद्ध लाभ में 65.24न की उल्लेखनीय वृद्धि की घोषणा की है, जो पिछले वित्त वर्ष की इसी अवधि में 8.63 करोड़ रुपये की तुलना में 14.27 करोड़ रुपये तक पहुंच गई है। वित्त वर्ष 24 के लिए कंपनी का तिमाही समेकित राजस्व 22.61 प्रतिशत बढ़कर 140.14 करोड़ रुपये पर पहुंच गया, जबकि पिछले वित्त वर्ष की समान अवधि में यह 114.28 करोड़ रुपये था। अध्यक्ष और प्रबंध निदेशक चंद्रकांत पटेल ने कहा कि चौथी तिमाही और वित्तीय वर्ष 2024 में हमारा प्रदर्शन, मजबूत बाजार मांग, कुशल लागत प्रबंधन रणनीतियों और भौगोलिक विस्तार से प्रेरित है, जो रेफ्रिजरेशन उद्योग में नवाचार और उत्कृष्टता के प्रति हमारी प्रतिबद्धता का प्रमाण है।

मई में जम्मू-कश्मीर में 1.5 लाख से अधिक पर्यटक आए

भदेरवाह (जम्मू कश्मीर)। मई मे जम्मू-कश्मीर के डोडा जिले के भदेरवाह मे 1.5 लाख से अधिक पर्यटक आए जबकि उत्तरी मैदानी इलाको मे भीषण गर्मी और रिकॉर्ड तोड़ तापमान दर्ज किया गया। अधिकारियो ने रविवार को यह जानकारी दी। उन्होने बताया कि आशापति और कैलाश हिमनद से निकलने वाली और भदेरवाह से होकर बहने वाली नील गंगा नदी, हलोनी, पुनेजा, थनहला, हल्यान और शरेखी जैसे आधा दर्जन से अधिक जल निकाय पर्यटको को आकर्षित कर रहे है।

नकली पाउडर पर बड़ी कार्रवाई

कानपुर। कानपुर में अधिकारियों ने नकली टैल्कम पाउडर बनाने वालों के खिलाफ महत्वपूर्ण कार्रवाई की। दिल्ली के पटियाला हाउस कोर्ट के जिला न्यायाधीश द्वारा आर्यनवेद कॉस्मेस्यूटिकल्स -निमसन की शिकायत पर दी गई एकपक्षीय निषेधाज्ञा के आधार परए कानूनी टीम ने जांच एजेंसियों और स्थानीय पुलिस की मदद से मित्तल प्रोडक्ट्स-सिपानी के परिसर पर छापा मारा। इस ऑपरेशन का सावधानीपूर्वक दस्तावेजीकरण किया गया और कैमरे में कैद किया गया, जिसके परिणाम स्वरूप 10 लाख रुपए से अधिक मूल्य के नकली सामान जब्त किए गए। यह कदम व्यापार जगत को कड़ा संदेश देता है कि संरक्षित उत्पादों की नकल करने पर सख्त कानूनी परिणाम भुगतने होंगे।

जनता के भरोसे व कार्यकर्ताओं की कड़ी मेहनत से मिली भारी जीत: सीएम तमांग

भाषा। गंगटोक

सिक्किम क्रांतिकारी मोर्चा (एसकेएम) के प्रमुख एवं मुख्यमंत्री प्रेम सिंह तमांग ने राज्य विधानसभा चुनाव में रविवार को पार्टी की शानदार जीत का श्रेय एसकेएम कार्यकर्ताओं की कड़ी मेहनत और उनकी सरकार के प्रति लोगों के भरोसे को दिया। एसकेएम रविवार को लगातार दूसरी बार सिक्किम में सत्ता में लौटी। उसने 32-सदस्ईय विधानसभा में 31 सीट पर जीत दर्ज की। पार्टी की शानदार जीत के बाद मुख्यमंत्री तमांग ने पार्टी समर्थकों और सिक्किम के मतदाताओं को बधाई दी। उन्होंने गंगटोक के पलजोर स्टेडियम में एक सभा में कहा, यह लोगों के उस प्यार और विश्वास की वजह से है जिसे हम पिछले पांच साल सरकार में रहते हुए बरकरार रखने में कामयाब रहे हैं। इसके अलावा पार्टी कार्यकर्ताओं ने कड़ी मेहनत की। अब हम पांच साल और सिक्किम के लोगों के लिए अपना शत प्रतिशत दे सकते हैं। तमांग ने रहेनोक और सोरेंग-चाकुंग निर्वाचन क्षेत्रों से जीत हासिल की।तमांग ने कहा, आपके अडिग समर्थन से हम इस ऐतिहासिक जीत की ओर की ओर पहुंचे, यह सत्य और लोगों की इच्छा की जीत है। हमारा सिक्किम समुदाय अतीत की नकारात्मकता और विभाजनकारी विचारधाराओं से ऊपर उठ चुका है। एसकेएम प्रमुख ने विशेष रूप से पहली बार मतदान करने वाले लोगों का आभार व्यक्त किया, जो देश के विभिन्न हिस्सों से सत्तारूढ़ पार्टी के पक्ष में अपना वोट डालने के लिए आए थे। तमांग ने भविष्य की प्राथमिकताएं तय करते हुए कहा कि अगले पांच वर्षों में राज्य सरकार का ध्यान सभी लोगों की प्रगति और समृद्धि पर रहेगा। उन्होंने कहा, गरीब माताओं के कल्याण के लिए अम्मा योजना जैसी हमारी पिछली उपलब्धियां हमारी प्रतिबद्धता को दर्शाती हैं। यह जीत हमारे प्रिय लोगों खासकर सबसे कमजोर लोगों से मिले आशीर्वाद और समर्थन का प्रमाण है। एसकेएम ने 2019 में 17 सीट जीती थीं और सिक्किम डेमोक्रेटिक फ्रंट (एसडीएफ) को सत्ता से हटा दिया था, जो लगातार 25 साल तक राज्य में सत्ता में रही थी। सिक्किम के पूर्व मुख्यमंत्री और एसडीएफ प्रमुख पवन कुमार चामलिंग ने पोकलोक-कामरंग और नामचेयबुंग विधानसभा सीट से चुनाव लड़ा और उन्हें रविवार को दोनों ही सीट पर हार का सामना करना पड़ा।

बारफंग विधानसभा सीट पर बाईचुंग भूटिया की हार

गंगटोक। भारतीय फुटबॉल टीम के पूर्व कप्तान और सिक्किम डेमोक्रेटिक फ्रंट (एसडीएफ) के उपाध्यक्ष बाईचुंग भूटिया रविवार को नामची जिले के बारफंग विधानसभा क्षेत्र से एसकेएम के रिक्शल दोरजी भूटिया से हार गए। सिक्किम क्रांतिकारी मोर्चा (एसकेएम) के उम्मीदवार को 8,358 वोट मिले, जबकि बाईचुंग भूटिया को 4,012 वोट मिले। बारफंग निर्वाचन क्षेत्र मे सिटीजन एक्शन पार्टी - सिक्किम के उम्मीदवार दादुल लेप्चा को 656 वोट मिले, जबकि भाजपा उम्मीदवार ताशी दादुल भूटिया को केवल 298 वोट मिले। सिक्किम विधानसभा चुनाव से पहले बाईचुंग भूटिया एसडीएफ में शामिल हो गए थे।

उड़ानों के बढ़ने के साथ साफ हवा में विमान में कंपन की घटनाएं बढ़ी

भाषा। नई दिल्ली

अधिक से अधिक विमानों के उड़ान भरने के साथ ही साफ हवा में टर्बुलेंस (विमान में कंपन) की घटनाएं भी अधिक देखने को मिल रही हैं। ऐसी घटनाएं पिछले कुछ दशकों में जलवायु परिवर्तन के कारण बहुत बढ़ गई हैं, और एयरलाइंस वायुमंडलीय विक्षोभ से आने वाली दिक्कतों के प्रभाव को कम करने में जुटी हुई हैं। लंदन से सिंगापुर जाने वाली सिंगापुर एयरलाइंस की एक उड़ान में 20 मई को गंभीर वायुमंडलीय विक्षोभ (टर्बुलेंस) का अनुभव हुआ। इसमें एक यात्री की मौत हो गई और 70 से अधिक लोग घायल हो गए। इस घटना की जांच हालांकि अभी जारी है, लेकिन इसने विशेष रूप से जलवायु परिवर्तन और साफ हवा में वायुमंडलीय विक्षोभ (सीएटी) की घटनाओं की ओर ध्यान खींचा है। हाल के हफ्तों में ऐसी अन्य घटनाएं भी हुई हैं। आमतौर पर जब बादल नहीं होते हैं, और टर्बुलेंस के कारण अदृश्य होते हैं। इनका पता लगाना विमान में पायलटों और रडार के लिए भी मुश्किल होता है, ऐसी घटनाओं को सीएटी कहा जाता है। ब्रिटेन के ईस्ट एंग्लिया विश्वविद्यालय में जलवायु परिवहन के प्रोफेसर मनोज जोशी ने कहा कि जलवायु परिवर्तन के कारण सीएटी में बदलाव हो सकता है। दशकों में सीएटी में होने वाली तीव्र वृद्धि जलवायु परिवर्तन के कारण हो सकती है। उन्होंने पीटीआई-भाषा को बताया, अब सीएटी के बारे में अधिक पता चलने की एक वजह यह भी है कि 40 साल पहले की तुलना में अब उड़ानों की संख्या बहुत अधिक है। एयर इंडिया एक्सप्रेस से जब यह पूछा गया कि क्या वह उड़ानों में टर्बुलेंस के दौरान अपनी मौजूदा प्रक्रिया पर फिर से विचार करने की योजना बना रही है, दुनियाभर में हुई घटनाओं से जलवायु परिवर्तन के कारण इसका संकेत मिलता है।

ओडिशा में कम से कम 12 लोकसभा सीट, 110 विस सीट जीतेंगे: बीजद

भाषा। भुवनेश्वर

ओडिशा में सत्तारूढ़ बीजू जनता दल (बीजद) ने रविवार को दावा किया कि पार्टी ओडिशा में 147 विधानसभा सीट में से कम से कम 110 सीट जीतकर दो-तिहाई बहुमत के साथ सरकार बनाएगी। बीजद ने कहा कि वह इस राज्य की 21 लोकसभा सीट में से कम से कम 12 सीट जीतेगी।ओडिशा में भाजपा को 15 लोकसभा सीट मिलने का पूर्वानुमान जताने वाले एग्जिट पोल को खारिज करते हुए बीजद ने कहा कि राज्य के लिए एग्जिट पोल 2014 और 2019 के चुनावों में गलत साबित हुए हैं और यह प्रवृत्ति इस बार भी जारी रहेगी। बीजद प्रवक्ता सस्मित पात्रा ने कहा, हम विधानसभा में दो-तिहाई बहुमत के साथ राज्य में सत्ता बरकरार रखने के लिए पूरी तरह तैयार हैं। 2014 और 2019 की तरह इस बार भी एग्जिट पोल गलत साबित होंगे। उन्होंने कहा, हमारे सर्वेक्षणों, विश्लेषण और जमीनी स्तर से मिली प्रतिक्रिया के आधार पर हमें कम से कम 12 लोकसभा सीट और 110 विधानसभा सीट जीतने की उम्मीद है... हम राज्य में एक मजबूत और स्थिर सरकार बनाएंगे। एग्जिट पोल ने ओडिशा में भाजपा को 15 और बीजद को पांच सीट दी हैं। बीजद के वरिष्ठ नेता वी के पांडियन ने सोशल मीडिया एक्स पर एक पोस्ट में कहा,"सबने देखा है कि कुछ राष्ट्रीय स्तर के संगठनों द्वारा वातानुकूलित कमरों में बैठकर किए गए एग्जिट पोल कितने गलत होते हैं। वर्ष 2024 के एग्जिट पोल पिछले एग्जिट पोल की पुनरावृत्ति मात्र होंगे। बीजद विधायक पद्मनाभ बेहरा ने कहा, एग्जिट पोल सटीक परिणाम नहीं होते। हम बहुत अच्छा प्रदर्शन करेंगे और राज्य में सरकार बनाएंगे। नवीन पटनायक नौ जून को मुख्यमंत्री पद की शपथ लेंगे। बीजद सांसद मानस मंगराज ने एक्स पर पोस्ट किया, एग्जिट पोल चाहे जो भी हों, मुझे पूरा विश्वास है कि जनता ने हमारी ईमानदारी, कड़ी मेहनत और समर्पण को स्वीकार किया है।

तेलंगाना में विधान परिषद उपचुनाव में भारत राष्ट्र समिति की जीत

भाषा। हैदराबाद

तेलंगाना में विपक्षी दल भारत राष्ट्र समिति (बीआरएस) ने रविवार को महबूबनगर स्थानीय प्राधिकार निर्वाचन क्षेत्र से तेलंगाना विधान परिषद के उपचुनाव में जीत हासिल की। बीआरएस उम्मीदवार नवीन कुमार रेड्डी को 762 वोट मिले, जबकि कांग्रेस उम्मीदवार एम जीवन रेड्डी को 653 वोट मिले। एक निर्दलीय उम्मीदवार को एक वोट मिला। उपचुनाव में डाले गए कुल वैध मतों की संख्या।,416 रही। पिछले साल विधानसभा चुनाव में करारी हार के बाद बीआरएस के लिए उपचुनाव में जीत को मनोबल बढ़ाने वाला माना जा रहा है। उपचुनाव के नतीजों को सत्तारूढ़ कांग्रेस के लिए झटका माना जा रहा है, क्योंकि महबूबनगर मुख्यमंत्री ए रेवंत रेड्डी का गृह जिला है। उपचुनाव के लिए मतदान 28 मार्च को हुआ था। हालांकि, मतों की गिनती दो अप्रैल को होनी थी, लेकिन लोकसभा चुनाव के लिए आदर्श आचार संहिता लागू होने के कारण इसे दो जून तक के लिए टाल दिया गया था।

बंगाल के संदेशखालि में महिलाएं पुलिस से भिड़ीं

कोलकाता। लोकसभा चुनाव संपन्न होने के 24 घंटे से भी कम समय में रविवार को पश्चिम बंगाल के संदेशखालि में महिलाओं और पुलिस के बीच झड़प हो गई। ए झड़प तब हुई, जब वहां पहुंची पुलिस ने पुलिसकर्मियों पर हमले के सिलसिले में एक व्यक्ति को हिरासत में लिया। एक वरिष्ठ पुलिस अधिकारी ने कहा कि संदेशखालि क्षेत्र के अगरहाटी गांव में स्थानीय महिलाओं ने त्वरित कार्य बल (आरएएफ) के जवानों के साथ हाथापाई की, पेड़ों की टहनियां गिराकर सड़कें जाम कर दीं। उन्होंने बताया कि पुलिस शनिवार रात उन पर हमला करने के आरोपी कुछ लोगों की तलाश में गांव पहुंची थी। बशीरहाट जिले के एक पुलिस अधिकारी ने पीटीआई-भाषा को बताया, हमने किसी को गिरफ्तार नहीं किया है, लेकिन स्थानीय महिलाओं ने विरोध प्रदर्शन शुरू कर दिया। हमारी कुछ महिला सहकर्मी घायल हैं। हम विरोध-प्रदर्शन करने वाली महिलाओं से बात करने और सड़कों से अवरोध हटाने की कोशिश कर रहे हैं। उन्होंने बताया कि स्थानीय महिलाओं ने हिरासत में लिए गए व्यक्ति को छुड़ाने का प्रयास किया, लेकिन उसे विफल कर दिया गया। अधिकारी ने कहा, हम स्थिति को नियंत्रण में लाने की कोशिश कर रहे हैं। यहां बड़ी संख्या में आरएएफ, त्वरित प्रतिक्रिया दल (क्यूआरटी) और पुलिसकर्मी मौजूद हैं।

हैदराबाद अब तेलंगाना और आंध्र प्रदेश की साझा राजधानी नहीं रहा

भाषा। हैदराबाद

देश के सबसे व्यस्त महानगरों में शुमार हैदराबाद रविवार से तेलंगाना और आंध्र प्रदेश की साझा राजधानी नहीं रहा। आंध्र प्रदेश पुनर्गठन अधिनियम, 2014 के अनुसार, दो जून से हैदराबाद केवल तेलंगाना की राजधानी होगा। वर्ष 2014 में आंध्र प्रदेश के विभाजन के समय हैदराबाद को 10 वर्षों के लिए दोनों राज्यों की साझा राजधानी बनाया गया था। दो जून, 2014 को तेलंगाना अस्तित्व में आया था। आंध्र प्रदेश पुनर्गठन अधिनियम में कहा गया है, नियत तिथि (दो जून) से, मौजूदा आंध्र प्रदेश राज्य में हैदराबाद, 10 वर्षों की अवधि के लिए तेलंगाना राज्य और आंध्र प्रदेश राज्य की साझा राजधानी होगा। इसमें कहा गया है, उप-धारा (1) में निर्दिष्ट अवधि की समाप्ति के बाद, हैदराबाद तेलंगाना राज्य की राजधानी होगा और आंध्र प्रदेश राज्य के लिए एक नई राजधानी होगी। फरवरी 2014 में संसद में आंध्र प्रदेश पुनर्गठन विधेयक पारित होने के बाद दो जून 2014 को तेलंगाना राज्य का गठन हुआ। तेलंगाना राज्य के गठन की मांग दशकों से की जा रही थी। तेलंगाना के मुख्यमंत्री ए. रेवंत रेड्डी ने पिछले महीने अधिकारियों से कहा था कि वे दो जून के बाद हैदराबाद में सरकारी गेस्ट हाउस लेक व्यू जैसी इमारतों को अपने कब्जे में ले लें, जिन्हें 10 साल की अवधि के लिए आंध्र प्रदेश को दिया गया था।

अग्निकुल की नज़र 2025 तक उपग्रहों को लॉन्च करने पर है : रविचंद्रन

भाषा। नई दिल्ली

अग्निबाण सब-ऑर्बिटल टेक्नोलाजी डेमोंस्ट्रेटर (एसओआरटीईडी) की सफल परीक्षण उड़ान के बाद चेन्नई का अंतरिक्ष स्टार्ट-अप अग्निकुल कॉसमॉस अगले साल की शुरुआत में उपग्रहों का प्रक्षेपण शुरू करने की उम्मीद कर रहा है। अग्निकुल के सह-संस्थापक और मुख्य कार्यकारी अधिकारी (सीईओ) श्रीनाथ रविचंद्रन ने कहा कि 3डी-प्रिंटेड सेमी क्रायोजेनिक इंजन और रॉकेट उन ग्राहकों के लिए त्वरित समाधान प्रदान करेंगे जो अपने उपग्रहों के लिए अनुकूलित प्रक्षेपण वाहन प्राप्त करने में सक्षम होंगे। अग्निबाण रॉकेट के वाणिज्यिक प्रक्षेपण के बारे में पूछे जाने पर रविचंद्रन ने कहा, मैं कहूंगा कि नौ से 12 महीने लगेंगे। हम संभवत: इस वित्तीय वर्ष के अंत तक या अगले वित्तीय वर्ष के आरंभ तक का लक्ष्य लेकर चल रहे है। अग्निबाण सब-ऑर्बिटल टेक्नोलाजी डेमोंस्ट्रेटर की पहली परीक्षण उड़ान 30 मई को हुई, जो 66 सेकंड तक चली जो चार असफल प्रयासों के बाद मिली सफल थी। अग्निकुल कॉसमॉस 2017 में भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी), मद्रास रिसर्च पार्क में स्थापित एक अंतरिक्ष क्षेत्र का स्टार्ट-अप है। अग्निकुल कॉसमॉस के अन्य सह-संस्थापकों में परिचालन विशेषज्ञ मोइन एसपीएम और आईआईटी मद्रास में प्रोफेसर तथा राष्ट्रीय दहन अनुसंधान एवं विकास केंद्र के प्रमुख सत्यनारायण चक्रवर्ती शामिल थे।

क्विक न्यूज

कांग्रेस ने कर्नाटक में होने वाले एमएलसी चुनाव के लिए उम्मीदवारों की घोषणा की

बेंगलुरु। कांग्रेस ने कर्नाटक मे 13 जून को होने वाले द्विवार्षिक विधान परिषद (एमएलसी) चुनाव के लिए रविवार को अपने सात उम्मीदवारो की सूची जारी की। सत्रह जून को 11 सदस्यो की सेवानिवृत्ति के कारण चुनाव आवश्यक हो गए थे। कांग्रेस ने कर्नाटक के विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्री एन.एस. बोसराजू और मुख्यमंत्री सिद्धरमैया के बेटे डॉ. यतींद्र सिद्धरमैया को मैदान में उतारा है। अन्य उम्मीदवारों में वसंत कुमार, के. गोविंदराज, इवान डिसूजा, बिलकिस बानो और जगदेव गुट्टेदार का नाम शामिल है। पार्टी ने पूर्व मुख्यमंत्री जगदीश शेट्टार के इस्तीफे के कारण खाली हुई सीट पर एमएलसी उपचुनाव के लिए बसनगौड़ा बदरली के नाम की भी घोषणा की। पिछले साल के विधानसभा चुनाव में टिकट न मिलने पर भाजपा से बगावत करने के बाद शेट्टार कुछ समय के लिए कांग्रेस मे शामिल हो गए थे। शेट्टार ने 2023 मे कांग्रेस के टिकट पर विधानसभा चुनाव लड़ा और हार गए लेकिन पार्टी ने उन्हे एमएलसी बनाया। इस साल की शुरुआत मे, वह भाजपा में वापस चले गए और कांग्रेस के मृणाल हेब्बालकर के खिलाफ बेलगाम (बेलगावी) निर्वाचन क्षेत्र से भाजपा के टिकट पर लोकसभा चुनाव लड़ रहे है।

मोदी सुनिश्चित करेंगे कि बदलती विश्व व्यवस्था से भारत को लाभ मिले : लेखक अमीश

नई दिल्ली। लोकसभा चुनावों में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का पहली बार खुलकर समर्थन कर रहे लेखक और पूर्व राजनयिक अमीश ने कहा कि यदि भारत बदलती विश्व व्यवस्था से लाभ उठाना चाहता है तो उसे सही नेतृत्व मिलना जरूरी है। अमीश ने पीटीआई-भाषा से बातचीत में कहा कि हम एक ऐसे महत्वपूर्ण युग में रह रहे है जहां बहुत सी चीजे फिर से लिखी जाएंगी और भारत को इसका अधिकतम लाभ उठाना चाहिए। वर्तमान में अपने वृत्तचित्र राम जन्मभूमि टेपल: द रिटर्न ऑफ स्प्लेन्डिड सन की सफलता का आनंद ले रहे है। अमीश ने पीटीआई-भाषा को बताया, एक बहुत ही सुंदर उर्दू दोहा है, लम्हो ने खता की, सदियों ने सजा पाई। यदि इस समय हमें वह सही नेतृत्व नही मिला जो यह सुनिश्चित कर सके कि विश्व व्यवस्था मे परिवर्तन से भारत को लाभ मिले, तो हमे दशको तक इसका खामियाजा भुगतना पड़ेगा। उन्होने कहा, अगले 5-10 वर्षो मे विश्व व्यवस्था पुनः व्यवस्थित हो जाएगी... इस समय हमारे लिए एक ऐसा नेता होना लाभदायक होगा जो भारत की भलाई के लिए इस अंतरराष्ट्रीय खेल को खेल सके। उन्होंने वर्तमान सरकार की सराहना करते हुए कहा कि वह पश्चिमी शक्तियों के दबाव का सामना करने के लिए काफी मजबूत है। अपनी बात को पुष्ट करने के लिए उन्होंने उदाहरण दिया कि किस प्रकार भारत ने यूक्रेन के साथ सैन्य संघर्ष के दौरान रूस पर प्रतिबंधों के बावजूद वहां से तेल आयात करना जारी रखा।

जम्मू-कश्मीर के कटरा में तंबाकू सेवन पर लगा प्रतिबंध

जम्मू। जम्मू प्रशासन ने कटरा मे सिगरेट और अन्य तंबाकू उत्पादो की बिक्री, उन्हे रखने तथा उनके सेवन पर प्रतिबंध लगा दिया है। अधिकारियो ने यह जानकारी दी। कटरा में माता वैष्णो देवी का प्रसिद्ध मंदिर स्थित है। रियासी के जिलाधिकारी विशेष महाजन ने कहा कि विश्व तंबाकू निषेध दिवस पर शुरू की गई इस पहल का उद्देश्य उस धार्मिक स्थान की पवित्रता बनाए रखना है जहां हर साल लाखो तीर्थयात्री आते है। प्रशासन ने कटरा और आसपास के इलाको में मांस और शराब की बिक्री करने, उन्हे रखने और उनका सेवन करने पर पहले ही प्रतिबंध लगा रखा है। महाजन ने शनिवार को संवाददाताओ से कहा,"धारा 144 के तहत हमने नुमाई और पंथाल चेक पोस्ट लेकर तारा कोर्ट से होते हुए भवन तक के क्षेत्र मे सिगरेट, गुटखा और अन्य प्रकार के तंबाकू के भंडारण, बिक्री और उनका सेवन करने पर प्रतिबंध लगा दिया है। उन्होने कहा,"यह प्रतिबंध शराब और मांस की बिक्री तथा खपत पर मौजूदा प्रतिबंध का विस्तार है।

आईसीआईसीआई का क्लेम सेटलमेंट 99.17 प्रतिशत

मुंबई। आईसीआईसीआई प्रूडेंशियल लाइफ ने वित्त वर्ष 2024 में 99.17 प्रतिशत का क्लेम सेटलमेंट रेश्यो हासिल किया है, जो कि इंडस्ट्री में सर्वश्रेष्ठ रेश्यो में से एक है। वैध मृत्यु दावे का निपटान करने के लिए कंपनी के पास केवल 1.27 दिन का औसत समय था, और 2024 को समाप्त वित्त वर्ष में मृत्यु दावों के लिए कंपनी कुल 1,867 करोड़ रुपये का भुगतान करने में सफल रही। अमीश बैंकर, चीफ ऑपरेशन्स ऑफिसर, ने कहा जीवन बीमा परिवारों को वित्तीय सुरक्षा प्रदान करने में सहायता करता है। इसलिए हम चाहते हैं कि सभी वास्तविक दावों का जल्द से जल्द निपटान हो। वित्त वर्ष 2024 में, हमने 99.17 प्रतिशत का क्लेम सेटलमेंट रेश्यो हासिल किया, जो कि इंडस्ट्री में सबसे अधिक है। सभी दस्तावेज़ प्राप्त करने के बाद, हमें बिना जाँच के रिटेल दावों के लिए मृत्यु दावे के निपटान में केवल 1.27 दिन का औसत समय लगा।।

ज्योतिषाचार्य आचार्य देव ने दी बड़े मंगल की बधाई

प्रयागराज। कलयुग में सबकी जिंदगी में संकट हैं और संकट को हरने के लिए संकटमोचक हनुमान ही एक मात्र विकल्प हैं और अब उनको प्रसन्न करने वाला खास समय भी आ चुका है। पहले बड़े मंगल की शुरआत28 मई से हो चुकी है। इसके अलावा यह 4, 11 और 18 जून को पड़ेगा। हिन्दू कैलेंडर के अनुसार यह पर्व ज्येष्ठ माह के प्रत्येक मंगवार के दिन मनाया जाता है।बड़ा मंगल के दिन हनुमान जी की व्रत-पूजा अचूक मानी गई है। भक्त इस दिन हनुमान जी की पूजा-अर्चना के बाद चौराहों पर जगह-जगह पंडाल लगाकर भंडारे का आयोजन करते हैं और हनुमान जी का आशीर्वाद प्राप्त करते हैं। प्रसिद्ध ज्योतिषाचार्य आचार्य देव ने सबको बधाई दी है। उन्होंने कहा कि मान्यता है कि इस दिन बजरंगबली को चोला चढ़ाने, दान पुण्य करने से हर तरह की बाधा दूर हो जाती है। बड़ा मंगल के दिन विधि विधान से हनुमान जी की पूजा करने से आर्थिक, मानसिक और शारीरिक पीढ़ा से मुक्ति मिलती है।

रिलायंस पर्सनल 360 शील्ड

मुंबई। भारत में साधारण बीमा क्षेत्र की प्रमुख कंपनियों में से एक, रिलायंस जनरल इंश्योरेंस ने अपने नए प्रोडक्ट, रिलायंस पर्सनल एक्सीडेंट 360 शील्ड के लॉन्च की घोषणा की है। यह एक पर्सनल एक्सीडेंट इंश्योरेंस पॉलिसी है, जिसे लोगों और उनके परिवारों को बेमिसाल सुरक्षा प्रदान करने के इरादे से डिज़ाइन किया गया है। यह सुरक्षा कवर वाकई बेहद खास है, जिसे आपको और आपके अपनों को न केवल व्यक्तिगत दुर्घटना के प्रभावों से बचाने के लिए डिज़ाइन किया गया है, बल्कि यह दुर्घटना के बाद एक बड़े झटके के रूप में परिवार के सामने आने वाले गंभीर प्रभावों से भी सुरक्षा देता है। इस प्रोडक्ट के लॉन्च के मौके पर, रिलायंस जनरल इंश्योरेंस के सीईओ, राकेश जैन ने अपनी राय जाहिर करते हुए कहा, हम हर हाल में यह सुनिश्चित करना चाहते हैं कि, हमारा हर देशवासी और उनके परिवार लोग अचानक सामने आने वाली किसी भी तरह घटना से सुरक्षित रहें।

सुपर स्मेल्टर्स और टाटा पावर की साझेदारी

कोलकाता। सुपर स्मेल्टर्स लिमिटेड ने हाल ही में पूर्वी भारत में नवीकरणीय ऊर्जा को बढ़ावा देने के लिए टाटा पावर रिन्यूएबल्स के साथ अपने रणनीतिक साझेदारी की घोषणा की है। एक समझौता ज्ञापन के माध्यम से 5 मेगावाट क्षमता का प्लांट स्थापित किया गया है, इस अभूतपूर्व साझेदारी का उद्देश्य स्टील उत्पादन के लिए पूर्ण हरित ऊर्जा का इस्तेमाल करना हैए जिससे इस क्षेत्र में सीओ2 उत्सर्जन में उल्लेखनीय कमी आएगी। यह महत्वाकांक्षी पहल जो उल्लेखनीय 147,014 मेगावाट घंटे स्वच्छ ऊर्जा का उत्पादन करेगीए जो दोनों कंपनियों की स्थिरता और पर्यावरणीय संरक्षण के प्रति प्रतिबद्धता को उजागर करती है।

रूस के हमलों के बाद यूक्रेन में बिजली गुल

भाषा। कीव

रूस द्वारा बुनियादी ऊर्जा ढांचे पर बड़े पैमाने पर हमले किए जाने और पूर्वी दोनेत्स्क प्रांत में बढ़त हासिल करने का दावा किए जाने के एक दिन बाद यूक्रेन ने रविवार को देश के अधिकांश हिस्सों में आपातकालीन बिजली कटौती लागू कर दी।ऊर्जा संयंत्रों को लक्ष्य बनाकर शनिवार को ड्रोन और मिसाइल से हमले किए जाने के बाद यूक्रेन के तीन इलाकों को छोड़कर सभी क्षेत्रों में बिजली गुल हो गई। इन हमलों में कम से कम 19 लोग घायल हुए हैं। यूक्रेन के सरकारी स्वामित्व वाले बिजली ग्रिड संचालक यूक्रेनेर्गो ने कहा कि बिजली गुल होने से औद्योगिक और घरेलू उपभोक्ता दोनों प्रभावित हुए हैं हाल के हफ्तों में यूक्रेन के पावर ग्रिड पर लगातार रूसी हमलों ने सरकार को देश भर में ब्लैकआउट लागू करने के लिए मजबूर किया है। हमलों का मुकाबला करने और मरम्मत के लिए पर्याप्त हवाई सुरक्षा की अनुपस्थिति से गर्मियों के अंत और कड़ाके की ठंड में मांग बढ़ने के कारण बिजली की कमी की स्थिति और भी बदतर हो सकती है।गत अप्रैल में हुआ हमला हाल के सबसे बड़े हमलों में से एक था, जिसने कीव के सबसे बड़े ताप विद्युत संयंत्र को नुकसान पहुंचाया था। आठ मई को एक और बड़ा हमला हुआ, जिसमें कई क्षेत्रों में बिजली उत्पादन और बिजली वितरण प्रतिष्ठानों को नुकसान पहुंचा।यूक्रेन की वायुसेना ने शनिवार को हुए हमलों के बाद रविवार को कहा कि वायु रक्षा बलों ने रात भर में सभी 25 ड्रोन को मार गिराया। रूस ने रविवार को दावा किया कि उसने आंशिक रूप से रूस के कब्जे वाले दोनेत्स्क क्षेत्र के उमानस्के गांव पर नियंत्रण कर लिया है। रूस का समन्वित नया आक्रमण यूक्रेन के उत्तर-पूर्वी खारकिव क्षेत्र पर केन्द्रित है, लेकिन ऐसा प्रतीत होता है कि वह दक्षिण में दोनेत्स्क में यूक्रेनी सुरक्षा का परीक्षण कर रहा है और उत्तरी सुमी और चेर्निहीव क्षेत्रों में भी घुसपैठ की कोशिश में है। रूस में, यूक्रेन की सीमा से लगे बेलगोरोद क्षेत्र के शेबेकिनो शहर में गोलाबारी में छह लोग घायल हो गए। क्षेत्रीय गवर्नर व्याचेस्लाव ग्लैडकोव ने रविवार को यह जानकारी दी। उन्होंने यह भी कहा कि हमले में कोरोचेंस्की जिले के उप प्रमुख की गोला-बारूद में विस्फोट होने से मौत हो गई। उन्होंने कोई विवरण नहीं दिया। कार्यवाहक क्षेत्रीय प्रमुख एलेक्सी स्मिरनोव के अनुसार, पड़ोसी कुर्स्क क्षेत्र में रविवार को एक ड्रोन से विस्फोटक उपकरण गिराए जाने से तीन लोग घायल हो गए। सिंगापुर में एशिया के प्रमुख सुरक्षा सम्मेलन को संबोधित करते हुए यूक्रेन के राष्ट्रपति वोलोदिमीर जेलेंस्की ने रविवार को चीन पर यूक्रेन युद्ध पर आगामी स्विस-आयोजित शांति सम्मेलन को बाधित करने में रूस की मदद करने का आरोप लगाया। व्हाइट हाउस के राष्ट्रीय सुरक्षा संचार सलाहकार जॉन किर्बी ने रविवार को ही पुष्टि की कि राष्ट्रपति जो बाइडन ने यूक्रेन को रूस के अंदर हमला करने के लिए अमेरिका द्वारा प्रदान किए गए कुछ हथियारों का उपयोग करने की अनुमति देने पर सहमति व्यक्त की है, ताकि रूस द्वारा खारकिव पर डाले जा रहे अभूतपूर्व दबाव को कम किया जा सके।

चीन अन्य देशों पर यूक्रेन शांति वार्ता में शामिल न होने का दबाव बना रहा हैः जेलेंस्की

भाषा। सिंगापुरं

यूक्रेन के राष्ट्रपति वोलोदिमीर जेलेंस्की ने रविवार को दावा किया कि चीन अन्य देशों पर आगामी यूक्रेन शांति वार्ता में शामिल न होने का दबाव बना रहा है। जेलेंस्की ने यूक्रेन में जारी युद्ध को लेकर स्विटजरलैंड द्वारा प्रस्तावित शांति सम्मेलन को बाधित करने में रूस की मदद करने का चीन पर आरोप लगाया। सिंगापुर में शांगरी-ला रक्षा मंच पर संवाददाता सम्मेलन में जेलेंस्की ने कहा कि चीन अन्य देशों पर आगामी यूक्रेन शांति वार्ता में शामिल न होने का दबाव बना रहा है। उन्होंने कहा, रूस, क्षेत्र में चीनी प्रभाव का इस्तेमाल करते हुए, शांति शिखर सम्मेलन को बाधित करने के लिए हरसंभव प्रयास कर रहा है। उन्होंने कहा, यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि चीन जैसा शक्तिशाली देश पुतिन (रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन) के हाथों की कठपुतली है। इससे पहले दिन में एशिया के सुरक्षा सम्मेलन को संबोधित करते हुए जेलेंस्की ने शीर्ष रक्षा अधिकारियों से आगामी शिखर सम्मेलन में भाग लेने का आग्रह किया और कहा कि वह कुछ देशों द्वारा इसमें शामिल होने के लिए प्रतिबद्धता जताने में विफल रहने से निराश हैं। उन्होंने कहा, हम विभिन्न प्रस्तावों और विचारों को सुनने के लिए तैयार हैं, ताकि युद्ध की समाप्ति हो सके और कोई स्थाई समाधान निकाला जा सके। जेलेंस्की ने कहा कि उन्होंने सिंगापुर के प्रधानमंत्री से मुलाकात करने की योजना बनाई है और वह उनसे स्विट्जरलैंड वार्ता में व्यक्तिगत रूप से शामिल होने का आग्रह करेंगे।

रामफोसा के पद छोड़ने से संबंधित किसी मांग पर विचार नहीं करेगी एएनसी

केप टाउन। दक्षिण अफ्रीका की अफ्रीकन नेशनल कांग्रेस (एएनसी)पार्टी राष्ट्रपति सिरिल रामफोसा के पद छोड़ने से संबंधित संभावित गठबंधन सहयोगियों की किसी भी मांग पर विचार नहीं करेगी। यह बात पार्टी के एक शीर्ष नेता ने रविवार को कही। एएनसी ने चुनाव परिणाम में 30 साल से चला आ रहा अपना बहुमत खोने के बाद सरकार गठन के लिए संयुक्त मोर्चा बनाने का प्रयास किया है। दक्षिण अफ्रीका में पहली बार राष्ट्रीय गठबंधन सरकार बनाने और स्थिरता स्थापित करने के लिए जटिल वार्ताओं के दौर की ओर बढ़ने के बीच एएनसी के महासचिव फिकिले मबालुला ने कहा कि रामफोसा पार्टी के नेता बने रहेंगे और बातचीत को आगे बढ़ाने के लिए दूसरे दलों का उनके इस्तीफे की मांग करना "अस्वीकार्य" है। मबालुला ने ऐतिहासिक चुनाव परिणामों के बाद एएनसी नेतृत्व की ओर से पहली सार्वजनिक टिप्पणी में कहा, राष्ट्रपति रामफोसा एएनसी के अध्यक्ष हैं और यदि दूसरे दल हमसे यह मांग करते हैं कि वह इस्तीफा दें तो इसे स्वीकार नहीं किया जाएगा। उन्होंने कहा कि एएनसी सरकार बनाने के प्रयास में हर दूसरे राजनीतिक दल के साथ बातचीत के लिए तैयार है, लेकिन कोई भी राजनीतिक दल हमारे लिए शर्तें तय नहीं कर सकता।

अंतरिक्ष यात्री को लेकर जाने वाली पहली बोइंग उड़ान अंतिम क्षण में स्थगित

फ्लोरिडा (अमेरिका)। अंतरिक्ष यात्री को लेकर जा रही बोइंग की पहली उड़ान का प्रक्षेपण कम्प्यूटर प्रणाली की खामी के कारण आखिरी क्षण में शनिवार को एक बार फिर स्थगित कर दिया गया। कंपनी के स्टारलाइनर कैप्सूल में अमेरिकी अंतरिक्ष एजेंसी नासा के दो अंतरिक्ष यात्री सवार थे तभी उड़ान से पहले अंतिम मिनटों को नियंत्रित करने वाली कम्प्यूटर प्रणाली ने तीन मिनट 50 सेकंड पर उल्टी गिनती खुद रोक दी। उड़ान भरने में कुछ ही समय शेष रहने के कारण समस्या को ठीक करने का समय नही था और अंततः प्रक्षेपण को स्थगित कर दिया गया। प्रक्षेपण विफल होते ही केप केनवरल स्पेस फोर्स स्टेशन में एटलस वी रॉकेट पर कैप्सूल में सवार अंतरिक्ष यात्रियो बुच विलमोर और सुनी विलियम्स को बाहर निकालने के लिए तकनीशियन दौड़ पड़े। रॉकेट निर्माता यूनाइटेड लॉन्स एलायंस के मुख्य कार्यकारी अधिकारी टोरी ब्रुनो ने बताया कि जब तक रॉकेट का सारा ईंधन नही निकाला गया जब तक टीम समस्या को ठीक करने के लिए कम्प्यूटर प्रणाली तक नही पहुंच पाई। समस्या को ठीक कर बुधवार सुबह तक प्रक्षेपण का अगला प्रयास किया जा सकता है। अगर यह रॉकेट आगामी सप्ताह में उड़ान नही भर सका तो रॉकेट को पैड से हटाने और बैटरियो को बदलने के लिए जून मध्य तक का समय लगेगा। यह प्रक्षेपण का दूसरा प्रयास था। पहला प्रयास छह मई को किया गया था लेकिन वह भी वॉल्व संबंधी समस्या के कारण स्थगित हो गया था। कैप्सूल में दिक्कतों के कारण कई साल से लंबित बोइंग की पहली उड़ान में एक बार फिर देरी हो गई है।

स्पेलिंग बी में तीसरे स्थान प रही भारतीय-अमेरिकी छात्रा ने अगले साल चैंपियन बनने की ठानी

वाशिंगटन। स्क्रिप्स नेशनल स्पेलिंग बी में तीसरे स्थान पर रही सातवी कक्षा की भारतीय-अमेरिकी छात्रा अनन्या प्रसन्ना ने कहा कि वह अगले साल इस प्रतिष्ठित वार्षिक प्रतियोगिता में भाग लेकर चैंपियनशिप ट्रॉफी अपने नाम करने को लेकर दृढ़ प्रतिज्ञ है। उत्तरी कैरोलिना के एपेक्स की 13 वर्षीय खिलाड़ी ने पीटीआई- भाषा को दिए साक्षात्कार में कहा,"मेरे लिए हार मानना कोई मायने नही रखता जबकि आपके पास हमेशा एक और मौका होता है तो फिर हार क्यों माननी चाहिए? इसलिए मै अगले साल निश्चित रूप से वापसी करूंगी।वाशिंगटन में बृहस्पतिवार को आयोजित स्क्रिप्स नेशनल स्पेलिंग बी मे कैरोलिना पैंथर्स का प्रतिनिधित्व करते हुए अनन्या ने प्रतिष्ठित प्रतियोगिता के फाइनल में जगह बनाई और अंततः अपने तीसरे प्रयास में तीसरा स्थान हासिल किया। इससे पहले वह इस प्रतियोगिता में 2022 में 49वें स्थान पर रही थी, तथा 2023 में 74वें स्थान पर रही। सातवी कक्षा की छात्रा अनन्या इसे गर्व के साथ देखती है और भविष्य में बुलंदी पर पहुंचने का दृढ़ संकल्प दिखाया। अनन्या ने बताया कि उनकी स्पेलिंग बी की दिशा में यात्रा दूसरी कक्षा से शुरू हुई, जब उन्होने नॉर्थ साउथ फाउंडेशन द्वारा आयोजित स्पेलिंग बी में भाग लिया था।उसने कहा,"मैंने सिर्फ सूची का अध्ययन किया और कुछ नही, और मुझे दूसरा स्थान मिला" इस शुरुआती सफलता से उत्साहित होकर उसके माता-पिता ने स्पेलिंग बी में उसकी निरंतर भागीदारी का समर्थन किया। अनन्या के पिता पेशे से सॉफ्टवेयर इंजीनियर है जो न केवल उसका यात्रा व्यय संभालते थे, बल्कि शब्द सूची भी तैयार करते थे जिससे उसमें आत्मविश्वास पैदा हुआ।

एआई के नए दृष्टिकोण से होगा लाभ : स्काई ली

बिजिंग । स्मार्टफोन सेवा प्रदाता रियलमी ने लंबे इंतजार के बाद हाल ही में अपनी जीटी सीरीज़ में लेटेस्ट स्मार्टफोन लॉन्च किया था। जीटी सीरीज़ में पिछला स्मार्टफोन दो साल पहले लॉन्च करने के बाद रियलमी द्वारा यह वापसी हाईएंड मार्केट सेगमेंट पर उनका रणनीतिक फोकस प्रदर्शित करती है। रियलमी के फाउंडर एवं सीईओए स्काई ली,ऑलन्यू जीटी 6 सीरीज़ के साथ हाइ एंड मार्केट में अपना महत्वपूर्ण प्रभाव छोड़ने के लिए दृढ़निश्चित हैं। एआई सबसे ज्यादा प्रतिस्पर्धा वाली विशेषता बन रहा है, एआई इमेजिंगए वॉईस और इंटरैक्शन भविष्य में एआई के विकास के तीन प्रमुख ट्रेंड होंगे। रियलमी स्मार्टफोंस के लिए मानव.केंद्रित एआई के नए दृष्टिकोण में अग्रणी भूमिका निभा रहा है। उनकानैक्स्ट एआई् दृष्टिकोण केवल एआई फीचर के इंटीग्रेशन से बढ़कर है। इसमें तीन क्षेत्रों इमेजिंग,एफिशियंसी, और पर्सनलाईज़ेशन पर ध्यान केंद्रित किया गया है। फ्लैगशिप उत्पादों में उत्कृष्टता हासिल करने के दृढ़ निश्चय के साथ रियलमी का उद्देश्य युवाओं की जरूरतों को समझते हुए हर पहलू में उनकी अपेक्षाओं से बढ़कर उत्पाद पेश करना है। जीटी 6 सीरीज़ इनोवेशन और क्वालिटी के प्रति रियलमी की प्रतिबद्धता का प्रदर्शन करेगी और स्मार्टफोन उद्योग में एक अत्यधिक प्रतिष्ठित सीरीज़ बन जाएगी। ग्लोबल मैग्ज़ीन से अपनी बातचीत के दौरान स्काई ली ने कहा कि इस उद्योग में प्रतिस्पर्धा केवल हार्डवेयर की बजाय हार्डवेयर,सॉफ्टवेयर और संपूर्ण टेक्नोलॉजिकल क्षमता की हो जाएगी।

रॉलप्लग और एसएसआईएल में वैश्विक साझेदारी

ग्लोबल। साकेत सेवन स्टार इण्डस्ट्रीज लिमिटेड (एसएसएसआईएल) और रॉलप्लग प्रोडेक्ट एण्ड सर्विसेज इण्डिया लि. दो दिग्गज वैश्विक निर्माण समूह भारत के इजीनियरिंग क्षेत्र में उत्कृष्टता और नवाचार के एक नए युग की शुरूआत करने के लिए एकजुट हुए हैं। यह महत्वपूर्ण साझेदारी भारत में रॉलप्लग के आधिकारिक लॉन्च का प्रतीक है और देशभर में निर्माण और इंजीनियरिंग के भविष्य को फिर से परिभाषित करने की प्रतिबद्धता को प्रदर्शित करती है। रॉलप्लग की उत्पत्ति वर्ष 1887 में हुई, जब रॉलिंग्स ब्रदर्स एक छोटी प्लम्बिंग और इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग कंपनी की स्थापना लंदन में की थी। कम्पनी को बड़ी सफलता वर्ष 1910 में मिली जब उसने दुनिया के पहले वॉल प्लग का आविष्कार किया, जिसने निर्माण और डू इट योर सेल्फ (डीआईवाई) उद्योगों में क्रांति ला दी। वर्ष 1919 में इसका नाम बदलकर रॉलप्लग कर दिया गया, तब से यह कम्पनी यहीं है। निर्माण उद्योग के लिए तकनीकी और उपकरणों को ठीक करने में सबसे आगे एवं उद्योग मानकों को निर्धारित करने वाले उत्पादों और सेवाओं की एक विस्तृत श्रृंखला की पेशकश कर रही है। इसके अतिरिक्त, साकेत सेवन स्टार इण्डस्ट्रीज लिमिटेड (एसएसएसआईएल) महाराष्ट्र की शीर्ष 10 कम्पनियों में से एक है, जो इन-हाउस के लिए जिंक और एल्युमीनियम फ्लेक कोटिंग और मैकेनिकल जिंक कोटिंग प्रदान करती है। अपने अभिनव और विश्वसनीयता के लिए प्रसिद्ध ग्लोबल लीडर रॉलप्लग ने साकेत सेवन स्टार इण्डस्ट्रीज लिमिटेड के साथ साझेदारी की हैं।

भारतीय अमेरिकी ने दिव्यांग लोगों को स्वास्थ्य सुविधाएं सुलभ कराने के लिए अभियान शुरू किया

वाशिंगटन। अमेरिका स्थित एक गैर सरकारी संगठन ने शनिवार को बौद्धिक रूप से दिव्यांग लोगो को स्वास्थ्य सुविधाएं सुलभ कराने के लिए एक पहल की घोषणा की। इस पहल का उद्देश्य पहले साल के दौरान भारत में 10 हजार लोगों की मदद करना है। एक विज्ञप्ति में बताया गया कि हितार्थ परियोजना के तहत अमेरिका स्थित वायस ऑफ स्पेशियली एबल्ड पीपुल (वीओएसएपी) ने सामाजिक कार्यकर्ताओं को वित्तीय सहायता प्रदान करने के लिए परिवार एनसीपीओ (नेशनल कॉन्फेडरेशन ऑफ पैरेंट्स ऑर्गेनाइजेशंस) के साथ साझेदारी की है। इसमें कहा गया है कि इस साझेदारी का मकसद बौद्धिक रूप से दिव्यांग व्यक्तियों को जरूरी चिकित्सा, दंत चिकित्सा, आउट पेशेंट विभाग (ओपीडी) सेवा सुलभ कराने में सहायता करना तथा भारत सरकार की निरामय योजना के तहत प्रति वर्ष एक लाख रुपए तक की प्रतिपूर्ति प्राप्त कराना है। वीओएसएपी के कैलिफोर्निया स्थित संस्थापक प्रणव देसाई ने कहा, हम वीओएसएपी प्रभाव को विस्तारित करने के लिए इस नए मॉडल के साथ उपलब्ध अवसरों को लेकर बहुत उत्साहित है जो भारत सरकार के मौजूदा कार्यक्रमों और परिवार जैसे हमारे विश्वसनीय और प्रतिष्ठित साझेदारों की ताकत का लाभ उठाता है। वीओएसएपी दिव्यांग क्षेत्र का एक अग्रणी गैर सरकारी संगठन है जिसने 2017 से 25,000 से अधिक दिव्यांग व्यक्तियों को सहायक उपकरण, सर्जिकल हस्तक्षेप और छात्रवृत्ति प्रदान करके सक्षम बनाया है। निरामय योजना के तहत बीमा प्रदान किया जाता है जिसके अंतर्गत बौद्धिक रूप से दिव्यांग लोगों के इलाज पर आने वाले एक लाख रुपए तक के खर्च की प्रतिपूर्ति की जाती है।

मेक्सिको को मिल सकती है पहली महिला राष्ट्रपति

मेक्सिको सिटी। मेक्सिको के लोग रविवार को देश के इतिहास में संभवतः पहली महिला राष्ट्रपति चुनेंगे। इस बार राष्ट्रपति पद के तीन उम्मीदवारों में से दो महिलाएं है। इनमें से एक पूर्व शिक्षाविद है जिन्होने वर्तमान नेता की लोकलुभावन नीतियों को आगे बढ़ाने का वादा किया है तथा एक पूर्व सीनेटर एवं तकनीकी उद्यमी है जिन्होने मादक पदार्थ तस्करी से जुड़े गिरोहो से निपटने का वादा किया है। राष्ट्रपति पद के लिए दोनों प्रमुख उम्मीदवार महिलाएं है और इनमे से ही किसी के राष्ट्रपति चुने जाने की संभावना है। तीसरे उम्मीदवार जॉर्ज अल्वारेज मेनेज है जो बहुत पीछे बताए जाते है। निवर्तमान राष्ट्रपति आंद्रेस मैनुअल लोपेज ओब्रेडोर की जगह नए राष्ट्रपति के चुनाव के लिए देश मे लगभग 10 करोड़ पंजीकृत मतदाता है। महिला उम्मीदवारो मे क्लाउडिया शीनबाम और जोचितल गैल्वेज रूइज शामिल है।

नेपाल में जीप दुर्घटना में छह भारतीय पर्यटक घायल

काठमांडू। नेपाल के चितवन जिले मे रविवार को एक झील के पास जीप पलट जाने से छह भारतीय पर्यटक घायल हो गए। अधिकारियो ने यह जानकारी दी। अधिकारियो के मुताबिक घायल हुए पर्यटको मे अधिकतर वरिष्ठ नागरिक थे। खैरेनी नगरपालिका के वार्ड नंबर-12 के अध्यक्ष केदारनाथ पंटा ने बताया कि यह दुर्घटना खैरेनी मे दराई झील के पास उस वक्त हुई, जब ए पर्यटक जंगल सफारी के लिए चितवन राष्ट्रीय उद्यान की ओर जा रहे थे। अधिकारियो के मुताबिक, काठमांडू से 250 किलोमीटर दक्षिण मे स्थित चितवन राष्ट्रीय उद्यान एक सींग वाले गैडो और बंगाल टाइगर के लिए प्रसिद्ध है। पुलिस ने बताया कि घायल हुए सभी लोग मुंबई के बेडाली थाना क्षेत्र के रहने वाले है और उनमे से अधिकांश की उम्र 60 वर्ष से अधिक है। घायल हुए पर्यटको की पहचान रामचंद्र यादव, सुदेश शंकर खड़िया, पंकज गुप्तेश्वर, वैशाली गुप्तेश्वर, सुष्मिता सुदेश खड़िया और विजया मोरे के रूप मे की गई है। पुलिस ने बताया कि घायलो का भरतपुर और रत्ननगर के अस्पतालो मे इलाज चल रहा है। उन्होने बताया कि जीप चालक नेपाली नागरिक को हिरासत मे ले लिया गया है।

पिट्सबर्ग के बार में गोलीबारीः दो लोगों की मौत, सात अन्य घायल

पेन हिल्स (अमेरिका)। उपनगरीय पिट्सबर्ग के एक बार मे हुई गोलीबारी मे दो लोगो की मौत हो गई और सात अन्य घायल हुए है। पुलिस ने रविवार को यह जानकारी दी। एलेगनी काउंटी पुलिस ने कहा कि उसने पेन हिल्स के बॉलर्स हुक्का लॉज और सिगार बार मे सुबह के वक्त हुई गोलीबारी के मामले मे कार्रवाई की है। पुलिस ने सोशल मीडिया पर एक बयान मे कहा कि रविवार तड़के तीन बजे के आसपास बचावकर्मियो को बार के अंदर एक पुरुष और एक महिला के शव मिले। इसके अलावा, सात व्यक्ति घायल भी हुए है। बयान के अनुसार, घायलो को क्षेत्र के अस्पतालो मे ले जाया गया, जिनमे से एक की हालत नाजुक है। काउंटी पुलिस ने कहा कि प्रारंभिक जानकारी के अनुसार, बार के अंदर झगड़ा हुआ और कई लोगो ने गोलीबारी की। किसी संदिग्ध के हिरासत मे लिए जाने की जानकारी नही मिली है।

डब्ल्यूएचओ वैश्विक महामारियों से निपटने के लिए नियम मजबूत करने संबंधी कदमों पर सहमत

जिनेवा। विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) के सदस्य देशों ने कोविड-19 और एमपॉक्स जैसी वैश्विक महामारियों से निपटने के लिए वैश्विक स्तर पर तैयारी में सुधार करने संबंधी नए कदमों को शनिवार को मंजूरी दी और वृहद संधि पर सहमत होने के लिए नई समय सीमा तय की। डब्ल्यूएचओ ने यह जानकारी दी। डब्ल्यूएचओ ने कहा कि देशों ने अंतरराष्ट्रीय स्वास्थ्य नियमों (आईएचआर) में संशोधन करने पर सहमति जताई जैसे कि वैश्विक महामारी आपातकाल शब्द को परिभाषित करना और विकासशील देशों को वित्तपोषण एवं चिकित्सा उत्पादों तक बेहतर पहुंच प्राप्त करने में मदद करना। इन नियमों में इससे पहले 2005 में बदलाव किया गया था। यह कदम ऐसे समय उठाया गया है जब संयुक्त राष्ट्र की एजेंसी ने वैश्विक महामारियों से निपटने संबंधी अधिक व्यापक संधि अपनाने की योजनाएं पर सहमति नहीं बन पाने पर इस साल अपनी छह दिवसीय विश्व स्वास्थ्य सभा को समाप्त कर दिया था। प्रौद्योगिकी के बेहतर आदान-प्रदान और महामारी फैलाने वाले रोगाणुओं के बारे में असहमति के कारण योजनाओं पर सहमति नहीं बन पाई थी।

श्रीलंका में भारी बारिश से 15 लोगों की मौत

भाषा। कोलंबो

श्रीलंका में भारी मानसूनी बारिश के कारण सप्ताहांत में कम से कम 15 लोगों की मौत हो गई और 5,000 से अधिक परिवारों के 19,000 से अधिक लोग बेघर हो गए। अधिकारियों ने रविवार को यह जानकारी दी। आपदा प्रबंधन केंद्र (डीएमसी) ने बताया कि ए मौतें राजधानी कोलंबो सहित सात जिलों में हुई हैं, जहां 300 मिलीमीटर से अधिक मूसलाधार बारिश के कारण अचानक बाढ़ आ गई, पेड़ उखड़ गए, तेज हवाएं चलीं, बिजली गिरी और भूस्खलन हुआ। बारिश के कारण 25 प्रशासनिक जिलों में से 20 जिले बुरी तरह प्रभावित हुए हैं। 4,000 से अधिक घरों को आंशिक क्षति पहुंची है, जबकि 28 घर पूरी तरह नष्ट हो गए हैं।श्रीलंकाई सेना ने बचाव कार्यों के लिए नावों से लैस सात टीमें तैनात की हैं। वायु सेना ने प्रभावित क्षेत्रों में तत्काल आपातकालीन प्रतिक्रिया के लिए तीन हेलीकॉप्टरों को तैनात रखा है।आने वाले समय में अधिक वर्षा और बाढ़ की आशंका को देखते हुए शिक्षा मंत्रालय ने सोमवार को पूरे द्वीप में सभी स्कूलों को बंद करने की घोषणा की है।एहतियात के तौर पर बिजली और ऊर्जा मंत्रालय ने कई इलाकों में बिजली आपूर्ति रोक दी है।नेशनल बिल्डिंग रिसर्च सेंटर ने चार जिलों में भूस्खलन के लिए रेड नोटिस जारी किया।

अल्पसंख्यक समुदाय से पाकिस्तानी सेना में पहली महिला ब्रिगेडियर बनीं हेलेन मैरी रॉबर्ट्स

इस्लामाबाद। पाकिस्तानी सेना की मेडिकल कोर में सेवारत डॉ. हेलेन मैरी रॉबर्ट्स ने देश के इतिहास में ब्रिगेडियर का पद हासिल करने वाली ईसाई और अल्पसंख्यक समुदाय की पहली महिला बनकर इतिहास रच दिया है। एक रिपोर्ट के मुताबिक ब्रिगेडियर हेलेन उन पाकिस्तानी सेना अधिकारियों में शामिल थीं जिन्हें चयन बोर्ड द्वारा ब्रिगेडियर और पूर्ण कर्नल के रूप में पदोन्नत किया गया था। प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ ने ब्रिगेडियर के रूप में हेलेन की पदोन्नति पर उन्हें बधाई देते हुए कहा कि पूरे देश को उन पर और अल्पसंख्यक समुदायों से आने वाली उनकी जैसी हजारों मेहनती महिलाओं पर गर्व है, जो देश की सेवा कर रही हैं। शहबाज शरीफ ने कहा, मैं और पूरा देश ब्रिगेडियर हेलेन मैरी रॉबर्ट्स को पाकिस्तानी सेना में ब्रिगेडियर के पद पर पदोन्नत होने वाली अल्पसंख्यक समुदाय की पहली महिला होने का सम्मान प्राप्त करने पर बधाई देता हूं।

चीनी अंतरिक्ष यान चंद्रमा के सुदूर हिस्से में उतरा, मिट्टी-चट्टान के नमूने लेगा

भाषा। बीजिंग

चीन का एक अंतरिक्ष यान मिट्टी और चट्टान के नमूने एकत्रित करने के लिए अपनी तरह के पहले प्रयास के तहत रविवार को चंद्रमा के एक सुदूर हिस्से में उतरा। ए नमूने चंद्रमा के कम खोजे गए क्षेत्र और अच्छी तरह ज्ञात इसके निकटतम भाग के बीच अंतर के बारे में जानकारियां उपलब्ध करा सकते हैं। चंद्रमा का निकटतम भाग चंद्र गोलार्ध है जो हमेशा सुदूर भाग के विपरीत यानी पृथ्वी की ओर होता है। चीन के राष्ट्रीय अंतरिक्ष प्रशासन के अनुसार, चांग ए-6 मानव इतिहास में पहली बार दक्षिणी ध्रुव-एटकेन बेसिन नामक एक विशाल गड्ढे में बीजिंग के स्थानीय समयानुसार सुबह छह बजकर 23 मिनट पर उतरा। चांग ए-6 में एक ऑर्बिटर, एक रिटर्नर, एक लैंडर और एक आरोहक है। इस मिशन का नाम चीन की पौराणिक चंद्रमा देवी के नाम पर रखा गया है। सरकारी समाचार एजेंसी शिन्हुआ ने बताया कि सबसे जटिल प्रयास में से एक चंद्रमा की सतह पर उतरने के लिए बाधाओं का पता लगाने के लिए एक स्वायत्त दृश्य बाधा निवारण प्रणाली का इस्तेमाल किया गया। एक लाइट कैमरा ने चंद्रमा की सतह पर उजाले और अंधेरे के आधार पर अपेक्षाकृत सुरक्षित उतरने के लिए एक स्थान का चयन किया। चांग ए-6 मिशन को चंद्रमा के सुदूर हिस्से से नमूने एकत्रित करके लौटने का जिम्मा दिया गया है जो अपने आप में पहला प्रयास है। भारत पिछले साल चंद्रमा के कम खोजे गए दक्षिणी ध्रुव हिस्से के समीप उतरने वाला पहला देश बन गया था। प्रज्ञान रोवर को लेकर जा रहा उसका चंद्रयान-3 का लैंडर वहां सफलतापूर्वक उतरा था। चंद्रमा के सुदूर क्षेत्र तक मिशन भेजना ज्यादा मुश्किल है क्योंकि यह पृथ्वी के सामने नहीं होता जिसके कारण संचार बनाए रखने के लिए रिले उपग्रह की आवश्यकता होती है। साथ ही यह हिस्सा अधिक उबड़-खाबड़ है जहां लैंडर के उतरने के लिए बहुत ही कम समतल भूमि है। चांग ए-6 के चंद्रमा पर उतरने के बाद दो दिन के भीतर उसे नमूने एकत्र करना है। उसने चंद्रमा से नमूने एकत्रित करने के लिए दो पद्धतियां अपनाई हैं जिसमें उपसतह के नमूने एकत्रित करने लिए ड्रिल का इस्तेमाल करना और रोबोट के जरिए सतर से नमूने एकत्रित करना शामिल है। यह पहली बार है जब चीन ने अपने चंद्र मिशन में सहयोगी देश पाकिस्तान के एक ऑर्बिटर को शामिल किया है। इससे पहले 2020 में चांग ए 5 ने भी चंद्रमा के निकटतम भाग से नमूने एकत्रित किए थे।

तुर्किए के इस्तांबुल में रिहायशी इमारत ढही, एक व्यक्ति की मौत, आठ घायल

इस्तांबुल। तुर्किए के इस्तांबुल शहर में रविवार को एक रिहायशी इमारत ढह गई, जिसके कारण एक व्यक्ति की मौत हो गई, जबकि आठ अन्य घायल हो गए। अधिकारियों ने यह जानकारी दी। इस इमारत के ढहने से भूकंप की आशंका वाले शहर में इमारतों की मजबूती को लेकर आशंकाएं फिर से बढ़ गई हैं। टेलीविजन पर दिखाई गई तस्वीरों में अग्निशमन कर्मी शहर के यूरोपीय हिस्से में कुकुकसेकमेस में ढही पांच मंजिला इमारत का मलबा हाथ से हटाते दिखाई दे रहे हैं। इस्तांबुल के गवर्नर दावुत गुल ने घटनास्थल का दौरा कर बताया कि शुरुआत में मलबे से सात लोगों को निकाला गया, जिनमें दो लोग गंभीर रूप से घायल थे। बाद में उनके कार्यालय ने बताया कि एक और घायल व्यक्ति को बचा लिया गया तथा एक शव बरामद किया गया। गवर्नर के मुताबिक, यह इमारत करीब 36 वर्ष पुरानी थी। इमारत स्थानीय समयानुसार करीब आठ बजकर 40 मिनट पर ढह गई। इमारत ढहने का कारण अभी तक स्पष्ट नहीं हुआ है।

क्या जागते रहने की तुलना में सोते वक्त मस्तिष्क अधिक विषाक्त अपशिष्ट से छुटकारा पाता है?

भाषा। लंदन

इसमें कोई संदेह नहीं है कि नींद मस्तिष्क के लिए अच्छी है। यह विभिन्न भागों को पुनर्जीवित करने और यादों को स्थिर करने में मदद करती है। जब हम पर्याप्त नींद नहीं लेते हैं, तो इससे तनाव का स्तर बढ़ सकता है और मानसिक स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं बढ़ सकती हैं। साक्ष्य इस धारणा का भी समर्थन करते हैं कि जागते रहने की तुलना में सोते वक्त हमारा मस्तिष्क अधिक विषाक्त अपशिष्ट से छुटकारा पाता है। यह प्रक्रिया संभावित रूप से हानिकारक चीजों जैसे कि एमिलॉयड से छुटकारा पाने में महत्वपूर्ण मानी जाती है। एमिलॉयड प्रोटीन मस्तिष्क में होने वाले अल्जाइमर रोग से जुड़ा हुआ है। हालांकि, चूहों पर किए गए एक हालिया अध्ययन में इसके विपरीत निष्कर्ष सामने आए हैं। इस अनुसंधान पत्र के लेखकों ने संकेत दिया है कि चूहों में, नींद के दौरान मस्तिष्क से हानिकारक सामग्री की निकासी वास्तव में कम होती है और पिछले निष्कर्षों की भी इस तरह से पुनर्व्याख्या की जा सकती है। चूंकि मस्तिष्क एक सक्रिय ऊतक है जिसमें हर समय कई चयापचय और कोशिकीय प्रक्रियाएं होती रहती हैं। इसलिए यह बहुत सारा अपशिष्ट पैदा करता है। सेरीहब्रोस्पाइनल द्रव ग्लाइम्फैटिक प्रणाली का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। यह द्रव मस्तिष्क के चारों ओर ऐसा तरल पदार्थ है जो कुशन के रूप में कार्य करता है, जो इसे क्षति से बचाता है और पोषण प्रदान करता है, ताकि मस्तिष्क सामान्य रूप से कार्य कर सके।अपशिष्ट निकालने की प्रक्रिया के दौरान, हमारा सेरीब्रोस्पाइनल द्रव विषाक्त पदार्थों, मेटाबोलाइट्स और प्रोटीन से भरे पुराने और गंदे मस्तिष्क द्रव्य को मस्तिष्क के बाहर स्थानांतरित करने में मदद करता है, और नए द्रव के लिए स्थान बनाता है। निकाला गया अपशिष्ट लसीका तंत्र (प्रतिरक्षा प्रणाली का एक भाग, जिसे अंग्रेजी में लिम्फैटिक सिस्टम कहते हैं) में पहुंच जाता है, जहां से अंततः यह आपके शरीर से बाहर निकल जाता है। ग्लाइम्फैटिक सिस्टम की खोज पिछले दशक में ही हुई है। इसे सबसे पहले चूहों में देखा गया था, उनके मस्तिष्क में तरल पदार्थ की गति का अध्ययन करने के लिए डाई का इंजेक्शन लगाया गया था। एमआरआई स्कैन और कंट्रास्ट डाई के उपयोग से मनुष्यों में ग्लाइम्फैटिक प्रणाली के अस्तित्व की पुष्टि हो चुकी है। जानवरों पर किए गए अनुसंधानों के परिणामों के आधार पर, वैज्ञानिकों ने निष्कर्ष निकाला कि ग्लाइम्फैटिक प्रणाली दिन की अपेक्षा रात में, सोते समय या एनेस्थीसिया के प्रभाव में अधिक सक्रिय होती है।

ईरान के पूर्व राष्ट्रपति महमूद अहमदीनेजाद ने नामांकन दाखिल किया

दुबई। ईरान के पूर्व राष्ट्रपति महमूद अहमदीनेजाद ने राष्ट्रपति पद के चुनाव के लिए रविवार को नामांकन दाखिल किया। देश के राष्ट्रपति इब्राहिम रईसी की एक हेलीकॉप्टर हादसे में मृत्यु के बाद वहां राष्ट्रपति चुनाव कराए जा रहे हैं। अहमदीनेजाद के नामांकन से सर्वोच्च नेता अयातुल्ला अली खामेनेई दबाव में आएंगे। अहमदीनेजाद ने 85-वर्षीय सर्वोच्च नेता को खुली चुनौती दी थी और 2021 के राष्ट्रपति चुनाव में भाग लेने की उनकी कोशिशों को अधिकारियों ने विफल कर दिया था। उन्होंने ऐसे वक्त में अपना नामांकन दाखिल किया है जब ईरान और पश्चिमी देशों के बीच तेहरान के परमाणु कार्यक्रम, रूस को हथियार देने और असंतुष्टों पर कार्वाई को लेकर तनाव बढ़ रहा है। एसोसिएटिड प्रेस के पत्रकारों ने तेहरान में देखा कि अहमदीनेजाद गृह मंत्रालय पहुंचे और चुनाव लड़ने के लिए पंजीकरण प्रक्रिया शुरू की।

दक्षिण कोरिया कचरे से भरे गुब्बारे भेजने के विरोध में उत्तर कोरिया के खिलाफ जवाबी कार्वाई करेगा

सियोल। उत्तर कोरिया की ओर से कथित रूप से कचरों से भरे गुब्बारे भेजे जाने और अन्य उकसावों को लेकर दक्षिण कोरिया ने रविवार को कहा कि वह पड़ोसी देश के इस कदम के खिलाफ जल्द ही जवाबी कार्वाई करेगा। हालांकि, दक्षिण कोरियाई अधिकारियों ने यह नहीं बताया कि वे क्या जवाबी कदम उठाएंगे। पिछले सप्ताह उत्तर कोरिया ने दक्षिण कोरिया पर कूड़ा फेंकने के लिए सैकड़ों विशाल गुब्बारे उड़ाए थे और कथित तौर पर जीपीएस सिग्नल को अवरुद्ध कर दिया था। दक्षिण कोरिया के राष्ट्रीय सुरक्षा निदेशक चांग हो-जिन ने रविवार को कहा कि शीर्ष अधिकारियों ने एक आपातकालीन बैठक में उत्तर कोरिया की हाल की उकसावे वाली कार्वाइयों के जवाब में उसके खिलाफ कड़े कदम उठाने का फैसला किया है।

अमेरिका की जीत के साथ टॉप क्रिकेट की शुरुआत

● टी-20 विश्व कप का उद्घाटन मैच जीता

● कनाडा को सात विकेट से हराया

भाषा। डलास

आरोन जोन्स की 40 गेंद पर खेली गई नाबाद 94 रन की पारी की मदद से सह मेजबान अमेरिका ने टी20 विश्व कप के उद्घाटन मैच में कनाडा को 14 गेंद शेष रहते हुए सात विकेट से हराकर शीर्ष स्तर की क्रिकेट में धमाकेदार शुरुआत की। कनाडा ने पहले बल्लेबाजी करते हुए 5 विकेट पर 194 रन बनाए। अमेरिका ने इसके जवाब में एंड्रीज गौस के 65 रन और जोन्स की तूफानी पारी की मदद से 17.4 ओवर में तीन विकेट पर 197 रन बनाकर जीत दर्ज की। जोन्स ने अपनी पारी में 10 छक्के और चार चौके लगाए। न्यूयॉर्क में जन्में जोन्स ने जहां आक्रमक बल्लेबाजी करके प्रभावित किया वहीं गौस ने भी बेहतरीन पारी खेली। अमेरिका ने 42 रन तक दो विकेट गंवा दिए थे इसके बाद गौस ने जिम्मेदारी संभाली। उन्होंने अपनी पारी में सात चौके और तीन छक्के लगाए। जोन्स और गौस ने तीसरे विकेट के लिए 131 रन की साझेदारी की जिससे अमेरिका आसानी से लक्ष्य हासिल करने में सफल रहा। इससे पहले नवनीत धालीवाल (61) और आरोन जॉनसन (23) ने कनाडा को आक्रामक शुरुआत दिलाई। इसके बाद निकोलस किर्टन ने 31 गेंदों में 51 रन बनाकर उसे चुनौतीपूर्ण स्कोर तक पहुंचाया। मुंबई में जन्मे बाएं हाथ के स्पिनर हरमीत सिंह ने छठे ओवर में जॉनसन को आउट करके टूर्नामेंट का पहला विकेट लिया। उनकी जगह लेने के लिए उतरे परगट सिंह भी केवल पांच रन बनाकर रन आउट हो गए।धालीवाल को हालांकि किर्टन के रूप में अच्छा साथी मिला। इन दोनों ने तीसरे विकेट के लिए 62 रन जोड़े। न्यूजीलैंड के पूर्व क्रिकेटर कोरी एंडरसन ने धालीवाल को आउट करके यह साझेदारी तोड़ी। धालीवाल ने 44 गेंद की अपनी पारी में छह चौके और तीन छक्के लगाए। विकेटकीपर श्रेयस मोव्वा ने 16 गेंदों पर 32 रन बनाकर रन गति धीमी नहीं पड़ने दी। उन्होंने अपनी पारी में दो चौके और इतने ही छक्के लगाए।

पीएनजी के दबाव में आई वेस्टइंडीज पांच विकेट से जीती

जॉर्जटाउन (गुयाना)। दो बार की चैम्पियन वेस्टइंडीज को रविवार को यहां टी20 विश्व कप मुकाबले में पापुआ न्यू गिनी (पीएनजी) को पांच विकेट से हराने में मशक्कत करनी पड़ी। अपना दूसरा टी20 विश्व कप खेल रही पीएनजी ने मजबूत खिलाड़ियों से भरी वेस्टइंडीज को दबाव में डालकर अच्छा प्रदर्शन किया और ऐसा लग रहा था कि कहीं टूर्नामेंट के शुरू में ही उलटफेर देखने को न मिल जाए। पर रोस्टन चेज (नाबाद 42 रन) और आंद्रे रसेल (नाबाद 15 रन) ने मिलकर छठे विकेट के लिए 18 गेंद में 40 रन की अटूट साझेदारी से वेस्टइंडीज को जीत तक पहुंचाया। वेस्टइंडीज की आधी टीम 97 रन पर पवेलियन पहुंच गई थी लेकिन चेज और रसेल के मिलकर लगाए तीन छक्कों और चार चौकों से टीम 19 ओवर में पांच विकेट पर 137 रन बनाकर जीत से अभियान शुरू करने में कामयाब रही।

हमने अब तक बल्लेबाजी इकाई को अंतिम रूप नहीं दिया हैः रोहित

भाषा। न्यूयॉर्क

कप्तान रोहित शर्मा ने कहा है कि भारतीय टीम ने टी20 विश्व कप के लिए अपने बल्लेबाजी क्रम को अब तक अंतिम रूप नहीं दिया है और बांग्लादेश के खिलाफ अभ्यास मैच में ऋषभ पंत को तीसरे नंबर पर भेजने के टीम प्रबंधन के फैसले को ज्यादा तूल नहीं दी जानी चाहिए। भारत ने शनिवार को अभ्यास मैच में निर्धारित 20 ओवर में पांच विकेट पर 182 रन बनाने के बाद बांग्लादेश को नौ विकेट पर 122 रन पर रोककर नासाउ काउंटी अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट स्टेडियम में 60 रन से जीत हासिल की।पंत के तीसरे नंबर पर बल्लेबाजी करने के बारे में रोहित ने कहा, सिर्फ उसे मौका देने के लिए (ऐसा किया)। हमने अब तक अपनी बल्लेबाजी इकाई को अंतिम रूप नहीं दिया है। यहां तक कि गेंदबाजों ने भी अच्छा प्रदर्शन किया। कुल मिलाकर चीजें जिस तरह से हुईं, उससे खुश हूं। पंत ने 32 गेंद में 53 रन की तेज पारी खेली जबकि हार्दिक पंड्या ने 23 गेंद पर 40 रन बनाए। सूर्यकुमार यादव ने भी 18 गेंद में 31 रन की पारी खेली। रोहित ने मैच के बाद कहा, जिस तरह से चीजें हुईं, उससे मैं काफी खुश हूं। मुकाबले से हमें काफी कुछ वैसा ही मिला जैसा हम चाहते थे। जैसा कि मैंने टॉस के समय कहा था, परिस्थितियों के अनुकूल होना महत्वपूर्ण था।

रमन ने चार स्पिनर चुनने के फैसले का बचाव किया

चेन्नई। पूर्व सलामी बल्लेबाज डब्ल्यूवी रमन ने भारत की टी20 विश्व कप टीम में चार स्पिनरों के चयन का समर्थन करते हुए कहा कि यह निर्णय वेस्टइंडीज की पिचों की प्रकृति और आईपीएल में प्रदर्शन से प्रभावित था। भारत ने अमेरिका और वेस्टइंडीज में चल रहे टी20 विश्व कप के लिए रविंद्र जडेजा, अक्षर पटेल, कुलदीप यादव और युजवेंद्र चहल को टीम में शामिल किया है। भारत के लिए 11 टेस्ट और 27 वनडे खेलने वाले रमन ने पीटीआई से कहा, यह मत भूलिए कि चयनकर्ता सोच-विचार करके ऐसा किया गया होगा। इन खिलाड़ियों को शामिल करने के पीछे पर्याप्त तर्क और सोच रही होगी। इन दिनों वेस्टइंडीज की पिचों पर आपको जो कुछ भी देखने को मिलता है, वह स्पिनरों के लिए अधिक अनुकूल है।

विरोधी पर ध्यान देने के बजाय अपनी क्षमता से खेले भारतीय टीमः युवराज

न्यूयॉर्क। अपनी आक्रामक बल्लेबाजी के लिए मशहूर रहे युवराज सिंह का मानना है कि भारतीय टीम में कौशल और आत्मविश्वास की कोई कमी नहीं है और अगर वह टी20 विश्व कप में विरोधी टीम पर ध्यान देने के बजाय अपनी क्षमता के साथ खेले तो वह आईसीसी ट्रॉफी जीतने का लंबा इंतजार खत्म कर सकती है। भारत ने अपना अंतिम आईसीसी टूर्नामेंट 2013 में चैंपियंस ट्रॉफी के रूप में जीता था। इससे दो साल पहले युवराज के शानदार प्रदर्शन से भारत ने वनडे विश्व कप जीता था। भारत ने 2007 में पहला टी20 विश्व कप भी जीता था जिसमें युवराज ने इंग्लैंड के खिलाफ लीग मैच में तेज गेंदबाज स्टुअर्ट ब्रॉड के ओवर में छह छक्के लगाए थे।युवराज से जब भारत के पिछले एक दशक से भी अधिक समय से आईसीसी ट्रॉफी नहीं जीत पाने के बारे में पूछा गया, उन्होंने कहा, मेरा मानना है कि बड़े टूर्नामेंट जीतने के लिए हमारे पास आत्मविश्वास है। अगर भारत खुद पर विश्वास रखे और अपनी पूरी क्षमता से खेले तो वह खिताब जीत सकता है। टी20 विश्व कप के लिए आईसीसी के एंबेसडर युवराज ने कहा, अतीत में हमने इन्हीं चीजों पर गौर करके जीत हासिल की। हमने अपने मजबूत पक्षों पर ध्यान दिया। हमें इस पर ध्यान नहीं देना चाहिए कि विपक्षी टीम हमें कहां नुकसान पहुंचा सकती है। हमें अपने मजबूत पक्षों पर गौर करना होगा। हमारे पास कई मैच विजेता खिलाड़ी हैं। उन्होंने कहा, आईसीसी विश्व कप की तैयारी के लिए आईपीएल सबसे बेहतरीन मंच है और मुझे पूरी आशा है कि यह शानदार टूर्नामेंट होगा। युवराज ने कहा, अगर भारत जीतता है तो यह हमारे लिए शानदार पल होगा।

स्वियातेक जीत के साथ क्वार्टर फाइनल में

भाषा। पेरिस

गत चैंपियन ईगा स्वियातेक ने अनास्तिया पोतापोवा के खिलाफ बेहद एकतरफा जीत के साथ फ्रेंच ओपन टेनिस टूर्नामेंट के महिला एकल क्वार्टर फाइनल में प्रवेश किया। स्वियातेक ने पोतापोवा को सिर्फ 40 मिनट में 6-0, 6-0 से हराकर बाहर का रास्ता दिखाया। स्वियातेक को पूरे मुकाबले के दौरान एक भी गेम प्वाइंट का सामना नहीं करना पड़ा। पोतापोवा ने पहले ही मैच प्वाइंट पर फोरहैंड शॉट नेट पर मारकर मुकाबला स्वियातेक की झोली में डाल दिया। दुनिया की नंबर एक खिलाड़ी स्वियातेक ने मैच के बाद कहा, मैं बेहद एकाग्र थी। मुकाबला काफी तेजी से खत्म हो गया, यह काफी अजीब था। स्वियातेक की नजरें रोलां गैरो पर लगातार तीसरे और कुल चौथे फ्रेंच ओपन खिताब पर टिकी हैं। पोलैंड की यह शीर्ष वरीय खिलाड़ी अगले दौर में पांचवीं वरीय चेक गणराज्य की मार्केटा वोंद्रोसोवा और सर्बिया की गैरवरीय ओल्गा डेनिलोविच के बीच होने वाले मैच की विजेता से भिड़ेगी।

बोपन्ना-एबडेन की जोड़ी कड़े मुकाबले में जीत के साथ दूसरे दौर में

पेरिस। भारत के रोहन बोपन्ना और ऑस्ट्रेलिया मैथ्यू एबडेन की दूसरी वरीय जोड़ी ने रविवार को यहां पहले दौर के कड़े मुकबले में ऑरलैंडो लूज और मार्सेलो जोरमैन की ब्राजील की जोड़ी को हराकर फ्रेंच ओपन टेनिस टूर्नामेंट के दूसरे दौर में जगह बनाई। बोपन्ना और एबडेन की ऑस्ट्रेलियाई ओपन चैंपियन जोड़ी को ब्राजील की जोड़ी के खिलाफ 7-5 4-6 6-4 से जीत दर्ज करने के लिए दो घंटे और सात मिनट तक जूझना पड़ा। जोरमैन और लूज को टूर्नामेंट में खेलने की उम्मीद नही थी लेकिन कई जोड़ियों के हटने के बाद उन्हें खेलने का मौका मिला। ब्राजील की जोड़ी दूसरी वरीय जोड़ी के खिलाफ उलटफेर करने करीब थी लेकिन बोपन्ना और एबडेन मैच के अहम लम्हों पर बेहतर प्रदर्शन करने मे सफल रहे। बोपन्ना और एबडेन ने दो बार विरोधी जोड़ी की सर्विस तोड़कर पहले गेम में 4-1 की बढ़त बनाई लेकिन ब्राजील की जोड़ी ने लगातार चार गेम जीतकर स्कोर 5-5 कर दिया।

जोकोविच की मुसेट्टी पर संघर्षपूर्ण जीत

पेरिस। विश्व के नंबर एक खिलाड़ी नोवाक जोकोवच ने पांच सेट तक चले संघर्षपूर्ण मुकाबले मे जीत दर्ज करके फ्रेंच ओपन टेनिस टूर्नामेंट मे खिताब का बचाव करने की अपनी उम्मीदो को जीवंत रखा।जोकोविच ने इटली के 22 वर्षीय खिलाड़ी लोरेंजो मुसेट्टी को तीसरे दौर के मैच मे 7-5, 6-7 (6), 2-6, 6-3, 6-0 से हराया। यह मैच चार घंटे 30 मिनट तक चला और रविवार की सुबह तीन बजे तक खेला गया।जोकोविच की ग्रैंड स्लैम टूर्नामेंट मे यह 369वी जीत है और इस तरह से उन्होने रोजर फेडरर के रिकॉर्ड की बराबरी कर ली है। जोकोविच सोमवार को यह रिकॉर्ड तोड़ सकते है, जब उनका सामना अर्जेटीना के 23वी वरीयता प्राप्त फ्रांसिस्को सेरुंडोलो से होगा।

शोरिफुल की चोट ने बढ़ाई बांग्लादेश की चिंता

न्यूयॉर्क। बांग्लादेश के बाएं हाथ के तेज गेंदबाज शोरिफुल इस्लाम भारत के खिलाफ टी20 विश्व कप के अभ्यास मैच के दौरान चोटिल हो गए और उनके बाएं हाथ मे छह टांके लगाने पड़े। यह घटना शनिवार को भारतीय पारी के अंतिम ओवर की पांचवी गेंद पर घटी जब शोरिफुल ने हार्दिक पंड्या के शॉट को रोकने की कोशिश की। इससे उनके हाथ मे चोट लग गई और उन्हें वापस पवेलियन लौटना पड़ा। इस ओवर की अंतिम गेद तंजीम हसन साकिब ने की।बांग्लादेश क्रिकेट बोर्ड के मुख्य चिकित्सक देवाशीष चौधरी ने ईएसपीएनक्रिकइंफो से कहा, शोरिफुल के बाएं हाथ की तर्जनी और मध्यमा उंगली के बीच चोट लगी है। उन्हे नासाउ यूनिवर्सिटी मेडिकल सेंटर ले जाया गया। उनके हाथ मे छह टांके लगाए गए है।

ओमान के खिलाफ जीत से खाता खोलने उतरेगा नामीबिया

ब्रिजटाउन। अफ्रीका के क्वालीफायर्स मे बेहतरीन प्रदर्शन करने वाली नामीबिया की टीम टी20 विश्व कप के ग्रुप बी मे ओमान के खिलाफ सोमवार को यहां होने वाले मैच मे जीत दर्ज करने के दृढ़ इरादो के साथ मैदान पर उतरेगी। नामीबिया के पास कुछ अनुभवी खिलाड़ी है लेकिन उसके लिए राह इतनी आसान नही होगी। ओमान के पास भी कुछ मंझे हुए खिलाड़ी है जिनके दम पर वह नामीबिया को कड़ी टक्कर देने की कोशिश करेगा। ओमान ने अप्रैल मे खेली गई पांच मैच की श्रृंखला मे नामीबिया को कड़ी टक्कर दी थी। नामीबिया ने आखिर मे यह श्रृंखला 2-1 से जीती

दक्षिण अफ्रीका के बल्लेबाजों और श्रीलंका के गेंदबाजों के बीच होगा कड़ा मुकाबला

न्यूयॉर्क। दक्षिण अफ्रीका के बल्लेबाजो और श्रीलंका के गेंदबाजो के बीच सोमवार को यहां होने वाले टी20 विश्व कप के ग्रुप डी के मैच मे रोमांचक मुकाबला देखने को मिल सकता है। दक्षिण अफ्रीका की बल्लेबाजी काफी मजबूत है तो श्रीलंका के पास विविधता पूर्ण गेंदबाजी आक्रमण है। दोनो ही टीम अपने मजबूत पक्षो पर ध्यान देकर शुरू मे ही अंक तालिका मे खाता खोलने की कोशिश करेगे। इस ग्रुप मे नीदरलैड, बांग्लादेश और नेपाल की टीम की शामिल है जो उलट फेर कर सकती है।दक्षिण अफ्रीका के पास कप्तान एडेन मार्करम, विकेटकीपर बल्लेबाज हेनरिक क्लासेन, क्विंटन डी कॉक, डेविड मिलर और ट्रस्टिन स्टब्स जैसे बल्लेबाज है।क्लासेन और स्टब्स बेहतरीन फॉर्म मे है। इन दोनो ने हाल मे आईपीएल मे शानदार प्रदर्शन किया। क्लासेन ने सनराइजर्स हैदराबाद की तरफ से 16 मैच मे 471 रन जबकि स्टब्स ने दिल्ली कैपिटल्स की तरफ से खेलते हुए चार मैच मे 378 रन बनाए। इन दोनो बल्लेबाजो ने तब अपनी बल्लेबाजी का जलवा दिखाया जब बीच के ओवरो मे स्पिनर गेंदबाजी कर रहे होते है।

इनोवेशन में युवाओं को मिलेगा बढ़ावा

गांधीनगर। गुजरात के गांधीनगर में स्थित स्वर्णिम स्टार्टअप और इनोवेशन यूनिवर्सिटी ने कैरियर काउंसलिंग एंड मोटिवेशनल ऑर्गनाइजेशन के सहयोग से हाल ही में बलिया में प्रतिभा सम्मान समारोहका आयोजन किया। इस कार्यक्रम में मऊ, देवरिया, जौनपुर और बलिया जिलों के 306 छात्रों की उपलब्धियों का जश्न मनाया गया, जिन्होंने कक्षा 12वीं बोर्ड परीक्षाओं में शानदार प्रदर्शन करते हुए प्रथम श्रेणी के परिणाम प्राप्त किए। सम्मान समारोह में मुख्य अतिथि बलिया प्रधान राम प्रताप सिंह ने उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले विद्यार्थियों को मेडल एवं प्रमाण पत्र प्रदान किए। बलिया के विभिन्न स्कूलों के 30 शिक्षकों की उपस्थिति भी इस कार्यक्रम में रही, जिन्होंने इन युवाओं का मार्गदर्शन करने और उनके कौशल को निखारने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। स्वर्णिम यूनिवर्सिटी द्वारा उनकी शिक्षा और मार्गदर्शन के प्रति समर्पण को स्वीकार किया गया और उनकी सराहना की गई। स्वर्णिम स्टार्टअप और इनोवेशन यूनिवर्सिटी के वाईस प्रेसिडेंट आदि जैन ने कहा कि हमें गर्व है कि हम इन प्रतिभाशाली छात्रों की कड़ी मेहनत और उपलब्धियों का सम्मानित कर रहे हैं। यह कार्यक्रम न केवल उनकी सफलता का सम्मान करता है बल्कि उन्हें उच्च शिक्षा प्राप्त करने और समाज में सकारात्मक योगदान करने के लिए भी प्रोत्साहित करता है।

स्पोर्ट्स शूज पर ध्यान देंगी कंपनियां

लखनऊ। फ्लिपकार्ट स्पोर्ट्स शूज पर भी फोकस करेगा ताकि स्पोर्ट्स मैन को लाभ मिले। 12,000 से अधिक ब्रांड्स और 2 लाख से ज्यादा विक्रेताओं के विकल्प उपलब्ध होंगे, जिनमें स्पोर्ट्स शूज, घड़ियां और जींस जैसी कैटेगरीज में ओपन बॉक्स डिलिवरी का विकल्प भी शामिल होगा। 1 लाख से ज्यादा उत्पादों पर ऑर्डर बुक करने के दिन ही डिलिवरी की सुविधा उपलब्ध होगी। प्यूमा, एडिडास, नाइकी, टॉमी हिलफिगर, फॉसिल, टाइटन,क्रॉक्स, ,पीटर इंग्लैंड के स्टाइलिश उत्पादों जैसे कुछ लोकप्रिय विकल्प शामिल हैं। फैशन के सबसे बड़े उत्सभव में से एक का मंच तैयार करने के साथ ही बिग ईओएसएस ग्राहकों को ट्रेंडी स्टाइल्स, प्रीमियम ब्रांड्स और आकर्षक जेन जेड पेशकशों की एक विस्तृत श्रृंखला ऑफर कर रही है जो स्पॉयल पर तैयार की गई है और पूरे भारत में हर पिन कोड पर जहां इसकी सेवा उपलब्ध हैए इसकी आपूर्ति की जाएगी। बहुप्रतीक्षित बिग एंड ऑफसीजन सेल 1 जून से शुरू हो गयी। बिग ईओएसएस के बारे में चर्चा करते हुए आरिफ मोहम्मद वाइस प्रेसिडेंट और हेड फ्लिपकार्ट फैशन ने कहा सीजनदरसीजन आयोजित होने वाला फ्लिपकार्ट का बिग ईओएसएस सिर्फफैशन शॉपिंग इवेंट नहीं रह गया है बल्कि यह एक उत्सव बन गया है! यह हमें अपने ग्राहकों को खुशी प्रदान करने का मौका देता है क्योंकि हम टॉप ब्रांड्स के सर्वात्तम मूल्य और ट्रेंडी स्टाइल की सबसे विस्तृत रेंज पेश करने पर ध्यान केंद्रित करते हैं।

गेमिंग पर रहेगा जोर

लखनऊ। लावा इंटरनेशनल ने बेहद दमदार युवा 5 जी के लॉन्च की घोषणा की। जिसे बेमिसाल स्पीड और बेजोड़ प्रदर्शन की पेशकश के लिए डिज़ाइन किया गया है। युवा 5जी पहले से बेहतर बैटरी बैकअप बिजली की तरह तेज़ रफ़्तार और अव्वल दर्जे के कैमरा फीचर्स के साथ पूरे दिन चलने वाला साथी है, जिस कंपनी ने दो मेमोरी वेरिएंट में बाजार में उतारा है। साथ गेमिंग के नए फीचर भी उपलब्ध है। 5 जून 2024 से युवा 5जी अमेज़न, लावा ई.स्टोर और लावा रिटेल आउटलेट्स में 9499 रुपये ,64 जीबी, और 9999 रुपये 128 जीबी, की कीमत पर बिक्री के लिए उपलब्ध होगा। युवा 5जी को आज के ज़माने के युवाओं के लिए डिज़ाइन किया गया। लावा इंटरनेशनल लिमिटेड के मार्केटिंग हेड पुरावंश मैत्रेय ने कहा कि ग्राहकों के सुखद अनुभव का सफ़र हमारी व्यावसायिक नीति का सबसे अहम हिस्सा है। भारत के किसी भी हिस्से में सहज तरीके से सर्विसिंग की सेवा के लिए लावा कीघर पर मुफ़्त सेवाश् सुविधा का लाभ उठाएँ।

छह जून के मैच के बाद खिलाड़ियों का करियर बदल सकता है : स्टिमक

कोलकाता। भारतीय फुटबॉल टीम के कोच इगोर स्टिमक ने रविवार को कहा कि कुवैत के खिलाफ आगामी फीफा विश्व कप क्वालीफायर बहुत बड़ा मुकाबला है जिससे उनके खिलाड़ियों का करियर बदल सकता है। भारत फीफा विश्व कप क्वालीफायर के दूसरे दौर के घरेलू चरण के मैच में साल्ट लेक स्टेडियम मे कुवैत से भिड़ेगा और फिर 11 जून को कतर से उसकी सरजमी पर भिड़ेगा। भारतीय टीम गुवाहाटी मे अपनी सरजमी पर हुए मैच मे निचली रैंकिंग पर काबिज अफगानिस्तान से हार गई थी। लेकिन फिर भी भारत पहली बार 2026 विश्व कप के क्वालीफायर के तीसरे दौर मे प्रवेश कर सकता है। स्टिमक ने अखिल भारतीय फुटबॉल महासंघ (एआईएफएफ) से कहा, यह बड़ा मुकाबला है। इस मैच से खिलाड़ियों का करियर बदल सकता है।

पारुल अधिकारी और पुष्पेंद्र राठी ने प्रभावित किया

मुंबई। दिल्ली की चैम्पियन मुक्केबाज पारुल अधिकारी और पुष्पेंद्र राठी ने यहां ग्लोबल बॉक्सिंग सीरीज (जीबीएस) के शुरूआती चरण मे क्रमशः महिला और पुरुष लाइटवेट वर्ग मे शानदार जीत दर्ज की। पारुल ने शनिवार को मुस्कान श्रीवास्तव को विभाजित फैसले मे हराया तो वही राठी ने जयंत गुंजी के खिलाफ तकनीकी नॉकआउट से जीत दर्ज की। महाराष्ट्र के मल्हार भोसले और प्रदीश ए ने क्रमशः सुपर वेल्टरवेट मे मणिपुर के तेनसुबाम मीतेई और सुपर फ्लाई श्रेणी मे राजकुमार वाघ पर तकनीकी नॉकआउट जीत हासिल की।

अदिति तीसरे दौर के बाद संयुक्त रूप से 29वें स्थान पर

लैंकेस्टर (अमेरिका)। अदिति अशोक तीसरे दौर मे तीन ओवर 73 के लचर प्रदर्शन के बाद अमेरिकी महिला ओपन गोल्फ टूर्नामेंट मे संयुक्त रूप से 29वे स्थान पर है। अदिति ने तीसरे दौर मे दो बर्डी की लेकिन वह तीन बोगी और एक डबल बोगी भी कर गई। अदिति ने शुरुआती दो दौर मे 73 और 71 के स्कोर बनाए थे और अभी उनका कुल स्कोर सात ओवर है। तोक्यो ओलंपिक मे पदक जीतने के करीब पहुंची अदिति कभी किसी मेजर टूर्नामेंट मे शीर्ष 20 मे जगह नही बना पाई है। वह अपने 29वे मेजर टूर्नामेंट मे खेल रही है।

माराडोना की गोल्डन बॉल ट्राफी की नीलामी स्थगित

पेरिस। फ्रांस के नीलामी हाउस मैक्सीमिलियन अगुटेस ने रविवार को कहा कि स्वामित्व विवाद और न्यायिक जांच के कारण दिवंगत फुटबॉलर डिएगो माराडोना की विश्व कप 1986 मे जीती गई गोल्डन बॉल ट्रॉफी की नीलामी स्थगित कर दी गई है। फ्रांस की एक अदालत ने इस हफ्ते माराडोना के वारिसो के विरोध के बावजूद इस ट्रॉफी को नीलाम करने का आदेश दिया था। माराडोना को विश्व कप 1986 मे सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी चुना गया था जिसके लिए उन्हे गोल्डन बॉल ट्रॉफी मिली थी।

ईशा सिंह 25 मीटर पिस्टल स्पर्धा के फाइनल में

म्यूनिख। भारतीय निशानेबाज ईशा सिंह ने रविवार को यहां क्वालीफिकेशन दौर मे 293 का स्कोर बनाकर आईएसएसएफ विश्व कप के महिला 25 मीटर पिस्टल फाइनल के लिए क्वालीफाई किया। ईशा ने छठे स्थान से फाइनल मे जगह बनाई जबकि हमवतन रिद्म सांगवान 281 के स्कोर से 68वे स्थान पर रही। संदीप सिंह 10 मीटर एयर राइफल स्पर्धा मे 631.4 अंक से नौवे स्थान पर रहे और फाइनल मे जगह बनाने से चूक गए।

भारत का कोच बनना पसंद करूंगाः गंभीर

भाषा। दुबई

भारतीय क्रिकेट टीम का मुख्य कोच बनने की दौड़ में सबसे आगे होने की अटकलों के बीच पूर्व बल्लेबाज गौतम गंभीर ने शनिवार को कहा कि वह राष्ट्रीय टीम को कोचिंग देना पसंद करेंगे। गंभीर ने हाल में कोलकाता नाइट राइडर्स को तीसरा इंडियन प्रीमियर लीग खिताब दिलाया और उन्हें राहुल द्रविड़ के योग्य उत्तराधिकारी के रूप में देखा जा रहा है। द्रविड़ का अनुबंध टी20 विश्व कप के बाद खत्म हो रहा है। भारतीय टीम के मुख्य कोच के पद के लिए आवेदन करने की अंतिम तारीख 27 मई थी। लेकिन अभी तक स्पष्ट नहीं है कि गंभीर ने इसके लिए आवेदन भरा है या नहीं। अबुधाबी में एक कार्यक्रम के इतर गंभीर (42 वर्ष) ने कहा, मैं भारतीय टीम को कोचिंग देना पसंद करूंगा। अपनी राष्ट्रीय टीम को कोचिंग देने से बड़ा कोई सम्मान नहीं है। आप 140 करोड़ भारतीयों और दुनिया भर के लोगों का प्रतिनिधित्व करोगे। इस हफ्ते के शुरु में भारत के पूर्व कप्तान सौरव गांगुली ने मुख्य कोच की भूमिका के लिए गंभीर का समर्थन करते हुए कहा था कि वह अच्छे उम्मीदवार हैं। गंभीर अबुधाबी के मेडोर अस्पताल में छात्रों को संबोधित कर रहे थे। तभी एक ने उनसे भारतीय क्रिकेट टीम को कोचिंग देने और अपने अनुभव से विश्व कप जीतने में मदद करने के बारे में पूछा तो गंभीर ने जवाब दिया, मैंने अभी तक इस सवाल का जवाब नहीं दिया है, हालांकि बहुत लोगों ने मुझसे इसके बारे पूछा है। लेकिन अब मुझे आपको जवाब देना होगा। गंभीर ने कहा, भारत को विश्व कप जीतने में 140 करोड़ भारतीय मदद करेंगे।

प्रज्ञाननंदा ने कारूआना को दी मात, विश्व रैंकिंग में शीर्ष 10 में

भाषा। स्टावेंजर (नॉर्वे)

भारतीय ग्रैंडमास्टर आर प्रज्ञाननंदा ने नॉर्वे शतरंज प्रतियोगिता के पांचवें दौर में अमेरिका के विश्व में दूसरे नंबर के खिलाड़ी फैबियानो कारूआना को हराया, जिससे वह विश्व रैंकिंग में शीर्ष 10 में पहुंच गए हैं। अमेरिका के हिकारू नाकामुरा ने खराब फॉर्म में चल रहे चीन के विश्व चैंपियन डिंग लिरेन को हराकर नॉर्वे के मैग्नस कार्लसन पर अपनी बढ़त को एक अंक तक बढ़ा दी। नाकामुरा के 10 अंक हैं। कार्लसन ने फ्रांस के फिरोजा अलीरेजा को हराया। अब जबकि टूर्नामेंट में पांच दौर की बाजियां खेली जानी बाकी हैं तब प्रज्ञाननंदा 8.5 अंक लेकर विश्व के नंबर एक खिलाड़ी कार्लसन के बाद तीसरे नंबर पर हैं। अलीरेजा के 6.5 अंक हैं और वह चौथे स्थान पर हैं। कारूआना पांच अंक के साथ पांचवें स्थान पर हैं जबकि डिंग लिरेन की खराब फॉर्म जारी है। उनके केवल 2.5 अंक हैं। महिला वर्ग में भारत की आर वैशाली ने अपना स्वप्निल प्रदर्शन जारी रखा।

नोएडा के देवांश चैंपियन

लखनऊ। उत्तर प्रदेश टेनपिन बॉलिंग एसोसिएशन-यूपीटीबीए द्वारा आयोजित बहुप्रतीक्षित उत्तर प्रदेश टेनपिन बॉलिंग स्टेट रैंकिंग टूर्नामेंट 2024 में नोएडा के देवांश भटनागर ने प्रतिद्वंद्वियों के खिलाफ दमदार प्रदर्शन करते हुए विजेता ट्रॉफी जीत ली। लखनऊ के लुलु मॉल में प्रतिष्ठित बॉलिंग एली में गत आयोजित टूर्नामेंट में देवांश भटनागर उम्दा खेल कौशल दिखाते हुए तीन राउंड के स्टेप लैडर फार्मेट में सर्वाधिक 2086 पिनफॉल स्कोर के साथ पहले स्थान पर रहे। दूसरी ओर मात्र 11 अंक से पिछड़े मुरादाबाद के उत्कर्ष सिन्हा 2075 पिनफॉल स्कोर के साथ उपविजेता रहे। लखनऊ के सुमित वैश्य 2037 पिनफॉल स्कोर के साथ तीसरे और अखिलेश वर्मा विक्की 2021 पिनफॉल स्कोर के साथ चौथे स्थान पर रहे।

पंघाल और जैस्मीन का विजयी पंच

● पेरिस ओलंपिक कोटा हासिल किया

भाषा। बैंकॉक

विश्व चैंपियनशिप के रजत पदक विजेता अमित पंघाल (51 किग्रा) और राष्ट्रीय महिला चैम्पियन जैस्मीन लम्बोरिया (57 किग्रा) ने रविवार को यहां दूसरे विश्व क्वालीफिकेशन मुक्केबाजी टूर्नामेंट के अपने क्वार्टर फाइनल में विपरीत अंदाज में जीत दर्ज कर पेरिस ओलंपिक के लिए क्वालीफाई किया। कई बार के एशियाई चैम्पियनशिप पदक विजेता पंघाल ने एक कड़े मुकाबले में वापसी करते हुए चीन के चुआंग लियू को 5-0 से हराकर दूसरी बार ओलंपिक के लिए टिकट कटाया। परवीन हुड्डा (57 किग्रा) के पिछले महीने ठिकाने की जानकारी नहीं देने के कारण निलंबित किए जाने के बाद भारत को ओलंपिक कोटा गंवाना पड़ा था।

भारतीय पुरुष हॉकी टीम में ब्रिटेन से हारी

● एफआईएच प्रो लीग

भाषा। लंदन

प्रदर्शन में निरंतरता की कमी के कारण भारतीय पुरुष हॉकी टीम को रविवार को यहां एफआईएच प्रो लीग के लंदन चरण के अपने दूसरे मैच में मेजबान ग्रेट ब्रिटेन के खिलाफ 1-3 से शिकस्त का सामना करना पड़ा।एक दिन पहले हरमनप्रीत सिंह की अगुवाई वाली भारतीय टीम ने विश्व चैंपियन जर्मनी को 3-0 से हराया था लेकिन रविवार को मेहमान टीम मैच में अधिकतर समय पिछड़ती रही ग्रेट ब्रिटेन के लिए बंडुराक निकोलस ने दो (दूसरे और 11वें मिनट में) मैदानी गोल दागे। मेजबान टीम के लिए कैलनन विल (47वें मिनट) ने भी एक गोल किया। भारत के लिए एकमात्र गोल अभिषेक ने 35वें मिनट में मैदानी गोल के रूप में किया। भारत को आठ पेनल्टी कॉर्नर मिले लेकिन टीम इनमें से किसी को गोल में तब्दील नहीं कर सकी। ग्रेट ब्रिटेन को भी पांच पेनल्टी कॉर्नर मिले और मेजबान टीम भी इनमें से किसी पर गोल नहीं कर सकी।भारत एफआईएच तालिका में ग्रेट ब्रिटेन से एक स्थान आगे तीसरे स्थान पर है। घरेलू दर्शकों के समर्थन के बीच ग्रेट ब्रिटेन ने मैच में शानदार शुरुआत की और जल्द ही भारत को बैकफुट पर ला दिया। बंडुराक ने दूसरे ही मिनट में काउंटर अटैक पर गोल दागकर मेजबान टीम को बढ़त दिला दी। भारत की मुसीबत उस समय और बढ़ गई जब बंडुराक ने 11वें मिनट में एक और गोल दागकर ग्रेट ब्रिटेन को 2-0 से आगे कर दिया।

भारतीय महिला हॉकी टीम हारी

लंदन। भारतीय महिला हॉकी टीम ने एफआईएच प्रो लीग के यूरोपीय चरण मे अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन किया लेकिन कड़ी चुनौती पेश करने के बावजूद उसे रविवार को यहां ग्रेट ब्रिटेन के खिलाफ 2-3 से हार का सामना करना पड़ा। भारत ने 0-2 से पिछड़ने के बाद दूसरे हाफ मे शानदार वापसी की और शर्मिला देवी ने निर्धारित समय से चार मिनट पहले गोल करके स्कोर 2-2 कर दिया लेकिन मेहमान टीम 57वे मिनट मे एक गोल खा गई और मैच हार गई। वाटसन चार्लोट ने पहले क्वार्टर मे ही दो मिनट के भीतर दो गोल करके ग्रेट ब्रिटेन को 2-0 की बढ़त दिला दी। चार्लोट ने पांचवे मिनट मे पेनल्टी स्ट्रोक को गोल मे बदला जबकि अगले ही मिनट मे मैदानी गोल दागा।

नयना जेम्स ने ताइवान में लंबी कूद में स्वर्ण पदक जीता

अनिमेष स्पेन में 200 मीटर में शीर्ष पर

भाषा। नई दिल्ली

लंबी कूद की भारत की शीर्ष खिलाड़ी नयना जेम्स ने अपनी शानदार फॉर्म जारी रखते हुए रविवार को चीनी ताइपे में ताइवान एथलेटिक्स ओपन में 6.43 मीटर के प्रयास के साथ स्वर्ण पदक जीता। वर्ल्ड एथलेटिक्स महाद्वीपीय टूर की कांस्य स्तर की प्रतियोगिता में 28 वर्षीय नयना ने बरसात के बीच अपने तीसरे प्रयास में दिन का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन किया। यह भारत के बाहर उनका सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन है। उनका व्यक्तिगत सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन 6.67 मीटर है जो उन्होंने मार्च में इंडियन ओपन जंप्स प्रतियोगिता में स्वर्ण जीतने के दौरान किया था। उन्होंने पिछले महीने फेडरेशन कप में भी 6.53 मीटर के प्रयास के साथ स्वर्ण पदक जीता था। इस बीच उभरते हुए भारतीय धावक अनिमेष कुजूर ने स्पेन में ट्रोफियो डि एटलेटिस्मो स्यूदाद डि सलामांका-मेमोरियल कार्लोस गिल पेरेज एथलेटिक्स मीट में पुरुषों की 200 मीटर दौड़ में स्वर्ण पदक जीता। इक्कीस वर्षीय अनिमेष ने 20.59 सेकेंड के समय से स्पर्धा जीती। हवा की अधिकतम स्वीकृत गति प्लस 2.0 मीटर प्रति सेकेंड है। इससे पहले उनका व्यक्तिगत सर्वश्रेष्ठ समय 20.62 सेकेंड था जो उन्होंने इस महीने की शुरुआत में भुवनेश्वर में फेडरेशन कप में स्वर्ण पदक जीतने के दौरान हासिल किया था। स्पेन के डेनियल रोड्रिग्ज सेरानो (20.85 सेकेंड) और माउरो ट्रियाना लोपेज (21.27 सेकेंड) क्रमश: दूसरे और तीसरे स्थान पर रहे। इससे पहले अनिमेष ने पुरुषों की 100 मीटर दौड़ में 10.27 सेकेंड का अपना सर्वश्रेष्ठ व्यक्तिगत समय निकालकर चौथा स्थान हासिल किया(

सीएमवाईके प्रिंटेक के लिए तथा उसी की ओर से मुद्रक एवं प्रकाशक शोबोरी गाँगुली द्वारा टिन टिन प्रिंटेक प्रा.लि. सी-33 अमौसी इंडस्ट्रियल एरिया, नादरगंज लखनऊ से मुद्रित एवं चौथी मंजिल, सहारा शापिंग सेंटर, फैजाबाद रोड, लखनऊ (फोन: 0522-4036600) से प्रकाशित। प्रधान सम्पादक: शोबोरी गाँगुली, स्थानीय सम्पादक: विजय प्रकाश सिंह। पाठकों को सुझाव दिया जाता है कि इस अखबार के किसी भी विज्ञापन पर प्रतिक्रिया करने से पहले पूरी तरह उसके बारे में दिए गए दावों, शर्तों और तथ्यों की जांच कर लें। पायनियर ग्रुप के मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक या उसका कोई भी कर्मचारी विज्ञापनदाता द्वारा उनके किसी उत्पाद तथा सेवा हेतु किए गए किसी दावे की सच्चाई का आश्वासन या उत्तरदायित्व नहीं लेता है। ऐसे विज्ञापनों के बाद किसी आर्थिक क्षति के लिए वे जिम्मेदार भी नहीं हैं।